VOLUME NO. : 7

YEAR-3

₹ 250.00 (Colour) I ₹ 125 B&W

द साइलेंट स्ट्रोक

THECREATIVEART.IN

The Silent STROKE

HINDI I ENGLISH

JAN I JUNE 2025

भारत और पाकिस्तान युद्ध

2025 I एक नज़र

HIGHLIGHTS

22 April

2025

पहलगाम आतंकी हमला

सोफिया कुरेशी और व्योमिका सिंह की महत्त्वपूर्ण भूमिका

WOMEN'S DAY

OPERATION

SINDOOR

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला I युवा I विश्व हिन्दी दिवस

पर्यावरण I स्वास्थ्य I विश्व कैंसर दिवस I प्रवासी भारतीय दिवस

26 बेगुनाहों की हत्या

Head of the Editorial: NANDINI SHARMA

CHIEF EDITOR : RAKESH SHARMA 'NISHEETH'

EDITOR : NARENDRA TYAGI I SUSHILA GUPTA 'MUDITA'

The CREATIVEART Publisher

शब्दाहुति | प्रकाशन THECREATIVEART.IN

A GOLDEN OPPORTUNITY FOR WRITERS

'Get your Book Published'

THECREATIVEART.IN

BOOKS ARE INVITED TO ENCOURAGE THE WRITING OF NEW WRITERS

CONTACT US NOW:

The CREATIVEART Publisher

NARENDRA TYAGI
Publisher

FARIDABAD
+91-9990753336 | 0129-4322979

flipkart
amazon

TCstudio
THECREATIVEART.IN
TCstudio2010@gmail.com | Creativeart012@gmail.com

shabdahutiprakashan@gmail.com

सम्पादकीय

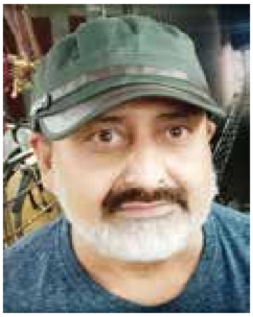

राकेश शर्मा 'निशीथ'

प्रिय पाठकों,

"द साइलेंट स्ट्रोक" का जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, और जून 2025 का अंक अब आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह अंक आप सभी पाठकों की रुचियों को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

बीते कुछ महीनों में देश और विदेश में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी हैं, जिन्होंने हम सभी को प्रभावित किया है। इस अवधि में हमने पहलगाम में हुई घटनाओं, ऑपरेशन सिंदूर की सफलता, और भारत-पाकिस्तान युद्ध जैसी गंभीर स्थितियों को देखा है, जिसने राष्ट्र की संप्रभुता और सुरक्षा के महत्व को रेखांकित किया है। इसके साथ ही, अहमदाबाद प्लेन क्रैश जैसी दुखद दुर्घटना ने हमें जीवन की क्षणभंगुरता और सुरक्षा प्रोटोकॉल के महत्व की याद दिलाई है।

व्यक्तिगत मोर्चे पर, सोनम-राजराघुवंशी केस ने समाज के विभिन्न पहलुओं और मानवीय अनुभवों को उजागर किया है। ये घटनाएँ हमें विचार करने और सीखने का अवसर प्रदान करती हैं। इन सभी घटनाओं का हमारे समाज, राजनीति और व्यक्तिगत जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

महत्त्वपूर्ण दिवसों का स्मरण

इस अंक में कई महत्त्वपूर्ण दिवसों को शामिल किया गया है:

प्रवासी भारतीय दिवस (9 जनवरी): हर साल 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है। यह दिन 1915 में महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने की याद दिलाता है, और इसका उद्देश्य विदेशों में रह रहे भारतीयों की रचनात्मक और आर्थिक भूमिका को पहचानना और सम्मानित करना है। इस दिवस की घोषणा 8 जनवरी 2002 को तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने की थी।

हिंदी दिवस (14 सितंबर) और विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी): भारत में दो हिंदी दिवस मनाए जाते हैं: राष्ट्रीय हिंदी दिवस (14 सितंबर) और विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी)। राष्ट्रीय हिंदी दिवस भारत में मनाया जाता है, जबकि विश्व हिंदी दिवस हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के लिए वैश्विक रूप से मनाया जाता है।

युवा दिवस (12 जनवरी): हर साल 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद का जन्मदिन युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। विवेकानंद ने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा था कि हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए और गर्व से कहना चाहिए, "मैं भारतीय हूँ, हर भारतीय मेरा भाई है।"

विश्व कैंसर दिवस (4 फरवरी): हर साल 4 फरवरी को विश्व कैंसर दिवस मनाया जाता है। यह दिन कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने और वैश्विक प्रयासों को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च): हर साल 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। यह दिन महिलाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने और उनकी आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियों तथा कठिनाइयों को याद करने का अवसर है।

अंक की अन्य सामग्री

इन सभी दिवसों को इस अंक में शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, सभी स्थायी स्तंभों जैसे कहानी, कविता, लेख, संस्मरण, पर्यटन, चिंतन और स्वास्थ्य संबंधी लेखों को भी शामिल किया गया है। हमारा प्रयास रहा है कि इस अंक में इन सभी महत्वपूर्ण घटनाओं और विषयों को गहनता से कवर किया जाए ताकि हमारे पाठक सूचित और जागरूक रहें। आशा है कि ये सभी पाठकों के लिए रुचिकर होने के साथ-साथ तथ्यपरक और जानकारीप्रद भी सिद्ध होंगे।

Rakesh Sharma

सादर,
मुख्य संपादक

Presented by
THE CREATIVEART

द साइलेंट स्ट्रोक
The Silent STROKE
JANUARY - JUNE 2025

विषय सूची

जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला । ऑपरेशन सिंदूर । भारत और पाकिस्तान युद्ध । आयुर्वेद । राष्ट्रीय युवा दिवसः स्वामी विवेकानन्द । साक्षात्कारः पीयूष गोयल । पहलगाम हमला चुनावी मुद्दाः उचित या अनुचित । सूर्यकांत त्रिपाठी निराला । महिला दिवस । प्रवासी दिवस । विश्व हिन्दी दिवसः अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का वर्चस्व । होली पर्व । मानसिक स्वास्थ्य । सोनम-राजा हत्याकांड । कहानियाँ । लघुकथा । कविताएँ गीत । ग़ज़ल । चिंतन-मनन । यात्रा-वृतांत/पर्यटन । चिंतन-मनन । Travelogues : A Journey of Joy - 2025 । सुनीता विलियम्स । Free Time: See the Image, Write a Poem

Head of the Editorial
NANDINI SHARMA
Advocate, Supreme Court &
High Court

Chief editor
RAKESH SHARMA 'NISHEETH'

Editor
NARENDRA TYAGI
SUSHILA GUPTA 'MUDITA'

Design by
SHIVANGI TYAGI

Edition
Jan-June 2025

©THE CREATIVEART

Price
₹ 250.00 (Coloured)
₹ 125.00 (Black & White)

Published by
THE CREATIVEART

Cover photo courtesy :
Atal Bihari Vajpayee (FB)

Press :
Images & Impressions Press,
Daryaganj, Delhi-110002

जरूरी सूचना : द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। रचनाओं की मौलिकता एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

The CREATIVEART Publishers
E-37A, Uper Ground Floor, Dayal Bagh,
Surajkund, Sector 39, Faridabad (HR)
Contact: 9990753336,
Mail: THESILENTSTROKE@GMAIL.COM
THECREATIVEART.IN

EDITORIAL TEAM

नंदिनी शर्मा पाण्डेय

राकेश शर्मा 'निशीथ'

नरेन्द्र त्यागी

सुशीला गप्ता 'मुदिता'

पीयुष गोयल

डॉ. माधवम सिंह

रश्मि भटनागर

अशोक वाधवानी

आकांक्षा शर्मा

डॉ. सरिता सिंह

प्रीति शर्मा 'असीम'

डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव

मणिका चौधरी

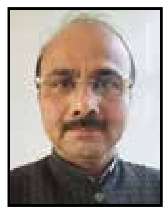
विपिन त्यागी

डॉ. ममता जैन

व्यग्र पाण्डे

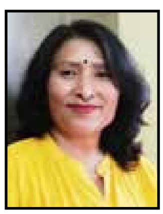
आरती रावत पुण्डीर

मनव्वर अशरफ़ी

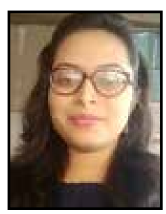
सोनल मंजू श्री ओमर

नीलमणि शर्मा

हरि बल्लभ ममगई

Rana Pratap Bajaj

जम्मू-कश्मीर

पहलगाम में आतंकी हमला

एक गहन विश्लेषण

—प्रस्तुति- द साइलेंट स्ट्रोक

22 अप्रैल, 2025 को जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में हुए एक बर्बर आतंकी हमले में 26 लोगों की जान चली गई। मृतकों में 25 पर्यटक और एक स्थानीय मुस्लिम शामिल हैं, जिसने आतंकवादियों से मुकाबला करने की कोशिश की थी। इस हमले में 20 अन्य लोग घायल भी हुए हैं।

यह हमला उस समय हुआ जब हथियारबंद आतंकवादियों ने बैसरन घाटी के एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। हमलावरों के पास M4 कार्बाइन और AK-47 जैसे आधुनिक हथियार थे और उन्होंने सैन्य शैली की वर्दी पहनी हुई थी।

हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े द रेजिस्टेंस फ्रंट (TRF) ने ली थी। हालांकि, बाद में संगठन ने इस दावे का खंडन किया और भारतीय साइबर-इंटेलिजेंस पर झूठे आरोप लगाने का आरोप लगाया।

हमले के बाद, भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव काफी बढ़ गया है। भारत ने पाकिस्तान पर सीमा पार आतंकवाद का समर्थन करने का आरोप लगाया है, जबकि पाकिस्तान ने इन आरोपों को निराधार बताया है। इस घटना के बाद, भारत ने पाकिस्तान के साथ कई राजनयिक और व्यापारिक संबंध तोड़ दिए हैं और सिंधु जल संधि को भी निलंबित कर दिया है।

भारतीय सुरक्षा बलों ने हमलावरों की तलाश तेज कर दी है और उनकी पहचान उजागर करने के लिए 20 लाख रुपये का इनाम घोषित किया है। मंगलवार को, सुरक्षा एजेंसियों ने तीन संदिग्ध आतंकवादियों के पोस्टर जारी किए हैं, जिनकी पहचान आसिफ फौजी, सुलेमान शाह और अबू तलहा के रूप में हुई है।

इस भयावह हमले की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कड़ी निंदा की गई है और पीड़ितों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की गई है।

ऑपरेशन सिंदूर: एक विजय गाथा

श्रीनगर: 23 अप्रैल, 2025 को भारतीय सुरक्षा बलों ने कश्मीर घाटी में शांति और स्थिरता बहाल करने के उद्देश्य से एक व्यापक अभियान "ऑपरेशन सिंदूर" शुरू किया। इस ऑपरेशन का मुख्य लक्ष्य आतंकवादियों के नेटवर्क को ध्वस्त करना, सीमा पार से होने वाली घुसपैठ को रोकना और स्थानीय आबादी के बीच विश्वास और सुरक्षा की भावना को मजबूत करना है।

वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारियों के अनुसार, "ऑपरेशन सिंदूर" खुफिया जानकारी और सटीक रणनीति पर आधारित है। इस अभियान में भारतीय सेना, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (CRPF) और जम्मू और कश्मीर पुलिस के विशेष बलों की संयुक्त टीमें शामिल हैं। ऑपरेशन के तहत, संवेदनशील क्षेत्रों में गश्त बढ़ा दी गई है, संदिग्ध गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है और स्थानीय लोगों के साथ समन्वय स्थापित किया जा रहा है ताकि उन्हें सुरक्षा संबंधी किसी भी जानकारी को साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

ऑपरेशन के पहले चरण में, सुरक्षा बलों ने कई आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है और भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया है। इसके अतिरिक्त, सीमावर्ती क्षेत्रों में घुसपैठ की कई कोशिशों को भी नाकाम कर दिया गया है। अधिकारियों ने यह भी बताया कि इस ऑपरेशन का एक महत्वपूर्ण पहलू स्थानीय समुदायों तक पहुंचना और उन्हें विकास और कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देना है, ताकि उन्हें अलगाववादी ताकतों

के प्रभाव से बचाया जा सके।

स्थानीय लोगों ने भी "ऑपरेशन सिंदूर" का स्वागत किया है। उनका मानना है कि यह क्षेत्र में स्थायी शांति लाने और सामान्य जनजीवन को बहाल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कई स्थानीय निवासियों ने सुरक्षा बलों के साथ सहयोग करने और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत देने का संकल्प लिया है।

"ऑपरेशन सिंदूर" का नाम भारतीय संस्कृति में सिंदूर के महत्व को दर्शाता है, जो शुभता और एकता का प्रतीक है। इस ऑपरेशन का उद्देश्य भी यही है कि कश्मीर घाटी में खुशहाली, शांति और एकता स्थापित हो सके। सुरक्षा अधिकारियों ने दृढ़ संकल्प किया है कि यह अभियान तब तक जारी रहेगा जब तक क्षेत्र में पूर्ण शांति और सुरक्षा स्थापित नहीं हो जाती।

यहां "ऑपरेशन सिंदूर" के दृश्य को दर्शाती एक संभावित तस्वीर है:

ऑपरेशन सिंदूर में सोफिया कुरेशी और व्योमिका सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका

"ऑपरेशन सिंदूर" केवल सैन्य बलों का एक संयुक्त प्रयास नहीं है, बल्कि इसमें कई ऐसे गुमनाम नायक भी शामिल हैं जो पर्दे के पीछे रहकर महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। ऐसी ही दो महत्वपूर्ण शख्सियतें हैं सोफिया कुरेशी और व्योमिका सिंह, जिनकी भूमिका इस ऑपरेशन की सफलता में अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं।

सोफिया कुरेशी: खुफिया जानकारी की रीढ़

सोफिया कुरेशी ऑपरेशन सिंदूर की खुफिया इकाई में एक महत्वपूर्ण अधिकारी हैं। अपनी उत्कृष्ट विश्लेषणात्मक क्षमताओं और स्थानीय संपर्कों के गहरे नेटवर्क के माध्यम से, सोफिया ने आतंकवादियों की गतिविधियों, उनके ठिकानों और उनकी योजनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी टीम द्वारा प्रदान की गई सटीक और समय पर खुफिया जानकारी ने सुरक्षा बलों को कई संभावित हमलों को विफल करने और आतंकवादियों के महत्वपूर्ण गढ़ों पर सफलतापूर्वक कार्रवाई करने में सक्षम बनाया है। सोफिया की रणनीतिक सोच और जमीनी स्तर पर उनकी मजबूत पकड़ ने ऑपरेशन की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

व्योमिका सिंह: समुदाय और सुरक्षा बलों के बीच सेतु

व्योमिका सिंह ऑपरेशन सिंदूर के सामुदायिक संपर्क कार्यक्रम का एक अभिन्न हिस्सा हैं। एक कुशल संचारक और स्थानीय संस्कृति की गहरी समझ रखने वाली व्योमिका ने स्थानीय आबादी और सुरक्षा बलों के बीच विश्वास और सहयोग का एक मजबूत पुल बनाया है। उन्होंने गांवों और कस्बों में जाकर लोगों से बातचीत की, उनकी समस्याओं को सुना और उन्हें सुरक्षा बलों के उद्देश्यों और प्रयासों के बारे में अवगत कराया। व्योमिका के प्रयासों के परिणामस्वरुप, स्थानीय लोगों ने सुरक्षा बलों को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करना शुरु कर दिया है, जिससे आतंकवादियों के खिलाफ लड़ाई में काफी मदद मिली है। उनकी संवेदनशीलता और समर्पण ने ऑपरेशन सिंदूर को न केवल एक सैन्य अभियान बल्कि एक जन-केंद्रित पहल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सोफिया कुरेशी और व्योमिका सिंह जैसी महिलाएं "ऑपरेशन सिंदूर" की असली ताकत हैं। उनका निस्वार्थ सेवाभाव और अटूट समर्पण शांति और सुरक्षा की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को नई ऊंचाइयां प्रदान कर रहा है। ■■

भारत और पाकिस्तान

युद्ध 2025: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और प्रभाव

7 मई, 2025 को, भारत ने पाकिस्तान के भीतर कथित आतंकवादी ठिकानों पर लक्षित मिसाइल हमले किए, जिसका कोड नाम "ऑपरेशन सिंदूर" था। भारत ने इन हमलों को 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले का जवाब बताया, जिसमें 26 लोग मारे गए थे। पाकिस्तान ने इन हमलों की निंदा करते हुए कहा कि भारतीय मिसाइलों ने नागरिक क्षेत्रों को निशाना बनाया, जिसमें 31 लोग मारे गए।

इसके बाद, दोनों देशों के बीच सीमा पर झड़पें और ड्रोन हमले हुए। 10 मई को, दोनों देशों ने संघर्ष विराम पर सहमति व्यक्त की, जो 12 मई को वार्ता के लिए निर्धारित किया गया था। हालांकि, संघर्ष विराम के बाद दोनों देशों ने एक-दूसरे पर इसका उल्लंघन करने का आरोप लगाया।

इस संघर्ष में दोनों पक्षों के 22 सैनिक मारे गए। भारत ने दावा किया कि उसके हमलों में जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकवादी समूहों के शिविरों और बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया गया, जबकि पाकिस्तान ने कहा कि भारतीय मिसाइलों ने नागरिक क्षेत्रों को निशाना बनाया।

संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन सहित कई देशों ने संघर्ष विराम का आह्वान किया और दोनों देशों से तनाव कम करने का आग्रह किया। संघर्ष विराम के बाद भी, दोनों देशों के बीच राजनयिक तनाव बना हुआ है। भारत ने पाकिस्तान पर सीमा पार आतंकवाद का समर्थन करने का आरोप लगाना जारी रखा है, जबकि पाकिस्तान ने इन आरोपों का खंडन किया है।

विश्लेषकों का मानना है कि यह संघर्ष दोनों देशों के बीच पहले से ही तनावपूर्ण संबंधों को और खराब कर सकता है। यह क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए भी खतरा पैदा करता है।

हाफिज शाहिद के ठिकाने पर जो बम गिराया।

अन्य आतंकियों के ठिकाने पर बम गिराए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने युद्धविराम क्यों किया: एक विश्लेषण

भारत और पाकिस्तान के बीच 10 मई, 2025 को युद्धविराम की घोषणा के बाद, कई सवाल उठ रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह फैसला क्यों लिया। विभिन्न स्रोतों से मिली जानकारी के आधार पर, कुछ संभावित कारण इस प्रकार हैं:

- अंतर्राष्ट्रीय दबाव: कई देशों, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन ने, दोनों देशों से तनाव कम करने का आग्रह किया। कुछ रिपोर्टों में यह भी दावा किया गया है कि अमेरिका ने भारत पर व्यापार प्रतिबंध लगाने की धमकी दी थी, जिसके कारण मोदी पर युद्धविराम का दबाव था। हालांकि, भारत ने इन दावों का खंडन किया है।
- सैन्य स्थिति: कुछ रिपोर्टों के अनुसार, भारतीय सेना ने पाकिस्तान में आतंकवादी ठिकानों पर सफलतापूर्वक हमले किए थे, जिससे पाकिस्तान रक्षात्मक स्थिति में आ गया था। पाकिस्तान ने खुद युद्धविराम का प्रस्ताव रखा था। ऐसे में, भारत के लिए आगे बढ़ने का कोई स्पष्ट सैन्य लाभ नहीं था, और युद्ध को जारी रखने से स्थिति और खराब हो सकती थी।
- घरेलू राजनीतिक कारण: विपक्षी दलों ने सरकार से युद्धविराम पर स्पष्टीकरण मांगा है। कांग्रेस ने यह भी आरोप लगाया कि सरकार ने इस मुद्दे पर संसद को विश्वास में नहीं लिया। सरकार पर घरेलू राजनीतिक दबाव भी हो सकता था कि वह युद्ध को और न खींचे।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये केवल संभावित कारण हैं, और प्रधानमंत्री मोदी ने युद्धविराम क्यों किया, इसके पीछे वास्तविक कारण पूरी तरह से ज्ञात नहीं है।

भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धविराम को लेकर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बयानों ने काफी विवाद खड़ा कर दिया है। ट्रम्प ने सार्वजनिक रूप से दावा किया कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और व्यापार प्रतिबंधों की धमकी देकर दोनों देशों पर दबाव डाला।

यहां कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं:

1. ट्रम्प के दावे:

- ट्रम्प ने कहा कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान को व्यापार रोकने की धमकी दी, जिसके कारण उन्होंने युद्धविराम पर सहमति व्यक्त की।
- उन्होंने यह भी दावा किया कि उन्होंने एक संभावित "परमाणु युद्ध" को रोका।

2. भारतीय प्रतिक्रिया:

- भारतीय सरकार ने ट्रम्प के दावों पर सीधे तौर पर कोई टिप्पणी नहीं की है, लेकिन कुछ सरकारी सूत्रों ने इन दावों का खंडन किया है।
- भारत ने यह स्पष्ट किया है कि यह भारत का अपना निर्णय है।

3. विपक्षी प्रतिक्रिया:

- भारतीय विपक्षी दलों ने सरकार से ट्रम्प के दावों पर स्पष्टीकरण मांगा है।
- उन्होंने सरकार पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव में झुकने का आरोप लगाया है।
- विपक्षी दलों ने मांग की है कि सरकार संसद में इस मुद्दे पर चर्चा करे।

4. विश्लेषण:

- कुछ विश्लेषकों का मानना है कि ट्रम्प के बयान भारत पर दबाव बनाने की कोशिश हो सकती है।
- यह भी संभव है कि ट्रम्प अपने राजनयिक कौशल का प्रदर्शन कर रहे हों।
- यह स्पष्ट नहीं है कि ट्रम्प के दावों में कितनी सच्चाई है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में, सार्वजनिक बयानों के पीछे अक्सर छिपे हुए मकसद होते हैं। इसलिए, ट्रम्प के दावों को सावधानी से देखना चाहिए।

■■

आयुर्वेद

स्वास्थ्य का प्राचीन विज्ञान

चिरायता

कड़वाहट में छिपा सेहत का खज़ाना

प्रकृति ने हमें अनमोल जड़ी-बूटियाँ दी हैं, जिनमें से एक है चिरायता (Swertia chirata)। भले ही इसका स्वाद कड़वा हो, लेकिन इसके औषधीय गुण इतने शक्तिशाली हैं कि यह कई बीमारियों के लिए रामबाण माना जाता है। आइए जानते हैं चिरायता के अद्भुत फायदे, उपयोग और कुछ जरूरी सावधानियाँ।

चिरायता क्या है?

चिरायता हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक औषधीय पौधा है, जिसकी पत्तियाँ, तना और जड़ें सभी स्वास्थ्य लाभों से भरपूर होती हैं। आयुर्वेद में इसे एक महत्वपूर्ण औषधि के रूप में सदियों से इस्तेमाल किया जा रहा है। इसकी तासीर ठंडी होती है, और यह मुख्य रूप से पित्त और कफ दोषों को शांत करने में सहायक है।

चिरायता के अद्‌त फायदे:

1. बुखार में रामबाण: चिरायता का सबसे प्रसिद्ध उपयोग बुखार, विशेषकर मलेरिया और मौसमी बुखार

में है। इसके एंटीपायरेटिक गुण शरीर के तापमान को कम करने में मदद करते हैं। इसका काढ़ा बुखार के साथ होने वाले बदन दर्द और संक्रमण से भी राहत देता है।

2. डायबिटीज कंट्रोल: मधुमेह के रोगियों के लिए चिरायता किसी वरदान से कम नहीं। यह इंसुलिन के उत्पादन को बढ़ाने और रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है। नियमित सेवन से फास्टिंग शुगर को कंट्रोल किया जा सकता है।

3. लिवर का रक्षक: चिरायता एक बेहतरीन लिवर डिटॉक्सिफायर है। यह लिवर को साफ करके उसकी कार्यप्रणाली को सुधारता है। हेपेटाइटिस और अन्य लिवर संबंधी समस्याओं में भी यह बहुत फायदेमंद है।

4. पाचन तंत्र को दुरुस्त करे: अपच, गैस, कब्ज जैसी पेट संबंधी समस्याओं में चिरायता बेहद प्रभावी है। यह पाचन क्रिया को मजबूत करता है और भूख बढ़ाने में भी सहायक है। इसमें मौजूद लैक्सेटिव गुण पेट साफ रखने में मदद करते हैं।

5. त्वचा रोगों का समाधान: चिरायता खून को साफ करने के लिए जाना जाता है। यह शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालकर फोड़े-फुंसी, एग्जिमा, खुजली और अन्य त्वचा संक्रमणों को ठीक करने में मदद करता है। यह त्वचा को स्वस्थ और चमकदार बनाता है।

6. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए: इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट, एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल और एंटीवायरल गुण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) को बढ़ाते हैं, जिससे शरीर बीमारियों से लड़ने में सक्षम होता है।

7. खांसी और जुकाम: चिरायता का काढ़ा सर्दी-जुकाम और खांसी में भी बहुत फायदेमंद होता है। इसके एंटी-वायरल गुण संक्रमण को कम करने में सहायक हैं।

चिरायता का उपयोग कैसे करें?

चिरायता का सबसे आम उपयोग काढ़े या चूर्ण के रूप में है:

- **काढ़ा:** चिरायता के सूखे पत्तों या तने को पानी में उबालकर काढ़ा बनाया जा सकता है। इसे छानकर ठंडा होने पर पिया जाता है।
- **चूर्ण:** चिरायता के पाउडर को पानी के साथ लिया जा सकता है।
- बाजार में चिरायता से बनी आयुर्वेदिक दवाएं और कैप्सूल भी उपलब्ध हैं।

सावधानियां और संभावित नुकसान:

चिरायता के कई फायदे हैं, लेकिन इसका सेवन सावधानी से करना चाहिए:

- **कड़वाहट:** इसका स्वाद बहुत कड़वा होता है, जिससे कुछ लोगों को मतली या उल्टी हो सकती है।
- **निम्न रक्तचाप:** यह रक्तचाप को कम कर सकता है, इसलिए निम्न रक्तचाप (लो बीपी) वाले मरीजों को डॉक्टर की सलाह के बिना इसका सेवन नहीं करना चाहिए।
- **गर्भावस्था और स्तनपान:** गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को इसके सेवन से बचना चाहिए या चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।
- **डायबिटीज:** चूंकि यह ब्लड शुगर को कम करता है, इसलिए मधुमेह के रोगी जो दवाएँ ले रहे हैं, उन्हें अपने डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए ताकि शुगर का स्तर बहुत कम न हो जाए।
- **अधिक मात्रा:** अधिक मात्रा में सेवन से एलर्जी, सिरदर्द, गैस्ट्रिक समस्या और दस्त जैसी शिकायतें हो सकती हैं।

चिरायता वास्तव में प्रकृति का एक अनमोल उपहार है, जो कड़वाहट के पीछे सेहत के कई रहस्य छिपाए हुए है। पर किसी भी औषधि की तरह, इसका उपयोग भी विशेषज्ञ की सलाह से ही करना उचित है। अपनी जीवनशैली में इसे शामिल करने से पहले आयुर्वेदिक चिकित्सक से परामर्श अवश्य करें।

क्या आप चिरायता के किसी खास उपयोग या फायदे के बारे में और जानकारी चाहते हैं?

–प्रस्तुति: द साइलेंट स्ट्रोक ■■

NATIONAL YOUTH DAY

स्वामी विवेकानंद -युवाओं के प्रेरणादाता

—प्रस्तुति: द साइलेंट स्ट्रोक

राष्ट्रीय युवा दिवस मनाने का निर्णय भारत सरकार ने 1984 में लिया था। इसे पहली बार 1985 में मनाया गया था और तब से यह हर साल स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। उनकी 163वीं जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस 2025 समारोह सद्भाव, सार्वभौमिक भाईचारे और आत्म-सुधार के उनके संदेश को फैलाने पर केंद्रित है। स्वामी विवेकानंद न केवल एक आध्यात्मिक नेता थे, बल्कि एक समाज सुधारक, दार्शनिक और प्रेरक वक्ता भी थे, जिन्होंने अनगिनत व्यक्तियों को प्रेरित किया। यह दिन न केवल उनके जीवन और कार्यों के लिए एक श्रद्धांजलि है, बल्कि भारत के युवाओं के लिए उनके दृष्टिकोण को बढ़ावा देने का दिन भी है।

"साम्प्रदायिकता, धार्मिकता और उनकी वीभत्स वंशधर इस सुंदर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज कर चुकी है। वे पृथ्वी को हिंसा से भरती रही हैं, उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही हैं, सभ्यताओं को ध्वस्त करती और पूरे-पूरे देश को निराशा की गर्त में डालती रही हैं। यदि ये वीभत्स व दानवी शक्तियां न होती तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर अब उनका समय आ गया है और मैं आंतरिक रूप से आशा करता हूं कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घण्टा ध्वनि हुई है, वह समस्त धर्मान्धिता का, तलवार और लेखनी के द्वारा होने वाले सभी उत्पीड़नों का तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारंपरिक कटुताओं का मृत्यु-नाद सिद्ध हो।"

उपरोक्त उद्गारों को प्रकट करने वाले महापुरुष थे- स्वामी विवेकानंद। वर्ष 1893 में अमेरिका, शिकागो में विश्व धर्म परिषद में भारत के प्रतिनिधि के रूप में विवेकानंद पहुंचे। वहां के लोगों ने बहुत प्रयत्न किए कि स्वामी विवेकानंद को सर्वधर्म परिषद में बोलने न दिया जाए। लेकिन एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा-सा समय मिला। उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए।

विवेकानंद का व्यक्तित्व

आधुनिक भारत के निर्माताओं में स्वामी विवेकानंद का नाम अग्रणी है। उनके व्याख्यान तथा लेख महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, सी. राजगोपालाचारी जैसे आजादी से पूर्व के बहुत-से राजनीतिक नेताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बने। इन सभी ने स्वामी जी के विचारों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की थी। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने लिखा है, "स्वामी विवेकानंद का धर्म राष्ट्रीयता को उत्तेजना देने वाला धर्म था। नई पीढ़ी के लोगों में उन्होंने भारत के प्रति भक्ति जगायी, उसके अतीत के प्रति गौरव एवं उसके भविष्य के प्रति आस्था उत्पन्न की। उनके उद्गारों से लोगों में आत्म-निर्भरता और स्वाभिमान के भाव जगे हैं। स्वामीजी ने सुस्पष्ट रूप से राजनीतिक का भी संदेश नहीं दिया, किंतु जो भी उनके अथवा उनकी रचनाओं के संपर्क में आया, उसमें देशभक्ति और राजनीति मानसिकता अपने आप ही उत्पन्न हो गयी।"

बाल गंगागाधर तिलक ने कहा था, "यह एक निर्विवाद सत्य है कि वह स्वामी विवेकानंद ही थे, जिन्होंने

पश्चिम के भौतिक विज्ञान के सामने हिंदुत्व का परचम लहराने की चुनौती को साकार किया। वह विवेकानंद ही थे, जिन्होंने विश्व के विभिन्न देशों में हिंदुत्व की शोभा बढ़ाने का असाध्य कार्य अपने कंधों पर लिया। इस काम को अंजाम देने के लिए उन्होंने अपने ज्ञान, वक्तव्य शैली, जोश और आंतरिक शक्ति से एक मजबूत नींव तैयार की। बारह सदियां पहले शंकर वह महान व्यक्ति थे, जो न केवल हमारे धर्म की पवित्रता की बातें करते थे, अपितु इसे लागू भी करते थे। स्वामी विवेकानंद भी उसी स्तर के व्यक्ति हैं।

शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में विवेकानंद

11 सितम्बर 1893 को शिकागो में विश्वधर्म महासभा में अपने सम्बोधन में उन्होंने बताया था कि धर्मान्धता मानवता की शत्रु है। उनके संबोधन का आध्यात्मिक संदेश था, "सहायता करो न कि संघर्ष, समावेशन न कि विनाश, सद्भाव और शांति न कि विवाद।" उनके भाषण सुनने के पश्चात अमरीकी समाचारपत्रों ने लिखा, "उनके विचार जानने के बाद अब हम समझेंगे कि इस ज्ञानमय देश भारत को मिशनरी भेजना कितनी मूर्खता है।" उनका भाषण इतना प्रभावशाली था कि धर्म सम्मेलन समाप्त होने से पूर्व ही अनेक लोग इनके शिष्य बन गए।

एक बार जब विवेकानंद अमेरिका गए थे वहां एक महिला ने उनसे शादी करने की इच्छा प्रकट की। जब विवेकानंद ने उस महिला से पूछा कि आप ऐसा क्यों चाहती हैं तो उस महिला ने उत्तर दिया कि वे उनकी बुद्धि से बहुत मोहित है और उसे एक ऐसे ही बुद्धिमान बच्चे की कामना है। उन्होंने महिला से कहा कि चूंकि वो सिर्फ उनकी बुद्धि पर मोहित है इसलिए कोई समस्या नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं आपकी इच्छा को समझता हूं। शादी करना और इस दुनिया में एक बच्चा लाना और फिर जानना कि वो बुद्धिमान है कि नहीं, इसमें बहुत समय लगेगा। इसके अलावा ऐसा हो इसकी गारंटी भी नहीं है। इसके बजाए आपकी इच्छा को तुरंत पूरा करने के लिए मैं आपको एक सुझाव दे सकता हूं। मुझे अपने बच्चे के रूप में स्वीकार कर लें। इस प्रकार आप मेरी माँ बन जाएंगी और इस प्रकार मेरे जैसे बुद्धिमान बच्चा पाने की आपकी इच्छा भी पूर्ण हो जाएगी। वह महिला उनके उत्तर और सुझाव को सुनकर अवाक रह गई।

विवेकानंद का बचपन

हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति के उन्नायकों और सुधारकों में प्रमुख स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को सूर्योदय से 6 मिनट पूर्व 6 बजकर 33 मिनट 33 सेकंड पर हुआ था। कोलकता की सिमुलियापल्ली के एक कायस्त (क्षत्रिय) समृद्ध परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त और माँ का नाम भुवनेश्वरी दत्त था। उनके पिता एक प्रसिद्ध वकील थे। विश्वनाथ में धार्मिक कट्टरता का लेशमात्र भी अंश नहीं था। माँ भी बहुत प्रखर व्यक्तित्व की ओजस्वी महिला थी। रामायण, महाभारत, भागवत आदि पुराणों का पाठ वह नियमित रूप से करती थी। उनका घर का नाम नरेन्द्र दत्त था, लेकिन लोग उन्हें नरेन कहकर पुकारते थे।

चंचल प्रकृति का बालक होने पर भी नरेन्द्र के चरित्र में बचपन से ही साधरण बालकों की अपेक्षा कुछ अधिक विशेषताएं थी। खेलते समय अगर कोई लड़का किसी प्रकार की धांधली करने लगता तो नरेन्द्र बहुत बिगड़ता और आगे आकर फैसला करता। अगर देखता कि उसकी बात नहीं मानी जा रही है और लड़के आपस में मार-पीट पर उतारु है तो वह निर्भीक भाव से बीच में खड़ा होकर उन्हें झगड़ने से रोक देता। नरेन्द्र बेहद नटखट, शरारती होने के साथ-साथ क्रोधी भी थे। बेटे का क्रोध देखकर उनकी माता कहती थी, "बहुत प्रार्थना कर शिव से एक पुत्र मांगा था किंतु उन्होंने एक भूत भेज दिया है। यह लड़का बड़ा जिद्दी है जो ठान लेगा, उसे पूरा करके मानेगा।"

वे एक मेधावी विद्यार्थी थे। वर्ष 1871 में मात्र आठ वर्ष की आयु में उनका नामांकन 9वीं कक्षा में करवा दिया गया था। वे निडर होकर सत्य पर डटे रहने के लिए तैयार रहते थे। उनके विद्यालय की एक घटना इस प्रकार है- एक दिन जब नरेन्द्र और उसके मित्र कक्षा में बातें कर रहे थे तो शिक्षक ने उनसे पूछा कि बताइएं मैं क्या पढ़ा रहा था? नरेन्द्र में एक ही समय में बातें करने और सुनने की शक्ति थी। उन्होंने शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर सही-सही दे दिया, जबकि दूसरे सही उत्तर नहीं दे सके। शिक्षक ने उन सबको खड़ा होने का दण्ड दिया। नरेन्द्र को छोड़ दिया गया, हालांकि शिक्षक को बताया गया कि पाठ के दौरान वही बातें कर रहा था। किन्तु नरेन्द्र अपने आप खड़ा हो गया। जब शिक्षक ने कहा कि आप बैठ जाए, तो नरेन्द्र बोला, "किन्तु

मुझे खड़ा होना चाहिए, क्योंकि मैं ही बातें कर रहा था।"

विवेकानंद का गुरु से मिलन

नरेन्द्र परमात्मा को पाने की लालसा रखते थे। वे जानना चाहते थे कि क्या सचमुच ईश्वर है? क्या किसी ने देखा है? इन सवालों का जवाब पाने के लिए एक दिन वह देवेन्द्र नाथ टैगोर के पास भी गए। परन्तु उनके उत्तर से वह संतुष्ट नहीं हुए। इस कार्य के लिए वे ब्रह्म सामाज की ओर आकर्षित हुए परन्तु वहां उन्हें संतोष प्राप्त नहीं हुआ। उनकी आयु 18 वर्ष की थी जब वह विश्वविद्यालय की अपनी पहली परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। नवम्बर 1880 में वे अपने एक मित्र सुरेन्द्रनाथ मित्र, के घर में एक छोटे से उत्सव में गए वहां उन्होंने एक धार्मिक पद गाया। यहीं पर रामकृष्ण की तीव्र दृष्टि उन पर पड़ी और उनकी आत्मा की गहराई में बैठकर उनकी अतृप्ति पहचानी और उन्हें अपना लिया। उन्होंने नरेन्द्र को दक्षिणेश्वर आकर भेंट करने के लिए कहा। रामकृष्ण परमहंस के पास नरेन्द्र अपने प्रश्नों का उत्तर लेने के लिए गए। नरेन्द्र ने अपनी जिज्ञासा उनके सामने भी प्रकट की। रामकृष्ण परमहंस ने कहा, हां मैंने उसे देखा है, जिस तरह इस समय मैं तुम्हें देख रहा हूं, इससे भी साफ। नरेन्द्र उनके शिष्य बन गए। संन्यास लेने के बाद उनका नाम विवेकानंद हुआ।

स्वामी विवेकानंद को निर्धनता की स्थिति में ईश्वरचंद्र विद्यासागर के एक विद्यालय में अध्यापक की नौकरी मिली तो गुरु की सेवा करने के लिए उन्होंने उस नौकरी को त्याग दिया। कहा कि "नौकरियां बहुत मिलेंगी, ठाकुर कब-कब मिलते हैं।" विवेकानंद जी ने कानून की पढ़ाई की थी। वकालत उस समय का सबसे सम्मानित पेशा माना जाता था। तेज-तर्रार वकीलों की अच्छी खासी फीस होती थी। वे चाहते तो लालची वकील होकर बेशुमार धन-दौलत कमा सकते थे। लेकिन उन्होंने समाज और देश के लिए त्यागमय जीवन को चुना।

स्वामी जी के गुरु रामकृष्ण परमहंस अस्वस्थ थे उनका उपचार कोलकाता के बाहर एक उद्यान भवन में चल रहा था, वे घर में अपनी माँ से मिलकर लौटे। देखा, सारे गुरु भाई खिन्न दिखाई पड़ रहे हैं तो उन्होंने पूछा तो उन्हें पता चला कि डॉक्टर ने कहा है कि गुरु को कैंसर है और वह छूत का रोग है। अतः सेवा करने वाले शिष्य कुछ सावधानी बरतें। स्वामी जी ने क्षण भर सोचा और अपने गुरु भाइयों के अपने साथ ऊपर, जहां गुरु अपने कमरे में विश्राम कर रहे थे, आने को कहा। कमरे में पहुंचकर उन्होंने गुरु की सेवा करने वाले लाटू से पूछा, "ठाकुर ने कुछ खाया? उत्तर मिला, "प्याले में दलिया दिया था। ठाकुर ने थोड़ा-सा खाया कि प्याले में ही उल्टी कर दी। "इसका अर्थ था कि उनके गले के भीतर से वह दलिया लौट कर प्याले में आ गया और रोग के सारे कीटाणु उसमें मौजूद हैं। स्वामी जी ने वह प्याला उठाया और सारा का सारा पी गए। अपने गुरु भाइयों की ओर देखा और कहा, "अब कोई रोग की छूत लगने की बात नहीं करेगा। "यह स्वामी विवेकानंद की गुरुभक्ति, गुरुसेवा और गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा की पराकाष्ठा थी।

25 वर्ष की अवस्था में नरेन्द्र दत्त ने गेरुआ वस्त्र पहन लिए। वर्ष 1886 में रामकृष्ण परमहंस का स्वर्गवास हो गया। रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के बाद विवेकानंद ने विभिन्न तीर्थ स्थलों की पैदल यात्रा की। गुरु रामकृष्ण परमहंस के देहांत के बाद जब उनके गुरु भाई अपने-अपने घरों को लौट गए और वे उन्हें संगठित करने का प्रयत्न कर रहे थे, उन्हें निरंतर अपमान का सामना करना पड़ रहा था तो एक दिन माता भुवनेश्वरी ने कहा, "तू क्यों उनके घर जाता है, जहां तेरा इतना अपमान होता है ?" इस पर स्वामी जी का उत्तर था, "माँ, व्यक्ति का मान क्या और अपमान क्या? यह तो माया है और मेरी माया मर चुकी है। मान-अपमान होता है, देश का, धर्म का, संस्कृति का।"

शिक्षा संबंधी विचार

वे गांधीजी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के समान ही मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा को स्वीकार करते थे। बालक सर्वाधिक प्रयोग मातृभाषा का ही करता है। घर, परिवार और आसपास के समाज में अधिकतम प्रयोग मातृभाषा का ही होता है ऐसे में स्वाभाविक है कि मातृभाषा के माध्यम से ही बालक चिरस्थायी और अधिकतम ज्ञान प्राप्त कर सकता है। वे सारे देश को मानसिक और भावनात्मक रूप से एकजुट बनाने के लिए एक जनसंपर्क भाषा के रूप में संस्कृत के प्रयोग का समर्थन करते थे। उनकी दृष्टि में संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी तथा विरासत में मिला ज्ञान के भंडार का स्रोत है जो भारत और भारतीय संस्कृति को समझने के लिए आवश्यक है।

उन्होंने कहा था, "जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण करें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।

“वे भेदभाव रहित सार्वभौमिक शिक्षा प्रदान करने के समर्थक थे। उन्होंने शिक्षा को जन-जन तक प्रसार करने का समर्थन किया क्योंकि वे जानते थे कि यदि शिक्षा ग्रहण करने का अवसर अगर कुछ लोगों तक ही सीमित हो या किसी भी कारण से समाज का बड़ा हिस्सा शिक्षा की प्राप्ति से वंचित रह जाएगा तो देश का संपूर्ण विकास नहीं हो सकता। शिक्षा का प्रसार देश के कारखानों, खेल के मैदानों और खेतों, यहां तक कि देश के हर घर में होना चाहिए। यदि बच्चे स्कूल तक नहीं आ पा रहे हैं तो शिक्षकों को उन तक पहुंचना चाहिए।

महिलाओं की स्थिति में सुधार

स्वामी विवेकानंद ने इस बात की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया कि प्राचीन भारत में बौद्धिक क्षेत्र में स्त्रियों को प्रमुख स्थान प्राप्त था। स्त्रियों के संन्यास लेने पर उन्होंने पारंपरिक हिंदू प्रतिबंधों को तोड़कर संन्यासिनों के लिए एक मठ की स्थापना की और स्त्रियों के लिए धार्मिक तथा अन्य विषयों की शिक्षा सुविधाओं की वकालत की। महिला को शिक्षा का अधिकार दिलाने के विषय में उन्होंने कहा था, “कौन-से शास्त्र हैं, जिनमें आपको लिखा मिलेगा कि नारी ज्ञान एवं भक्ति के लायक नहीं है। पतन के दौर में जब धर्माचार्यों ने दूसरी जातियों को वेद पढ़ने के लिए अक्षम घोषित किया, तभी उन्होंने महिलाओं को भी उनके अधिकारों से वंचित कर दिया। नहीं तो आप पाएंगे वैदिक और उपनिषद काल में मैत्रेयी एवं गार्गी जैसी स्त्रियों ने ऋषि-मुनियों के बराबर स्थान प्राप्त किया था। एक हजार ब्राह्मणों की उपस्थिति में, जब वेदों के बड़े विद्वान थे, गार्गी ने बड़े साहस से याज्ञवल्क्य को ब्रह्मज्ञान के ऊपर शास्त्रार्थ की चुनौती दी थी। स्त्रियां यदि उस समय ज्ञान की अधिकारी थीं। आज के समय में ये अधिकार उन्हें क्यों न मिले?“

युवाओं का आह्वान

स्वामी विवेकानंद का कहना था, “राष्ट्र निर्माण का महान कार्य राष्ट्र के युवाओं के मजबूत कंधों पर ही टिका है। यदि भारत के युवा बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के मंत्र को जीवन का अंग बना लें तो किसी की सामर्थ्य नहीं कि कोई उनकी राह रोक सके। “वे कभी नहीं चाहते थे कि भारतीय युवा वर्ग किसी धर्म, परंपरा या संस्कृति का अंधानुकरण करें। उनका मानना था कि मनुष्य को स्वयं अपनी शक्ति को समझना और परखना होगा दूसरों के अलंकरण मात्र से व्यक्ति की सृजनशीलता, उसकी विशिष्ट पहचान और शक्ति दब जाती है। कोई व्यक्ति कितना भी महान क्यों न हो, मगर उस पर आंख मूंदकर भरोसा न करें।

वे कहते थे कि “मैंने नवयुवकों को संगठित करने के लिए ही जन्म लिया है। मैं चाहता हूं कि ऐसे युवाओं का एक समूह तैयार कर विश्व के कोने-कोने में भेजूं जो सर्वत्र नैतिकता, सत्साहस, दया, प्रेम, करुणा, न्याय आदि सद्गुणों का उजाला बिखेर सकें। यदि मुझे मुठ्ठीभर भी ऐसे तेजस्वी, वीर्यवान, श्रद्वा-सम्पन्न, दृढ़ विश्वासी व निष्कपट युवा मिल जाएं तो मैं दुनिया का कायाकल्प कर सकता हूं।“

वर्ष 1899 में वे पुनः अमरीका गये और विभिन्न जगहों पर वेदांत समाजों की स्थापना की। वहां से एक धार्मिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए पेरिस गये। पेरिस से संपूर्ण यूरोप का भ्रमण करते हुए 9 दिसम्बर 1900 में बेलूर मठ, भारत वापस आ गये। बेलूर मठ से अपनी माता (श्री रामकृष्ण की विधवा) के साथ पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) और आसाम के तीर्थ स्थानों की, ढाका और शिलांग की अंतिम यात्रा पर एक बार निकले। 18 मार्च, 1901 को अपने बहुत सारे संन्यासी शिष्यों और माताजी के साथ वे ढाका गए। इसके बाद वह चन्द्रनाथ और कामाख्या गए। उनका स्वास्थ्य बराबर गिरता गया और मधुमेह के अलावा उन्हें बहुत भारी दमा भी हो गया। वह यात्रा से शीघ्र लौटे। स्वास्थ्य लाभ के लिए वे बनारस गए परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। वहां से कोलकाता वापस लौटने पर उनका स्वास्थ्य पुन: खराब हो गया।

उनकी बीमारी बढ़ती जा रही थी। नींद प्रायःआती ही नहीं थी। चिकित्सक ने परिश्रम करने से मना कर दिया था। उनका चलना दुस्साध्य हो गया था। कहा जाता है कि उन्होंने अपने निर्वाण से पहले यह कह दिया था कि वह 40 वर्ष की उम्र तक जिंदा नहीं रह पाएंगे । उनकी यह भविष्यवाणी सच साबित हुई। मात्र 39 वर्ष की आयु में 4 जुलाई 1902 को कोलकाता के बेलुर मठ में उन्होंने ध्यानमग्न स्थिति में देह त्याग दिया। लेकिन उन्हेंने अल्पायु में ही कुछ ऐसा काम किया कि वह आज तक निर्विवाद रुप से देश के सबसे प्रमुख प्रेरणा स्रोतों में गिने जाते हैं।

■■

अद्भुत कारनामे

पीयूष गोयल 'दादरीवाला' के साथ एक विशेष साक्षात्कार

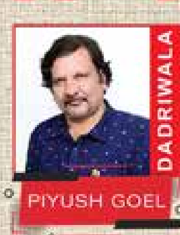

INT EW
The Silent STROKE
MAGAZINE | CURRENT AFFAIRS
Jan-June 2025

नरेन्द्र त्यागी

संपादक,
द साईलेंट स्ट्रोक

नमस्कार दोस्तों! आज हम आपको एक असाधारण शख्सियत, श्री पीयूष कुमार गोयल से मिलवाने जा रहे हैं। जो पेशे से यांत्रिक अभियंता हैं। उन्होंने सुई, कील और विभिन्न लेखन उपकरणों से 18 अनूठी पुस्तकें हाथ से लिखी हैं, जिनमें से सुई से लिखी पुस्तक के लिए उन्हें वर्ल्ड रिकॉर्ड मिला है। उनके नाम दो लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स भी दर्ज हैं, और 10 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

लेखन के अलावा, वे क्रिकेट अंपायर हैं और गणित में तीन रिसर्च पेपर प्रकाशित कर चुके हैं। पीयूष जी एक प्रेरणादायक वक्ता के रुप में 10,000 से अधिक छात्रों को प्रेरित कर चुके हैं और आजकल अपनी 19वीं पुस्तक पर काम कर रहे हैं (रश्मिरथी की दर्पण छवि)। उन्हें 12 प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा जा चुका है। जैसा कि वे कहते हैं: **"मैं एक दीया हूँ मेरा काम है चमकना, हो सकता है मेरी रोशनी कम हो पर दिखाई बहुत दूर से दूँगा।"**

प्रश्न 1. सर्वप्रथम संक्षिप्त शब्दों में आपका परिचय। आप कहाँ से हैं, वर्तमान समय में क्या करते हैं? आपका लेखन क्षेत्र में कैसे आगमन हुआ?

जवाब: मेरा नाम पीयूष कुमार गोयल है। मेरा जन्म 10 फरवरी 1967 को माता रविकांता गोयल और पिता डॉ. देवेंद्र कुमार गोयल के घर एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। मैं दादरी निवासी हूँ और 58 वर्ष की आयु में, एक यांत्रिक अभियंता के तौर पर 29 वर्षों का बहुमूल्य अनुभव रखता हूँ।

गणित, मेरा पहला प्रेम, हमेशा से मेरी रुचि का केंद्र रहा है। मैंने गणित के क्षेत्र में कई नए प्रयोग किए और मेरी दिली ख्वाहिश थी कि ये काम पुस्तकों का रुप लें। काफी प्रयासों के बाद, 2010 में मेरी पहली पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसके बाद मेरे गणित के शोधपत्र प्रतिष्ठित रिसर्च जर्नल्स में भी छपे। अब तक मेरी 12 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। लेखन के प्रति मेरी रुचि बचपन से ही थी, और हाथ से दर्पण छवि में लिखने का मेरा सफर 1987 में शुरु हुआ। 2003 से 2024 तक, मैं 18 पुस्तकें हाथ से लिख चुका हूँ!

प्रश्न 2. दर्पण छवि लेखन की कैसे सूझी और कहाँ से आपको प्रेरणा मिली? दर्पण छवि के अतिरिक्त आप और किस प्रकार का लेखन करते हैं?

जवाब: दर्पण छवि लेखन का ज्ञान मुझे 1987 से था, लेकिन इसकी वास्तविक शुरुआत 2003 में हुई। साल 2000

में मेरा एक गंभीर दुर्घटना में एक्सीडेंट हो गया, जिसके चलते मैं नौ महीने तक बिस्तर पर रहा। फिर 2003 में मेरी नौकरी चली गई और मैं गहरे अवसाद में चला गया। एक दिन अचानक एक मित्र ने मुझे श्रीमद्भगवद्गीता भेंट की। मैंने उसे प्रसाद समझकर ग्रहण किया और तुरंत एक पृष्ठ पढ़ लिया। आप विश्वास नहीं करेंगे, लगभग सात महीनों में मैंने पूरी श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्याय और 700 श्लोकों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हाथ से लिख डाला। इस प्रक्रिया ने न केवल मेरा अवसाद दूर किया, बल्कि मुझे फिर से नौकरी भी मिल गई। दर्पण छवि के अलावा, मुझे लघु कथाएँ और विचार लिखना भी बेहद पसंद है।

प्रश्न 3. आपने श्रीमद्भगवद्गीता को भी दर्पण छवि में लिखा है, उस समय आपको किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

जवाब: जी हाँ, श्रीमद्भगवद्गीता लिखते समय तीन बार मेरा मन विचलित हुआ। लिखने में कोई तकनीकी दिक्कत नहीं थी, पर कभी-कभी मन नहीं करता था। हालाँकि, एक आध्यात्मिक व्यक्ति होने के नाते मैं जानता था कि किसी भी धार्मिक पुस्तक को बीच में अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए। बस यही सोचकर मैंने उसे पूरा किया।

प्रश्न 4. आपकी इन अनूठी लेखन शैली पर लोगों की क्या प्रतिक्रियाएँ आपको मिलती हैं? और आप खुद को किस प्रकार सकारात्मक रखते हुए अपना लेखन करते हैं?

जवाब: लोगों की प्रतिक्रियाएँ हमेशा मेरे काम की प्रशंसा करती हैं, और वे उत्सुकता से पूछते हैं कि मैंने यह सब कैसे किया। मैं उन्हें एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूँ: "कौए ने कंकड़ डालकर पानी पी लिया था। अगर एक पक्षी ऐसा कर सकता है, तो हम इंसान क्यों नहीं?" बस यही है मेरी सकारात्मक सोच का आधार। मैं हमेशा कोशिश करता हूँ कि स्वयं सकारात्मक रहूँ और अपने आस-पास के लोगों को भी सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करूँ।

प्रश्न 5. मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पृष्ठभूमि से आने के बावजूद आपने लेखन की यात्रा कैसे शुरू की?

जवाब: बचपन में मैं पहले पायलट बनना चाहता था, फिर प्रोफेसर, लेकिन अंततः मैं एक मैकेनिकल इंजीनियर बन गया। हालांकि, मुझे इसका कोई अफसोस नहीं है। लेखन मुझे असीम खुशी देता है, और जब किसी काम से खुशी मिलती है, तो इंसान उसे करने का रास्ता खोज ही लेता है।

प्रश्न 6. मीडिया में आपको 'मिरर इमेज मैन' के नाम से जाना जाता है। मिरर इमेज बुक लिखने की अपनी अद्भुत कला के बारे में हमें कुछ बताइए। आपने यह कला कैसे हासिल की?

जवाब: यह 1987 की बात है। एक दिन जब मैं अपने दोस्तों के साथ बैठा था, तो उनमें से एक ने अचानक मुझसे पूछा, "पीयूष, तुम दुनिया के लिए कुछ अनोखा कर सकते हो।" मैंने पूछा इसका क्या मतलब है, तो उसने बस कहा, "तुम कर सकते हो।" बस यहीं से मेरा मिरर इमेज में लिखने का सफर शुरू हुआ। मैंने छोटे अंग्रेजी अक्षरों में, और फिर हिंदी भाषा में खूब अभ्यास किया। 2003 में मैंने हिंदी और अंग्रेजी में श्रीमद्भगवद्गीता लिखना शुरू किया, और इस तरह मिरर इमेज में लेखन की मेरी यात्रा चल पड़ी।

प्रश्न 7. आपने कितनी मिरर इमेज किताबें लिखी हैं? इस अनूठी लेखन शैली का सबसे कठिन हिस्सा क्या है?

जवाब: अब तक मैंने 18 किताबें हाथ से लिखी हैं। जब आप कुछ नया करने की कोशिश करते हैं, तो सब कुछ मुश्किल लगता है, लेकिन उसे पूरा करने के बाद जो संतुष्टि मिलती है, वह अद्वितीय है। मेरी किताबें विभिन्न चीज़ों से लिखी गई हैं जैसे पेन, सुई, मेहंदी कोन, लोहे की कील, लकड़ी की कलम, कार्बन पेपर, फैब्रिक कोन लाइनर। और यह बताते हुए मुझे बहुत खुशी होती है कि क्या आपने कभी गोंद और ग्लू से लिखी किताब के बारे में सुना है? हाँ, मैंने ऐसा भी किया है!

प्रश्न 8. आपने दुनिया की पहली नीडल बुक लिखने का कीर्तिमान स्थापित किया है। कृपया पाठकों को इसके बारे में

अधिक जानकारी दें?

जवाब: वह वास्तव में एक बहुत ही अद्भुत क्षण था जब मैंने विश्व की पहली हस्तलिखित सुई पुस्तक 'मधुशाला' के लिए वर्ल्ड रिकॉर्ड (World Record Association) बनाया। यह मेरे लिए एक गर्व का पल था।

प्रश्न 9. अगर आप लेखक और कवि नहीं होते तो जीवन में क्या होते? अगले पांच सालों में आप खुद को एक लेखक के तौर पर कहाँ देखते हैं?

जवाब: संभवतः मैं कोई व्यवसायी होता या बेस्टसेलर सूची में शुमार होता। अगले पाँच सालों में, मैं खुद को एक ऐसे लेखक के रूप में देखता हूँ जिसकी कृतियाँ और भी व्यापक रूप से पढ़ी और सराही जा रही हैं।

प्रश्न 10. आपके अनुसार वे कौन सी 5 पुस्तकें हैं, जिन्हें हर किसी को पढ़ना चाहिए और आपके शीर्ष 3 लेखक कौन हैं और एक लेखक के रूप में आपकी यात्रा पर उनका क्या प्रभाव पड़ा?

जवाब: मेरे अनुसार हर किसी को जो 5 पुस्तकें पढ़नी चाहिए वे हैं: श्रीमद्भगवद्गीता, मधुशाला, गीतांजलि, और पंचतंत्र। प्रेमचंद, रवींद्रनाथ टैगोर और हरिवंश राय बच्चन जैसे महान लेखकों ने एक लेखक के रूप में मेरी यात्रा पर गहरा प्रभाव डाला है और मुझे बहुत प्रेरित किया है।

प्रश्न 11. हमें अपने परिवार, पसंद और नापसंद के बारे में कुछ बताइए?

जवाब: यह भगवान का आशीर्वाद है कि मैं आज भी अपने माता-पिता के साथ रहता हूँ। परिवार में हम तीन भाई और एक बहन हैं। मेरे अपने परिवार में, मैं, मेरी पत्नी, बड़ा बेटा (सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग), बहू (वित्त और मानव संसाधन में एमबीए), छोटा बेटा (बिजनेस) और बेटी (बीए फ्रेंच भाषा) हैं। हम सभी सहयोगी हैं और एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं।

प्रश्न 12. यदि आपको जीवन भर केवल तीन चीजों के साथ रहना पड़े, तो वे तीन चीजें क्या होंगी?

जवाब: गणित, क्रिकेट और पुस्तकें।

प्रश्न 13. यदि आपको इस दुनिया से एक चीज़ बदलने की शक्ति दी जाए तो आप क्या बदलेंगे?

जवाब: भ्रष्टाचार।

प्रश्न 14. यदि आपके पास इस दुनिया का सारा पैसा हो तो आप सबसे पहले क्या करेंगे?

जवाब: सबसे पहले गरीबों के लिए काम करूँगा।

प्रश्न 15. पसंदीदा स्थान?

जवाब: मुजफ्फरनगर।

प्रश्न 16. व्यक्ति?

जवाब: माता और पिता।

प्रश्न 17. भोजन?

जवाब: वेज पुलाव।

प्रश्न 18. पेय पदार्थ?

जवाब: कॉफी।

प्रश्न 19. आपकी अन्य प्रतिभाएँ?

जवाब: गणित, कार्टून, कैरिकेचर और क्रिकेट अंपायरिंग।

प्रश्न 20. आपका पहला प्यार?

जवाब: गणित (पढ़ना और लिखना)।

प्रश्न 21. पसंदीदा उद्धरण?

जवाब: "ज़िन्दगी को अगर जीना है, तो चढ़ने पड़ेंगे।"

प्रश्न 22. किसी पुस्तक का पसंदीदा पात्र?

जवाब: चाचा चौधरी और साबू।

प्रश्न 23. भविष्य के लिए आपके लेखन की क्या योजनाएँ हैं? पाठकों के नाम कोई खास संदेश?

जवाब: अभी 18 पुस्तकें पूरी हुई हैं। ईश्वर के आशीर्वाद से, मेरा लक्ष्य 20 पुस्तकें पूरी करना है, वो भी दर्पण छवि में और अलग-अलग अनूठे तरीकों से हाथ से लिखी हुई। मेरे प्रयास जारी हैं।

पाठकों से मैं यही कहना चाहता हूँ: "जुनूनी बनो! अपने अच्छे काम से अपना, अपने परिवार का, समाज का और अपने देश का नाम रोशन करो, क्योंकि सपने आपके अपने हैं और आप अपनों के अपने हो। अपने सपने पूरे करो, क्योंकि सपने देखने व सोचने के भगवान पैसे नहीं लेता।" और हाँ, "पूरी दुनिया नतीजे को सलाम करती है, लेकिन प्रयास करने वालों की कभी हार नहीं होती।" ■■

पहलगाम हमला

चुनावी मुद्दा - उचित या अनुचित

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा चुनाव प्रचार में पहलगाम हमले का जिक्र करना और उससे राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश करना उचित है या नहीं, यह एक जटिल और विवादास्पद मुद्दा है जिस पर अलग-अलग लोगों के अलग-अलग विचार हो सकते हैं।

यहाँ विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना महत्वपूर्ण है:

जो लोग इसे अनुचित मानते हैं, उनके तर्क:

- संवेदनशीलता का अभाव: उनका मानना है कि ऐसे दुखद और संवेदनशील मुद्दों का राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल करना पीड़ितों और उनके परिवारों के प्रति असंवेदनशील है।
- राष्ट्रीय सुरक्षा का राजनीतिकरण: राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद जैसे गंभीर मुद्दों को चुनावी फायदे के लिए इस्तेमाल करना देश की सुरक्षा चुनौतियों का राजनीतिकरण करता है, जिससे वास्तविक समाधानों पर ध्यान भटक सकता है।
- भावनाओं का दुरुपयोग: आलोचकों का तर्क है कि ऐसे बयानों से मतदाताओं की भावनाओं को भड़काने की कोशिश की जाती है, ताकि वे भावनाओं में बहकर मतदान करें, न कि ठोस मुद्दों और विकास के आधार पर।
- ध्रुवीकरण: ऐसे मुद्दे अक्सर समाज में ध्रुवीकरण पैदा कर सकते हैं, जिससे राजनीतिक मतभेद और बढ़ सकते हैं।

जो लोग इसे उचित मानते हैं या इसका बचाव करते हैं, उनके तर्क:

- राष्ट्रीय सुरक्षा एक चुनावी मुद्दा: उनका मानना है कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद देश के लिए महत्वपूर्ण मुद्दे हैं और इसलिए इन्हें चुनावी बहस का हिस्सा बनाना स्वाभाविक है। सरकार अपनी नीतियों और कार्रवाईयों को मतदाताओं के सामने रख सकती है।
- जवाबदेही और विश्वास: सरकार या प्रधानमंत्री यह तर्क दे सकते हैं कि वे मतदाताओं को यह बताना चाहते हैं कि उन्होंने देश की सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाए हैं और वे इस मुद्दे पर कितने गंभीर हैं। यह मतदाताओं का विश्वास जीतने का एक तरीका हो सकता है।
- शहीदों और पीड़ितों को श्रद्धांजलि: कुछ लोग यह भी तर्क दे सकते हैं कि इन घटनाओं का उल्लेख करना शहीदों और पीड़ितों को याद करने और उन्हें श्रद्धांजलि देने का एक तरीका है, और यह सुनिश्चित करना है कि देश उनकी शहादत को न भूले।
- विपक्ष पर हमला: सत्तारूढ़ दल विपक्ष की पिछली नीतियों या कथित विफलताओं पर सवाल उठाने के लिए भी ऐसे मुद्दों का इस्तेमाल कर सकता है।

संक्षेप में, यह एक ऐसा विषय है जहाँ नैतिक, राजनीतिक और भावनात्मक पहलू आपस में जुड़े हुए हैं। अंतिम निर्णय कि यह "उचित" है या नहीं, व्यक्ति के अपने मूल्यों और सोच पर निर्भर करता है।

—नरेन्द्र त्यागी। दिल्ली

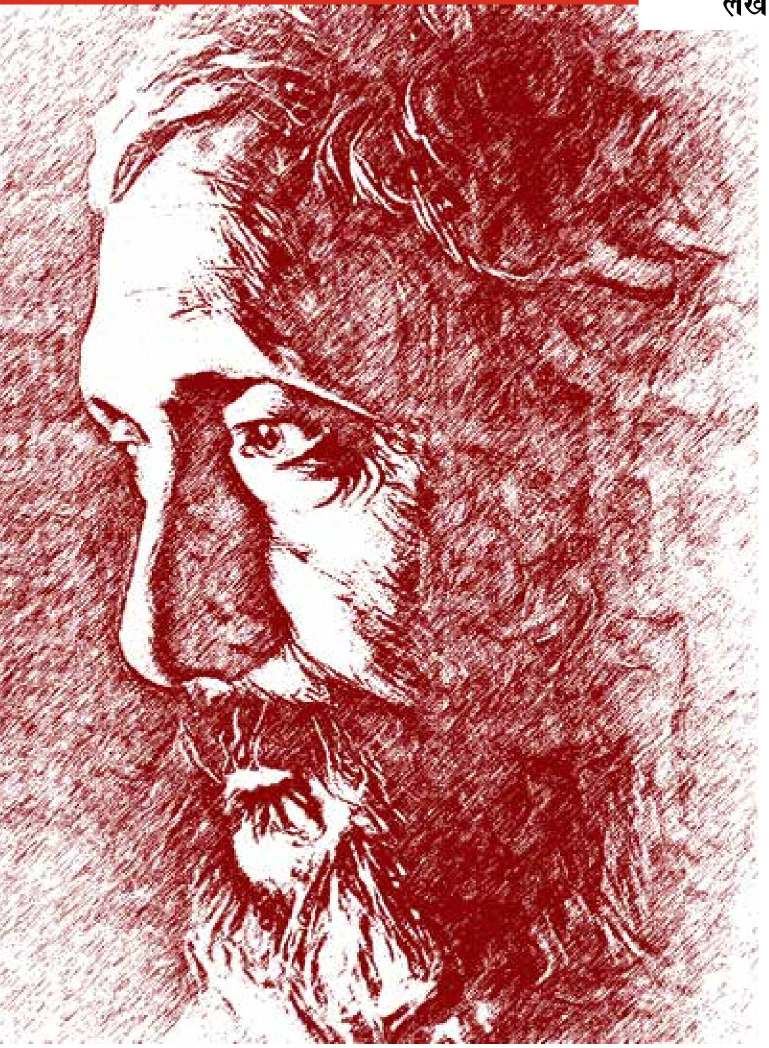

सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" -शब्दों का निराला बादशाह

21 फरवरी, 1896

—प्रस्तुतिः द साइलेंट स्ट्रोक

हिंदी साहित्य में अनेक महाकवि हुए हैं। इन्हीं कवियों में एक ऐसे भी थे, जिन्होंने काव्य, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, निबंध संग्रह, आलोचनात्मक ग्रन्थ, अनुवाद, जीवनियां, नाटक अर्थात समस्त विधाओं में अपना प्रभुत्व कायम किया। कोलकाता में हिंदी साप्ताहिक पत्र "मतवाला" में योगदान करते समय कवि ने "निराला" उपनाम अपनाया और अपनी प्रतिभा के बल पर उस नाम को साहित्य जगत में स्थायी रूप से प्रतिष्ठित भी किया।

21 फरवरी 1896 को सुर्ज कुमार तिवारी यानी सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" का जन्म हुआ। वसंत पंचमी पर उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा वर्ष 1930 में प्रारंभ हुई। उन्होंने अपने जन्मदिन के विषय में कहा था, मैं सरस्वती का पुत्र हूँ, इसलिए मेरा जन्मदिन वसंत पंचमी के दिन ही मनाया जाए। उनके पिता पं. रामसहाय त्रिपाठी तथा माता रुक्मणी थी। उनके पिता मूलरूप से उन्नाव जिले में गढ़ाकोला गांव के निवासी थे। वे बंगाल की महिषादल स्टेट मेदिनीपुर (मिदनापुर) के राजा के यहां उच्च पदाधिकारी थे।

एक बार निराला की परीक्षा में एक निबंध का प्रश्न आया था, तुम अपने जीवन में क्या बनोंगे? इसके उत्तर में उन्होंने लिखा- "निराला बनूंगा"। तभी उन्होंने मतवाला अथवा निराला बनने की कल्पना कर ली थी। जब उन्हें अपनी रचना के प्रकाशन की इच्छा हुई उस समय उनके मन में यह बात आई कि उनका नाम सुर्ज कुमार तिवारी अच्छा नहीं लगा। तब उन्होंने अपना नाम सूर्यकान्त त्रिपाठी रखा। अपने असली नाम के साथ-साथ सुर्ज कुमार, बांग्ला में सूरजो कुमार तथा सूर्यकांत, दार्शनिक, गरगज सिंह वर्मा, साहित्य शार्दूल, जनाब अली और शौहर आदि नामों से भी लिखा।

निराला के पिता पंडित रामसहाय को अंग्रेजी स्कूल में उनको भेजना स्वीकार न था। अतः सामान्य बांग्ला पाठशाला में उन्हें भेजा गया। वर्ष 1907 में उनका नाम प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने पर महिषादल की हाई स्कूल की तीसरी कक्षा में लिखवाया गया। इसी विद्यालय में निराला को बांग्ला और संस्कृत का सामान्य ज्ञान हुआ। आठवीं-नवीं कक्षा तक पहुंचते-पहुंचते वे अंग्रेजी, संस्कृत, गणित और इतिहास का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर चुके थे।

चौदह वर्ष की आयु में चांदपुर जिला फतेहपुर में उनकी शादी मनोहरा देवी से हुई। प्रकृतिप्रिया मनोहरा देवी के प्रति आकृष्ट होने के कारण युवा निराला का मन पुस्तकों से उचटने लगा था। एंट्रेंस की गणित की परीक्षा में वह उत्तर पुस्तिका में पद्माकर के श्रृंगार रस वाले कवित्त लिखकर घर चले आये थे। मनोहरा देवी से निराला की दो संतानें, रामकृष्ण त्रिपाठी एवं सरोज उत्पन्न हुई। दोनों का विवाह उन्होंने सादगी के साथ किया। दोनों के विवाह के अवसर पर उन्होंने स्वयं पुरोहित का कार्य भी किया। बचपन में माता के देहांत, विवाह के कुछ दिनों के बाद पत्नी की मृत्यु हो गई। उन्होंने अपने आपको किसी तरह संभाल लिया। लेकिन पुत्री सरोज की मृत्यु और पुत्र वधू फूलदुलारी के चिर-वियोग से वे पूरी तरह टूट गए थे। कहते हैं कि निराला को इतना गहरा सदमा पहुंचा कि वे घण्टों शमशान में बैठे रहते थे। अपने दुख के संबंध में उन्होंने लिखा था–

दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूं आज जो नहीं कही?

वह केवल नौवीं कक्षा तक पढ़ पाये थे। उनकी पहली कविता 1 जून, 1920 को कानपुर से मासिक पत्रिका "प्रभा" में प्रकाशित हुई थी। उनकी अंतिम कविता पत्रोत्कंठित जीवन का विष बुझा हुआ है, यह उजागर करती है कि निराला का कवि कर्म बराबर जीवन और कविता के बीच में भिडंत में लगातार लिप्त रहा है। सम्पादक के रूप में निराला ने जो लेख लिखे वे बड़े रोचक और चुटीले तथा गंभीर भी थे। उनके लेखों में साहित्यिकता सदैव रहती थी। अतः कहा जा सकता है कि उनका सम्पादकीय साहित्य भी निराला ही था।

वर्ष 1923 में कोलकाता से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र "मतवाला" से जुड़े। मतवाला के मालिक महादेव प्रसाद सेठ निराला के बजाए उग्र पर विशेष अनुग्रह दिखाने लगे तो निराला कोलकाता से वर्ष 1929 में लखनऊ चले गये। वहां दुलारे लाल भार्गव ने उन्हें "सुधा" में काम दिया। इन सबके होते हुए भी वे तनिक विचलित तो जरूर हुए परन्तु वे अपने उसी उत्साह के साथ रचनात्मक क्षेत्र में निरन्तर कार्य करते रहे। वर्ष 1930 में प्रकाशित अपने काव्य संग्रह "परिमल" में गुरु गोबिन्द सिंह जैसे राष्ट्र नायक का यशोगान करते हुए उन्होंने कहा था–

सवा-सवा लाख पर एक को चढ़ाऊंगा,
गोबिन्द सिंह निज नाम जब कहाऊंगा ॥

आधुनिक हिंदी कविता में पहली बार विधवा, भिक्षुक, बादल राग, जागो फिर एक बार, कुमुरमुत्ता, तोड़ती पत्थर, महगू महगा रहा, झींगुर डटकर बोला जैसी सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ की कविताएं उन्होंने लिखीं। वे दासप्रथा जैसी कुरीतियों के प्रबल विरोधी थे। अमानवीय भेदभाव उन्हें कचोटता रहता था तभी तो अनामिका, भूख, वह तोड़ती पत्थर जैसी कविताओं के माध्यम से उन्होंने मानव-समाज में यर्थाथचेतना के विकास पर बल दिया। उनकी भिक्षुक कविता जहां भिक्षुकों के यथार्थ को प्रकट करती है, वहीं सामंतों के लिए बहुत कुछ कहती है–

पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को
भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली को फैलाता
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता ॥

उन्होंने कुकुरमुत्ता जैसे नगण्य पौधे को सर्वहारा वर्ग का प्रतीक बनाकर अपने काव्य विषय के जिस रूप में उसे प्रस्तुत किया है वह अपने आप में अनूठा प्रयोग है। कुकुरमुत्ता उपेक्षित होकर भी स्वयं को तुच्छ नहीं मानता–

वही गंदे में उगा देता हुआ बुत्ता
पहाड़ी से उठे-सर ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता-
अबे, सुन बे, गुलाब,
फूल मत गर पाई खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा गैर का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट ॥

इलाहाबाद में पत्थर तोड़ती महिला पर लिखी उनकी कविता आज भी सामाजिक यथार्थ का एक आईना है। सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती महिला का रेखांकन उन्होंने इस प्रकार किया–

देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर कोई न छायादार पेड़
वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार श्याम तन, भर बंधा यौवन
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार

सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार
चढ़ रही थी धाप गार्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप उठी अलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू गर्द चिनगारी छा गयीं
प्रायः हुई दुपहर वह तोड़ती पत्थर ॥

उन्होंने नारी स्वातंत्र्य तथा नारी जागरण के लिए साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने "बाहरी-स्वाधीनता" निबंध में लिखा, "अब घर के कोने-कोने में समाज और धर्म की साधना नहीं हो सकती। जमाने ने रुख बदल दिया है। हमारे देश की लड़कियों पर बड़े-बड़े उतरदायित्व आ पड़े हैं। उन्हें वायु की तरह मुक्त रखने में ही हमारा कल्याण है। तभी वे जाति, धर्म तथा समाज के लिए कुछ कर सकेंगी। उन्हें दबाव में रखकर इस देश के लोग अपने जिस कल्याण की चिंता में पड़े हैं, वह कल्याण कदापि नहीं प्रत्युत निरी मूर्खता है।"

महादेवी ने निराला की सादगी और उनकी आर्थिक स्थिति के विषय में कहा था कि एक बार रक्षा बंधन के दिन निराला रिक्शा में बैठकर उनके घर राखी बंधवाने आये। यह उनका नियम था। उन्होंने राखी बांधी। जब निराला जाने लगे तो उन्होंने महादेवी से एक रुपया मांगा। जब महादेवीजी ने रुपया देते हुए पूछा, "यह किसलिए चाहिए?" तो वह बोले, "आठ आने तुम्हें राखी बांधने के दूंगा और आठ आने रिक्शा वाले को किराया दूंगा।" एक ओर तो निराला की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी तो दूसरी ओर उन जैसा त्याग करने वाला कोई नहीं था। एक बार कोई गरीब औरत उनके सामने आई तो उसे अपनी नई रजाई दे दी, किसी दरिद्र महिला के बच्चे पर शाल डाल दिया, नंगे पैर चलते ग्वाले को अपने जूते दे दिये, रेल में यात्रा करते हुए भिखारियों को दस-दस के नोट बांट दिये। और जब उन्हें 21,000 रुपये का पुरस्कार मिला तो एक विधवा स्त्री को दे दिए।

छन्द के बंधन को उन्होंने ही तोड़ा है। आज जिस मुक्त छन्द को प्रयोगवाद के प्राण के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है और हिंदी कविता आज तक जिस लकीर को फीट रही है, वह उनकी ही देन है। कविता का गद्य का रूप होते हुए भी उसे कविता बनाये रखने का श्रेय उन्हीं को जाता है। उन्होंने लोकगीत, कजली, ख्याल जैसी शैलियों को जैसा प्रस्तुत किया है वह अपने आप में अभिनव है। उनके उपमान चित्रात्मकता या सौन्दर्यात्मक विशेषता के आधार पर प्रयुक्त न होकर विचार के प्रमुख साधन के रूप में चुने गए हैं। उन्होंने नवीन जीवन संदर्भो के साथ जुड़कर गीत की नई विधाओं को जन्म दिया। उन्होंने नई कविता, अस्वीकृत कविता, अकविता, नवगीत, किस्म-किस्म की कविता, सनातनी सूर्योदयी कविता तथा अगीत कविता की अनेक विधाओं का सृजन भी किया।

उन्होंने "एक दार्शनिक" नाम से कई दार्शनिक निबंध भी लिखे। उनका मत था, "किसी देश को उन्नति के शिखर पर संस्थापित करने का सबसे उत्तम उपाय यही है कि उसके बच्चों की सार्वभौमिक शिक्षा की ओर ध्यान दिया जाए। उसके सामने देश के आदर्श बालकों के चरित्र रखे जाए।" भक्त प्रहलाद की भूमिका में कहा, "ऐसे धर्मनिष्ठ सरल और दृढ़वत बालक के चरित्र का प्रचार स्खलित मति, निर्वीर्य, निरूत्साह, पथभ्रष्ट कर देने वाली कुशिक्षा से बचाने के लिए देश के बालकों में अवश्य होना चाहिए।" बाल साहित्य की दृष्टि से महाभारत और उसका सार संक्षेप, संक्षिप्त महाभारत, निराला की एक महत्वपूर्ण कृति है। इसे बच्चों के लिए उपयोगी बनाने के लिए उन्होंने संस्कृत, बांग्ला और हिंदी की कई पुस्तकों के आधार पर तैयार किया था। बाल साहित्य के विषय में एक बार उन्होंने लिखा था, "मैं कितना बड़ा साहित्यकार क्यों न माना जाऊं पर मेरी लेखनी तभी सार्थक होगी, जब इस देश के बाल-गोपाल मेरी कोई कृति पढ़कर आनन्द विभोर होंगे।"

निराला जी के निधन पर कवियित्री महादेवी वर्मा ने कहा था, "तुम जीवित थे तब, सुनने को जी करता था। तुम चले गये तब, गुनने को जी करता है।" उनकी मृत्यु पर डॉ. राधाकृष्ण ने कहा, "निराला भारत के ऋषि-मुनियों की ही परम्परा में एक सच्चे ऋषि और विद्रोही, क्रांतिकारी तथा युगप्रवर्तक कवि थे। उनके काव्य में ऐसी मानवता के दर्शन होते हैं, जो जाति या राष्ट्र की सीमाओं में बंधी नहीं है। वह सत्य के पुजारी और धुन के पक्के थे। उन्होंने साहित्य की परम्पराओं में नई शैलियों का समावेश किया तथा प्रजातंत्र, मानवता एवं प्रगति के लिए अपना सारा जीवन लगा दिया।" निराला को निराला इसलिए कहा जाता है कि वे आत्महंता थे। लेकिन उनकी जीवन और मनुष्य में गजब आस्था थी। वे एक महान कवि के साथ एक महामानव भी थे।

उन्हें किसी अकादमी से सम्मान नहीं मिला और शायद मिलने पर वे स्वीकार भी नहीं करते। लेकिन वे खड़ी बोली साहित्य के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कवि हुए। वे हमारी संस्कृति के अक्षय स्रोत हैं। 15 अक्टूबर, 1961 को दारागंज, इलाहाबाद में उनका निधन हुआ। ■■

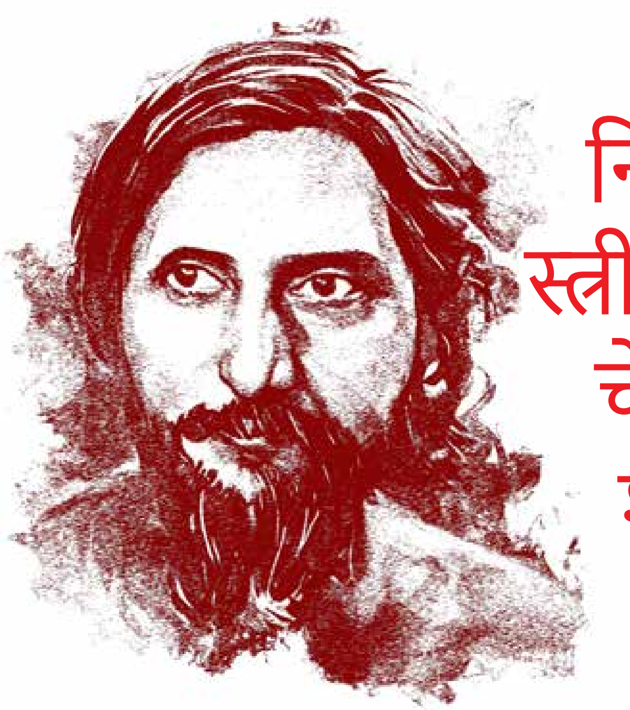

निराला की स्त्री मुक्ति की चेतना और राम की शक्तिपूजा

—डॉ. माधवम सिंह

राम की शक्तिपूजा कविता यूँ तो कई केंद्रीय तत्वों को धारण करती है, किंतु स्त्री मुक्ति की चेतना इस कविता के केंद्र में आद्यंत दिखाई देती है। इस कविता में राम का समूचा संघर्ष ही सीता की मुक्ति के लिए है। राम रावण (औपनिवेशिक सत्ता के साथ-साथ असत का भी प्रतीक) से टकराते हैं, अत्यंत कठिन जीवन संघर्षों से गुजरे हैं, शक्ति की कठिन परीक्षा से गुजरते हैं, शक्ति की मौलिक कल्पना करते हैं। यह सब सीता की मुक्ति के लिए ही करते हैं। निराला की राम की शक्तिपूजा कविता में सीता की मुक्ति ही स्त्री की मुक्ति है। इस कविता में निराला ने जितनी प्रखरता से कलात्मक संयोजन किया है उतनी ही प्रखरता से स्त्री मुक्ति की चेतना को आवाज भी दी है। स्त्री मुक्ति की चेतना को केंद्र में रखकर इतनी महान और उदात्त कविता लिख देना महाप्राण निराला जैसे महान व द्दष्टा कवि के लिए ही संभव था।

निराला की राम की शक्तिपूजा कविता में कथानक का उद्देश्य सीता की मुक्ति है। जब कभी राम को लगा कि सीता की मुक्ति अब नहीं हो पाएगी उनका मन आत्माधिक्कार से भर गया है। शक्तिपूजा का अंतिम इंदीवर जब शक्ति उठा लेती हैं और पुष्प को गायब देखकर राम के मन की अवस्था देखिए–

“धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका”

राम का यह आत्मधिक्कार विजय पाने के लिए या सिद्दि पाने के लिए नहीं है। यह सिर्फ सीता की मुक्ति के लिए है। सीता-मुक्ति के लिए रावण से हो रहे युद्ध में राम कई बार ‘अमानिशा’(घनघोर निराशा) की स्थित में पहुंच जाते हैं। उन्हें संशय व्याकुल करने लगता है। रावण के जय की कल्पना करते ही उनका ह्रदय भय से बैठ जाता है।

“स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर-फिर संशय,
रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय”

ऐसी स्थिति में सीता की स्मृति से ही राम के मन में आशा का संचार होता है, उम्मीद की नई किरण फूटती है-

डॉ. माधवम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
शहीद स्मारक राजकीय महाविद्यालय, यूसुफपुर
मुहम्मदाबाद, गाज़ीपुर

"ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का, प्रथम स्नेह का लतांतराल मिलन
नयनों का नयनों से गोपन प्रिय संभाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,"

सीता की स्मृति इतनी शक्तिदायक है कि घोर निराशा और हताशा में डूबा लगभग पराजय को स्वीकार चुका मन अचानक से दुनिया की किसी भी शक्ति को हराकर' विश्वविजय' की भावना से भर जाता है।

"सिहरा तन, क्षण-भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता ध्यान-लीन राम के अधर,
फिर विश्व-विजय भावना हृदय में आई भर"

सीता की मुक्ति के लिए राम कठिन-से-कठिन साधना करने के लिए तैयार हैं। स्त्री मुक्ति की बाधक शक्तियों का सिर्फ बल से ही सामना नहीं किया जा सकता, उसके लिए रचनात्मक शक्तियां भी अनिवार्य होती हैं। रावण के बल का अनुमान लगाकर ही जामवंत राम को 'शक्ति की मौलिक कल्पना' की प्रेरणा देते हैं।

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनंदन"

राम शक्ति की मौलिक आराधना में खुद को समर्पित करते हैं। शक्ति की परीक्षा से राम का मन टूट जाता है। किन्तु तभी राम 'जानकी के उद्धार न होने' को याद कर निराशा और पराजय बोध को छोड़ एक नए मन और व्यक्तिव के साथ उठ खड़े होते हैं। राम का यह मन रचानात्मक ऊर्जा से भरा हुआ मन है जो बिना डिगे किसी भी परिस्थिति का सामना पूरे साहस से करता है और विश्वविजय करता है।

"वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय"

राम का मन सीता की मुक्ति के लिए इतना समर्पित और प्रतिबद्ध है कि आंख निकालकर चढ़ा देना उसके लिए छोटी बात है। राम का यह समर्पण और प्रतिबद्धता ही तो

उन्हें विकट युद्ध में टिकाए हुए है, अन्यथा रावण जैसी असत शक्ति के आगे खड़े रह पाना भी संभव नहीं प्रतीत होता था। राम सीता की मुक्ति के लिए शक्ति की मौलिक आराधना पूरी करने लिए कमल के स्थान पर अपनी आंख निकालकर देने की तैयारी कर रहे हैं कि तभी शक्ति प्रसन्न होकर राघव का हाथ थम लेती हैं।

"दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन"

स्त्री-मुक्ति निराला की राम की शक्तिपूजा कविता का केंद्रीय और स्थाई भाव है। इस कविता में सीता स्त्री शक्ति का प्रतीक हैं। जिनकी मुक्ति से ही समाज पूर्ण हो सकता है। निराला यह भी रेखांकित करते हैं कि स्त्री की मुक्ति के लिए राम जैसे समर्पण और प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। ऐसे समर्पण व प्रतिबद्धता से ही स्त्री मुक्ति की बाधक शक्तियों को पराजित किया जा सकता है। स्त्री मुक्ति के लिए केवल परंपरागत शक्तियां ही कारगर नहीं हो पाएंगी उसके लिए राम की भांति शक्ति की साधना से मौलिक शक्तियां भी अर्जित करनी होगी। इस प्रकार राम की शक्तिपूजा कविता में हमें निराला की नारी-मुक्ति चेतना का चरम विकास दिखाई देता है। ■■

महिला दिवस की महत्ता

रश्मि भटनागर

एफ– 102, एक्सप्रेस ग्रीन्स
सेक्टर 1, वैशाली, गाजियाबाद
201019, उत्तर प्रदेश

महिला (स्त्री, औरत या नारी) मानव का मादा स्वरूप है। यह स्त्रीलिंग है। महिला शब्द मुख्यतः वयस्क स्त्रियों के लिए व सम्पूर्ण नारी वर्ग के लिए उपयोग किया जाता है। नर के धर्म वाली या नर से संबंध के कारण इसका नाम नारी पड़ा। प्राचीन, आदिकाल व वैदिक काल से भारतीय संस्कृति में महिला का स्थान सम्मानीय रहा है। मनु ने मनु स्मृति में कहा है कि जिस कुल में महिलाओं की पूजा व मधुर वचनों से सत्कार होता है उस कुल पर देवता प्रसन्न होते हैं। परिवार में महिलाओं को मातृ सत्तात्मक माना जाता था। ऋग वेद काल में महिलायें उस समय की सर्वोच्च शिक्षा अर्थात बह्मज्ञान प्राप्त कर सकती थीं। अर्धनारीश्वर की कल्पना महिला व पुरुष के समान अधिकार तथा उनके संतुलित संबंधों का परिचायक है। सभी भूमिकाओं में दोनों को समान अधिकार प्राप्त थे। वेदों की 21 प्रकाण्ड विदुषियां भी अपने शास्त्रार्थ में विद्वान थी। इनमें अदिति, शची, शतरुपा, अरुन्धती, गार्गी, मैत्रेयी आदि मुख्य थीं।

मध्यकाल में महिला की स्थिति व सम्मान में कुछ कमी देखने को मिली। कन्या जन्म अशुभ माना जाने लगा। उन्हें घृणा से देखा जाने लगा। कन्या भ्रूण हत्या होने लगी। महिला घरेलू भूमिका से प्रोत्साहित होने लगी। समानता, प्रतिष्ठा व धन हेतु मजदूरी करने में उत्साहित होने लगी। उस समय भी महिला राज्यकर्ता के रुप में सामने आई जैसे अहिल्याबाई होल्कर, चांदबीवी, रानी चेनम्मा, रानी लक्ष्मीबाई, महारानी ताराबाई इत्यादि। संत के रुप में भी भक्तिकाल की मीराबाई, मुक्ताबाई, कान्होपात्रा, शबरीबाई, दया बाई इत्यादि पराधीनता व यातना की अभिव्यक्ति बनी। भक्तिकाल में नारी के भौतिक और आध्यात्मक, मानसिक सभी प्रकार के सौंदर्य की अनुभूति मिलती है।

महिला के देवी व दासी रुप भी देखने को मिले, क्योंकि महिला हृदय से कोमल, दया, सहानुभूति, स्नेह की सजीव प्रतिमा रही हैं व आज के युग में भी हैं। सृष्टि की

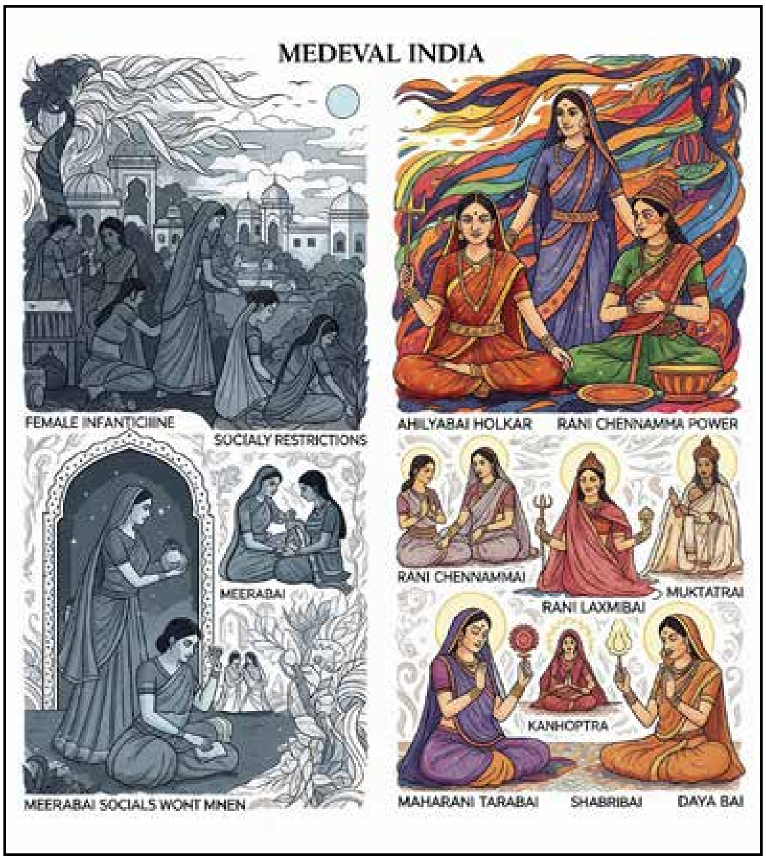

सम्पूर्ण रिक्ता की पूर्ति महिलाओं से ही मानी गयी है। पति के मनमाने अधिकार का उदाहरण द्रोपदी व माता सीता बनी। महाभारत काल में भी महिलाओं के अधिकार पहले जैसे नहीं थे। घर-गृहस्थी में सीमित रहने लगी। बहुपत्नी व्यवस्था आदि से महिलाएं उपभोग की वस्तु बनने लगी क्योंकि तप, त्याग, नम्रता, धैर्य आदि पतिव्रत धर्म के पालन को उसने अपने प्रमुख लक्ष्य बनाये। किशोरियों को शिक्षा से वंचित रखा जाने लगा। बाल विवाह प्रथा प्रारंभ हुई। विधवा विवाह पर प्रतिबंध लगा। पर्दे की प्रथा बेड़िया बनीं। अविद्या, सती प्रथा अभिशाप बनने लगीं।

मध्य युग में ही राजनीति का प्रभाव सामाजिक, आर्थिक स्थितियों पर पड़ा। भारतीयों में एकता कम होने से बाहरी आक्रमणकारियों के कारण हम सभी की स्थितियों में परिवर्तन देखने को मिला। अधिकतर महिलाओं को आश्रित होना पड़ा। उनकी सनातन, वैदिक श्रेष्ठता, आदर्शवाद व सौम्यता गौरव को ठेस पहुंचाई गयी। तुलसीदास ने लिखा ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी सकल ताड़ना के अधिकारी। कबीर ने महिलाओं की परछाई से बचने का उपदेश दिया। विलासियों और कवियों ने उन्हें विलास की वस्तु समझा। समय-समय पर कुछ समाजसेवियों जैसे राजाराम मोहन रॉय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद इत्यादि ने महिलाओं की दमनकारी नीतियों का विरोध किया व बदलाव लाने की चेष्टा की।

अन्ततः वर्ष 1917 तक कई बार अमेरिका व रूस में महिलाओं ने अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष किया व वर्ष 1975 में 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का प्रारंभ न्यूयॉर्क में हुआ और वर्ष 1977 में अधिकारिक रूप से संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने भी संसार में इसे मनाने की मान्यता दी। भारत में महिला दिवस का प्रारंभ भारत की कोकिला कवियित्री सरोजिनी नायडू के जन्म दिवस 13 फरवरी को मनाने का निर्णय लिया गया था। वह भारत की पहली कांग्रेस अध्यक्ष व उत्तर प्रदेश की गर्वनर भी रही थी। उन्होंने कहा था कि यदि पुरुष देश की शान हैं तो महिला इस देश की नींव है। इसका मतलब हम समझे तो यह है कि यदि नींव को अच्छी तरह नहीं रखा तो शान ढ़ह जायेगी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस उनके द्वारा अपने अधिकारों की मांग जैसे— सशक्तिकरण, समानता, सम्मान गरिमा व अन्यायों का विरोध प्राप्त करने हेतु आंदोलन शुरु करने का ठोस परिणाम है। महिलाओं व पुरुषों को वर्ष 1970 तक संयुक्त परिवार वाले शहर में ही पढ़ने व नौकरी की सलाह दी जाती थी। "को-एजुकेशन" भी कुछ ही विद्यालयों में चलती थी। बाद में सभी विद्यालयों में "को-एजुकेशन" शुरु हुई। सबने दूसरे शहरों में नौकरी पर भी जाना शुरु किया। यह सब पुरुषों व महिलाओं का एक-दूसरे पर विश्वास और सहयोग से ही संभव हो पाया।

वर्ष 1975 तक महिलाओं को अपने रसोईघर में अनेक सुविधाएं जैसे- गैस बर्नर, माइक्रोवेव, कुकर, डिश वॉशर, शुद्ध जल सुविधा, बर्तन धोने के पाउडर इत्यादि उपलब्ध नहीं थी। महिलाओं व पुरुषों ने मिलकर वैज्ञानिक व तकनीकी क्षेत्र में कार्य कर अब यह सब उपलब्ध करा दिए हैं। दबकर रहने के स्थान पर महिलाएं भी अपनी इच्छा अनुसार रह पा रही हैं। अब वह स्वतंत्र है। अब महिलाएं पुरुषों पर व पुरुष महिलाओं की बातों पर ध्यान देते हैं। महिलाएं यहीं चाहती भी हैं।

महिला सशक्तिकरण एक प्रक्रिया है, जिससे महिलाएं अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं और समाज में व बाहर समानता, शिक्षा, आध्यात्मिकता, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक शक्ति में पुरुषों व अन्यों की बराबरी चाहती हैं। अब महिलाओं में एक भावना ने मानस बना लिया है कि उन में भी उतना ही ज्ञान व विवेक है, जितना पुरुषों में। यह होना अब स्वाभाविक हो पाया है क्योंकि महिला व पुरुषों की आबादी भी भारत में लगभग बराबरी पर है। प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों को महिलाओं से व महिलाओं को पुरुषों से सीखते रहना होगा। पुरुषों को महिलाओं की परेशानियों को समझना होगा। अपनी सोच बदलनी होगी। कुछ पुरुष जो नारीवाद के पक्ष में नहीं हैं उन्हें उनके साथ सहयोग करना होगा।

महिलाओं व सभी समाज की बेटियों व बेटों को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तर पर सशक्त बनाया जा रहा है। डिजिटल युग में सभी में आत्मविश्वास आया है। यह राष्ट्र की प्रगति में सहायक है। इससे मातृ मृत्युदर, कुपोषण और लिंग आधारित हिंसा में कमी आ रही है। महिलाएं अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर रही हैं। यदि अधिक संख्या में महिलाएं कार्य करने निकलेंगी तो इससे देश की आर्थिक स्थिति में सुधार होने की आशा है। अभी

महिलाओं की भागीदारी, उन्नति की ओर अग्रसर होगी। यदि घरेलू श्रम का असमान विभाजन (विशेषत: बच्चों व बुजुर्गों की देखभाल), और सामाजिक मानदंड, सुरक्षा संबंधी चिंताओं, मातृत्व अवकाश और कार्यस्थल पर बहुत छोटे बच्चों की रुकने की व्यवस्था आदि पर ध्यान दिया जाए। यह भी पता है कि कई बाधाओं की जड़ घर-समाज है। यह भी सत्य है कि शहरों में जहां पुरुषों को ही नौकरी पाने में संघर्ष करना पड़ता है वहां महिलाओं को और अधिक संघर्ष करना पड़ रहा है। सरकार चेष्टा में है कि सभी को हर स्तर पर समान अवसर मिले, हर पद हेतु। भारत सरकार ने वर्ष 2001 में, महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु सशक्तिकरण वर्ष के रूप में घोषित किया था। इस प्रकार महिलाएं शक्तिशाली समृद्व व सम्पन्न बन रही हैं। आजकल भारत सरकार द्वारा कई नीतियां, कानून उन्हें आत्म सम्मान प्राप्त करा रहे हैं। सभी प्रकार के व्यवसायों में महिलाएं अपने सपनों को साकार कर रही हैं व बराबर की हिस्सेदारी प्राप्त कर रही हैं।

महिलाओं को भी व्यवहार कुशलता दिखानी होगी। विद्यालयों में युवा विद्यार्थियों (लड़के, लड़की) का मानसिक विश्लेषण, यौन समस्याओं की दृष्टि से, चिकित्सक को यदि अपराध बोध प्रकृति की अधिक इच्छा दिखाई दे तो उसे सुधारने की शिक्षा का प्रावधान हो, तब यह छेड़छाड़, उत्पीड़न में कमी आ सकती है। पुरुष व महिलाओं को एक-दूसरे की तकलीफें समझने में सक्षम होना होगा व अपने संस्कारों को शुद्व करना होगा। इस असुविधाजनक सच्चाई का सामना माता-पिता के द्वारा व शिक्षकों द्वारा करना होगा।

आज सभी क्षेत्रों में महिलाएं अग्रणीय है जैसे- खेलकूद, विज्ञान, राजनीति, कार रेसर, गरीबी हटाओं योजना, हिमालय पर विजय, डॉक्टर, सेनानी, पायलट, लोकगीत, सूर्य मिशन इत्यादि का नेतृत्व, मानव तस्करी के खिलाफ अभियान, दिव्यांग मॉडल, न्यायिक व्यवस्था इत्यादि। अभी भी भारत में बहुत सारे अधिकार दिलाने की प्रक्रिया प्रगती पर है जैसे उनके प्रति द्वेषभाव के दोषियों को शीघ्रता से सजा दिलाने की प्रक्रिया, सेहत, सुरक्षा, परिवार तो कहीं समाज व परंपराओं के नाम पर महिलाओं के काम पर रोक हटाना। विशेषकर कमजोर स्तर की महिलाओं का काम में समानता के मौके की राह में बाधाओं को हटाना आवश्यक है।

फैक्ट्री कानून में सुरक्षा के नाम पर काम पर रोक (सभी शिफ्ट में), खदानों में काम पर रोक, सेहत के नाम पर पैट्रोलियम शोधन व कीटनाशक निर्माण जैसे क्षेत्र में कार्य पर प्रतिबंध, कम महिलाओं वाले संस्थानों में असंगठित सेक्टर में मातृत्व लाभ अवकाश इत्यादि में असुविधा व कई क्षेत्रों में वेतन असमानता, कुछ राज्यों में खेती वाली जमीन में महिलाओं को बराबर के हक में असमानता, गोवा सिविल कोड में महिला को जमीन बेचने हेतु पति की अनुमति व यदि एक आयु तक बेटे को जन्म नहीं दे पा रही तो पुरुष को दूसरी शादी का अधिकार इत्यादि का भविष्य में समाधान अपेक्षित है।

भारत सरकार महिलाओं को शिक्षा कौशल संसाधन प्राप्त कराने, आर्थिक अवसर देने, स्वास्थ्य और चिकित्सा सहायता देने में राजनीतिक भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करने में, अधिकारों की वकालत करने में, न्यायसंगत समाज बनाने की दिशा में और अन्य द्वार खोलने में व्यस्त हैं। आत्मविश्वास, समान वेतन, कार्यस्थल पर उत्पीड़न व कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ, संपत्ति अधिकार गरिमा और शालीन के लिए अधिकार, पारिवारिक बंधनों से मुक्त हो देश सेवा व सम्मान व मीटू आंदोलन, आदिवासी महिलाओं के उत्थान, शिक्षा के लिए प्रतिबद्व है, व सहायक है।

महिलाओं तुम स्वयं को कम मत आंकों, खुद पर गर्व करो क्योंकि तुम हो तो परिवार है, थाली में गर्म रोटी है, ममता की ठंडक है, प्यार की ऊष्मा है, संध्या बाती है, पूजा की थाली है, रिश्तों के अनुबंध है, पड़ोसी से सौहार्द्र संबंध है, दीपावली का दीप व होली के रंग, रक्षा के सूत्र हैं। इंतजार में घर का खुला दरवाजा है, रोशनी की खिड़की बच्चों की शिक्षा संस्कार हो, तुम ममता का आक्रोश हो। तुम क्या हो स्वयं को जानो व सबको बताओ जो तुम्हें जानना नहीं चाहते व तिरस्कार की आंखों से देखकर कहते हैं कि तुम दिनभर क्या करती हो?

पूरी दुनिया प्रकृति और महिलाओं की ऋणी है क्योंकि वह सृजन करने की क्षमता रखती है। महिलाओं की उन्नति में पुरुषों का बड़ा सहयोग होता है। महिलाएं बंधनों में जकड़ी रही हैं। सृष्टि का निर्माण व प्रलय स्त्री के हाथ में है फिर उनके साथ दुराचार क्यों? यहां देवी के नौ रूप जो पूज्य है। महिला को देखकर हमें माँ, बहन की सुधि आनी चाहिए और सम्मान देना चाहिए। हम बदलेंगे युग बदलेगा, भविष्य सुधरेगा। ■■

राजनीति और अर्थव्यवस्था की ताकत- प्रवासी भारतीय

09 जनवरी

प्रस्तुति : द साइलेंट स्ट्रोक

18वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में भारतीय श्रमिकों को इंडेंचर्ड लेबर या शर्तबंदी श्रमिक के रूप में सूरीनाम, मॉरीशस, फिजी इत्यादि देशों के गन्ने, कोका, फलों व मसालों के प्लांटेशन पर श्रम करने को बाध्य किया गया। एक आंकड़े के अनुसार 19वीं शताब्दी के तीसरे दशक से प्रथम विश्वयुद्ध के मध्य की अवधि में लगभग सवा करोड़ शर्तबंदी, श्रमिक तो सिर्फ पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार से भेड़-बकरियों की भांति ट्रकों में ठूंसकर कलकत्ता डिपो ले जाए गए, जहां से वे इन देशों को रवाना किए गए थे।

प्रवासी भारतीय दिवस मनाने का निर्णय एल.एम. सिंघवी की अध्यक्षता में भारत सरकार द्वारा गठित भारतीय डायस्पोरा पर उच्च स्तरीय समिति (एचएलसी) की सिफारिशों के अनुसार लिया गया था। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 8 जनवरी 2002 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में एक सार्वजनिक समारोह में समिति की रिपोर्ट प्राप्त की और 9 जनवरी 2002 को "प्रवासी भारतीय दिवस" (पीबीडी) की घोषणा की। यह दिन 1915 में महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के उपलक्ष्य में चुना गया था। भारत सरकार के निर्णय के अनुसार विदेशों में रह रहे भारतीयों को रचनात्मक, आर्थिक और लोकोपकारी भूमिका की मान्यता देने और उसका सम्मान करने के लिए प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाता है।

1990 के दशक से योग्य भारतीयों के विदेश जाने का सिलसिला तेजी से बढ़ा है। प्रवासी भारतीय दो प्रकार के हैं पहले है, अनिवासी भारतीय यानी एनआरआई। उनके पास भारतीय पासपोर्ट है और वे रोजगार, शिक्षा या किसी अन्य कारण से छह महीने या उससे अधिक समय के लिए दूसरे देश में जा बसे हैं और दूसरे वे भारतीय मूल के लोग हैं यानी पीआईओ, जिनका जन्म भारत में हुआ या जिनके पूर्वजों का जन्म यहां हुआ या जो भारतवंशी हैं, लेकिन वे भारत के नागरिक नहीं, बल्कि किसी दूसरे देश के नागरिक हैं। वर्ष 2006 में, 9 जनवरी को हैदराबाद में प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन के दौरान भारत के विदेशी नागरिक (ओसीआई) की अवधारणा की शुरुआत की गई थी।

प्रवासी भारतीय दिवस का महत्व इस प्रकार है- भारतीय प्रवासी समुदाय भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, प्रवासी भारतीयों द्वारा भेजी गई विदेशी मुद्रा भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में बड़ा योगदान देती है और आर्थिक विकास में सहायक होती है, प्रवासियों

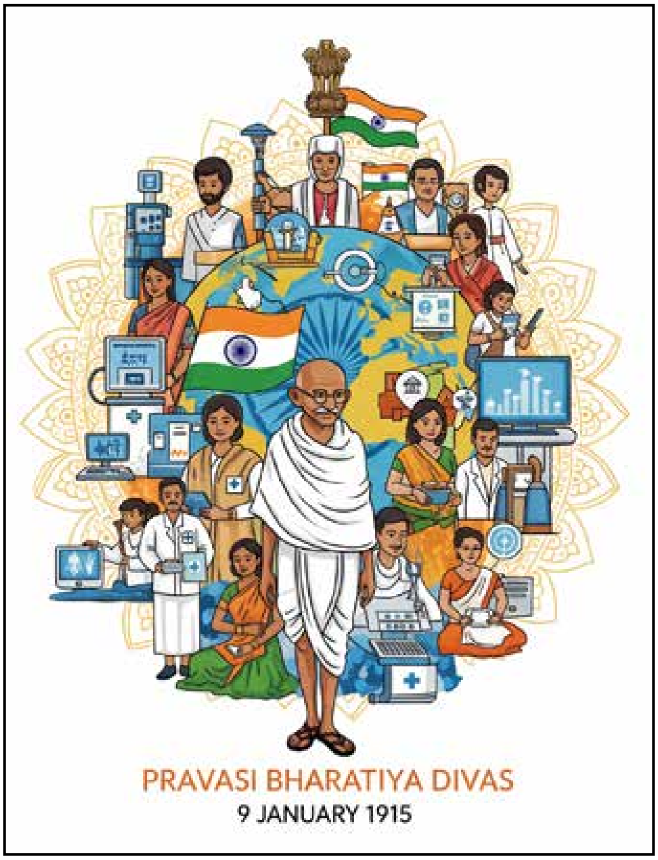

द्वारा विभिन्न क्षेत्रों जैसे बुनियादी ढांचा, प्रौद्योगिकी, और स्टार्टअप्स में किया गया निवेश आर्थिक प्रगति को प्रेरित करता है, प्रवासी समुदाय अपने कौशल, ज्ञान और विशेषज्ञता के साथ भारत में नवाचार और विभिन्न क्षेत्रों में विकास में योगदान देता है, यह दिवस भारत और वैश्विक भारतीय समुदाय के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है, जिससे भारतीय संस्कृति और धरोहर की गहरी समझ और सराहना होती है, यह आयोजन वैश्विक मंच पर भारतीय प्रवासी समुदाय की उपलब्धियों और योगदान को प्रदर्शित करके भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ाता है, प्रवासी भारतीय दिवस भारत और उसके प्रवासी समुदाय के बीच संबंधों को मजबूत करने और साझा पहचान की भावना को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करता है।

प्रवासी भारतीय दुनिया की राजनीति व अर्थव्यवस्था की ताकत बनकर उभरे हैं। अर्थव्यवस्था से लेकर राजनीति तक में भारतीयों का दबदबा है। संयुक्त राष्ट्र विश्व प्रवासन रिपोर्ट 2024 के अनुसार, भारत विश्व में सबसे अधिक संख्या में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों का उद्गम स्थल है, जो लगभग 18 मिलियन है। मई 2024 तक भारत के विदेश मंत्रालय के अनुसार, दुनिया भर में प्रवासी भारतीयों की कुल संख्या लगभग 35.42 मिलियन है, जिसमें लगभग 15.85 मिलियन अनिवासी भारतीय (NRI) और लगभग 19.57 मिलियन भारतीय मूल के व्यक्ति (PIO) शामिल हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे अधिक भारतीय समुदाय (54 लाख) है, उसके बाद संयुक्त अरब अमीरात (36 लाख) और मलेशिया (29 लाख) का स्थान है। यह आबादी अपने देश में धन प्रेषण भेजती है। 2023 में यह प्रेषण करीब 120 बिलियन डॉलर थी।

विश्व बैंक के अनुमान के अनुसार 7.82 अरब डॉलर का निवेश प्रवासी भारतीयों ने अप्रैल से अगस्त 2024 तक एनआरआई जमा योजनाओं में किया गया। विश्व बैंक के अनुसार प्रवासियों से धन हासिल करने में भारत की हिस्सेदारी 14.3 प्रतिशत है । इंटरनेशनल ऑर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन के अनुसार भारत पहला देश है, जिसमें 100 अरब अमेरिकी डॉलर के आंकड़े को पार किया है। विभिन्न देशों के प्रवासियों ने अपने देश में भेजा गया धन वर्ष 2024 के दौरान आंकड़े अरब डॉलर में इस प्रकार है– भारत 129.1, मेक्सिको 678.2, चीन 48, फिलीपींस 40.2, पाकिस्तान 33.2, बांग्लादेश 26.6, मिस्र 22.7, ग्वाटेमाला 21.6 और नाइजीरिया 19.8।

अमेरिका, कनाडा और ब्रिटेन में राजनीति में भारतीय प्रवासियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस भारतीय मूल की है । 500 सबसे बड़ी अमेरिकी कंपनियों में से 25 का नेतृत्व भारतीयों के हाथ में है। इनमें माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, यूट्यूब और एडोबी जैसी कंपनियां शामिल हैं। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई, माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्या नडेला भारतवंशी है। अजय बंगा विश्व बैंक के अध्यक्ष हैं और गीता गोपीनाथ आईएमएफ की प्रथम उप प्रबंध निदेशक है।

हर साल प्रवासी भारतीय दिवस की एक विशेष थीम होती है। जो प्रवासी समुदाय और भारत के बीच संबंधों को एक नए आयाम में ले जाती है। थीम का चयन समकालीन मुद्दों और विकास के क्षेत्रों को ध्यान में रखकर किया जाता है। प्रवासी भारतीय दिवस 2024 की थीम थी- "डायस्पोरा: अमृत काल में भारत की प्रगति के विश्वसनीय भागीदार" का उल्लेख करते हुए, राष्ट्रपति ने कहा कि यह थीम भारत के राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों की उपलब्धि में भारतीय डायस्पोरा को भागीदार बनाने की भारत की इच्छा को दर्शाता है।

साल 2025 में प्रवासी भारतीय दिवस की थीम "विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान विकसित भारत की संकल्पना में प्रवासी भारतीयों का योगदान है।"

पुरस्कार

प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसमें उन भारतीयों को सम्मानित किया जाता है, जिन्होंने विदेश में जाकर भारतवर्ष का नाम ऊंचा किया है। इस अवसर पर असाधारण योग्यता वाले एनआरआई/पीआईओ व्यक्तियों के योगदान को मान्यता देने, अपने चुने हुए क्षेत्र/पेशे में असाधारण योगदान देने वाले एनआरआई/पीआईओ व्यक्तियों को सम्मानित करने और प्रवासी लोगों के मुद्दों और चिंताओं पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। हर साल करीब 30 लोगों को पुरस्कार के लिए चुना जाता है। अब तक 296 ऐसे प्रवासियों को सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष भी 27 लोगों का चयन किया गया है। राष्ट्रपति ने 24 देशों के 27 व्यक्तियों को प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार प्रदान किए।

प्रवासी भारतीय सम्मान पुरस्कार (PBSA) प्रवासी भारतीयों के योगदान और उपलब्धियों को मान्यता देने वाला सर्वोच्च सम्मान है। हर दो साल में आयोजित होने वाले प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन के समापन सत्र के दौरान भारत के राष्ट्रपति द्वारा PBSA प्रदान किया जाता है। पीबीएसए पुरस्कार किसी अनिवासी भारतीय (एनआरआई), भारतीय मूल के व्यक्ति (पीआईओ) अथवा किसी पीआईओ/एनआरआई द्वारा स्थापित एवं संचालित संगठन या संस्था को प्रदान किया जाता है, जिसने विदेश में या भारत में निम्नलिखित में से किसी एक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो—

विदेश में उपलब्धियों के लिए— विदेशों में भारत की बेहतर समझ, भारत के मुद्दों और चिंताओं को ठोस तरीके से समर्थन देना, भारत, प्रवासी भारतीय समुदाय और उनके निवास देश के बीच घनिष्ठ संबंध बनाना, भारत या विदेश में सामाजिक और मानवीय कारण, स्थानीय भारतीय समुदाय का कल्याण, परोपकारी एवं धर्मार्थ कार्य, किसी क्षेत्र में प्रतिष्ठा या उत्कृष्ट कार्य, जिससे निवास के देश में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी हो, या कौशल में उत्कृष्टता जिसने उस देश में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई है (गैर-पेशेवर श्रमिकों के लिए)।

भारत में उपलब्धियों के लिए— भारत में परोपकारी निवेश और धर्मार्थ कार्य, भारत के विकास में दिए गए योगदान के लिए।

18वां प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन (पीबीडी), 2025 ओडिशा सरकार के साथ साझेदारी में 8 से 10 जनवरी 2025 तक ओडिशा के भुवनेश्वर में आयोजित किया गया। यह पूर्वी भारत में आयोजित होने वाला पहला पीबीडी था। यह दृष्टिकोण भारत सरकार के 'पूर्वोदय' पर फोकस के अनुरूप है। ओडिशा के दक्षिण पूर्व एशिया के साथ ऐतिहासिक समुद्री संबंध रहे हैं और समकालीन समय में इन संबंधों को नवीनीकृत और पुनर्जीवित किया गया। इस प्रकार, ओडिशा में पीबीडी 2025 भारत के प्रवासी समुदाय के साथ संबंध को गहरा करने के साथ-साथ इसकी 'एक्ट ईस्ट नीति' को भी मजबूत करता है। पीबीडी 2025 में 75 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों की एक बड़ी सभा ने भाग लिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 09 जनवरी 2025 को प्रवासी भारतीय दिवस 2025 का उद्घाटन किया। प्रवासी भारतीय दिवस 2025 की मुख्य अतिथि त्रिनिदाद और टोबैगो गणराज्य की राष्ट्रपति महामहिम क्रिस्टीन कार्ला कंगालू ने वर्चुअल माध्यम से सभा को संबोधित किया। अपने संबोधन के दौरान, उन्होंने अपने भारतीय पूर्वजों के साथ-साथ त्रिनिदाद और टोबैगो में भारतीय प्रवासियों के योगदान को भी बड़े ही गर्व और प्रेम के साथ याद किया। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में प्रवासी भारतीयों से विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की प्राप्ति में योगदान देने का आग्रह किया। प्रवासी भारतीय दिवस 2025 के समापन सत्र की अध्यक्षता भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने की। अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने प्रवासी भारतीयों की अदम्य भावना की सराहना की। उन्होंने महिलाओं, छात्रों और युवाओं द्वारा किए गए योगदान का विशेष उल्लेख किया, जिन्हें उन्होंने प्रवासी भारतीयों की भावी पीढ़ियों के लिए पथप्रदर्शक बताया। प्रवासी भारतीय दिवस 2025 का समापन उस्ताद श्री अभय रुस्तम सोपोरी के भावपूर्ण संतूर संगीत कार्यक्रम के साथ हुआ। ■■

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का वर्चस्व

प्रस्तुति : द साइलेंट स्ट्रोक

विश्व हिंदी दिवस, 10 जनवरी को मनाया जाता है, यह दिन हिंदी भाषा की बढ़ती वैश्विक पहचान और सम्मान को दर्शाने के लिए समर्पित है। इस दिन का आयोजन दुनिया भर में हिंदी प्रेमियों और भाषा के प्रवर्तकों द्वारा किया जाता है, जिससे हिंदी के महत्व को स्वीकार करने और प्रचारित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर बन जाता है। 10 जनवरी 2006 को पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने पहली बार विश्व हिंदी दिवस मनाया था, ताकि हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रतिष्ठा मिल सके। तब से हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। विश्व हिंदी दिवस एक थीम के साथ मनाया जाता है। वर्ष 2003 में विश्व हिंदी दिवस की थीम थी- हिंदी को जनमत की भाषा बनाना, बगैर उनकी मातृभाषा के महत्व को भूले। वर्ष 2024 में विश्व हिंदी दिवस का विषय 'एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज' रखा गया है।

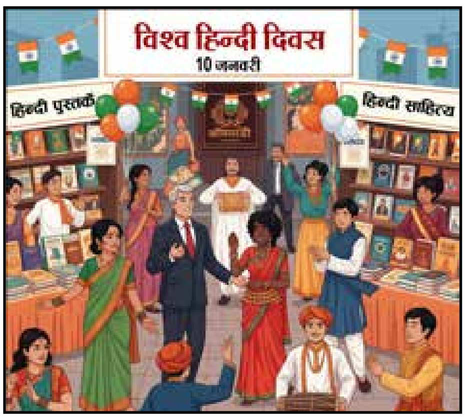

हिंदी दिवस और विश्व हिंदी दिवस

भारत में दो बार हिंदी दिवस मनाया जाता है। एक राष्ट्रीय हिंदी दिवस, जो कि हर साल 14 सितंबर को मनाते हैं और दूसरा विश्व हिंदी दिवस जो कि 10 जनवरी को मनाया जाता है। एक राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है और दूसरा वैश्विक स्तर पर भारत समेत कई देशों में मनाते हैं। अक्सर लोगों को हिंदी दिवस और विश्व हिंदी दिवस को लेकर यह भ्रम रहता है कि दोनों एक ही हैं। विश्व हिंदी दिवस का उद्देश्य हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित करना है और राष्ट्रीय हिंदी दिवस का उद्देश्य भारत को राजभाषा के रूप में सशक्त करना है। विश्व हिंदी दिवस मुख्य रूप से हिंदी भाषा के प्रचार पर केंद्रित है तो वहीं हिंदी दिवस विशेष रूप से भारत में हिंदी की मान्यता पर केंद्रित है।

विश्व हिंदी दिवस का ऐतिहासिक महत्व

हिंदी भाषा का इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन भारत के साहित्य, कला, और संस्कृति में हिंदी का अभिन्न योगदान रहा है। हिंदी भारतीय समाज की आत्मा है, जो हमारे संस्कारों और परंपराओं को प्रतिबिंबित करती है। हिंदी को 10 जनवरी, 1949 को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। इसके बाद से हर साल इस दिन को हिंदी के प्रचार और प्रसार के लिए मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य सिर्फ हिंदी भाषा के महत्व को स्वीकारना नहीं, बल्कि इसे और सशक्त बनाना है। 10 जनवरी 1949 वह दिन था जब हिंदी को भारतीय संविधान में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। तब से लेकर अब तक, हिंदी का विकास और उसका प्रभाव निरंतर बढ़ा है।

भारत में लगभग 44 प्रतिशत लोग हिंदी बोलते हैं और यह संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। आज हिंदी एक मात्र भारतीय भाषा नहीं, बल्कि यह दुनिया की सबसे बड़ी भाषाओं में से एक बन चुकी है। इसे करीब 50 करोड़ लोग बोलते हैं, और इसकी संख्या लगातार बढ़ रही है। आजकल हिंदी का प्रभाव वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है, और विभिन्न देशों में हिंदी सीखने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हो रही है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हिंदी भाषा अब न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लोगों के बीच संवाद का माध्यम बन गई है। हिंदी के प्रभाव का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह भाषा न केवल भारत में, बल्कि नेपाल, बांगलादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका और यहां तक कि अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में भी बोली जाती है। हिंदी को हर स्थान पर एक पहचान मिल रही है और यह एक वैश्विक भाषा के रूप में उभर रही है।

■■

रंगीला मतवाला महोत्सव होली

अशोक वाधवानी
गांधी नगर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

आम भारतीयों की बात करें तो उन्हें अत्यधिक आनंद का अनुभव होली और स्वातंत्र्य दिवस पर होता है। देश के अधिकतर त्यौहारों में स्त्रियों की सहभागिता ही ज़्यादा होती है। मौज-मस्ती, मज़ाक-मनोरंजन वाले इस त्यौहार को मर्दाना महोत्सव भी कह सकते हैं। होली के दिन, दुःख-दर्द भुलाकर, क्या छोटे और क्या बड़े, सभी मिल-जुलकर झूमते-नाचते गाते हैं। फिज़ाओं में रंग इस तरह घुल-मिल जाते हैं कि सारा आकाश सतरंगी लगने लगता है। प्रेम की पिचकारी से दुश्मनों को भी दोस्ती के पक्के रंगों में रंगकर, भेदभाव भुलाकर, गले लगाते हैं। प्यार, लाड़, उमंग, उत्साह , उल्लास और उर्जा का सुंदर संगम मिलता है होली में।

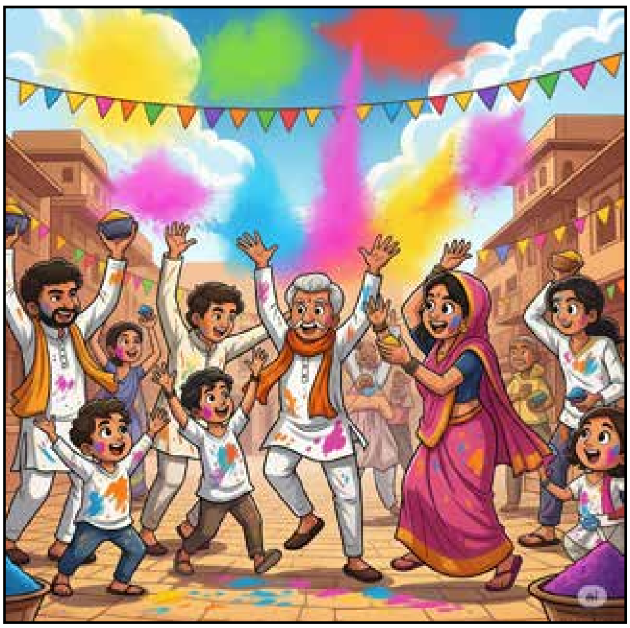

हुल्लडबाजी न हो तो फिर होली बेमानी, बदरंग लगने लगती है। बचपन की कई यादें इससे जुड़ी हुई हैं। उस ज़माने में किसी चौराहे पर बड़ा ड्रम या कोई और पात्र रखा जाता है। पानी और रंगों से भरा जाता। आने-जाने वाले हर परीचित-अपरिचित को बहला-फुसलाकर उस में भिगोया जाता था। कुछ नाराज़ होते थे, कई गुस्से से भड़क उठते थे। समझाकर उन्हें शांत किया जाता। अधिकतर लोग भीगने के बावजूद हमारा साथ देते थे। इसके अलावा हम बच्चे आलू को काटकर दो टुकड़े करते थे। फिर उसपर उल्टे अक्षरों में एक पर 420 और दूसरे पर गधा अंकित करते। उसके बाद पक्का रंग भरकर शिकार की प्रतीक्षा करते। जिन्होंने सफेद या हल्के रंगों के कपड़े पहने हों, उन्हें हम बातों में उलझाकर पीछे से गधा या 420 का ठप्पा लगा देते। पीछे से उनके कपड़ों पर अंकित ठप्पा देखकर लोग हँसते, मुस्कराते थे। तब जाकर उन्हें असलियत का पता चलता था।

होली को जिंदादिली से भी जोड़कर देखा जा सकता है। किसी के गालों पर गुलाल मलते गाली दी जाए तो भी माफ़ी मिलती है। ननद-भौजाई, देवर-भाभी, जीजा-साली सभी को छूट होती है एक-दूसरे पर छींटाकशी करने की। देशभर में कवि सम्मेलनों का भी आयोजन होता है। कुछ टी वी चैनलों पर भी इनके कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, कला आदि क्षेत्रों के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों को निशाना बनाकर करारा कटाक्ष, व्यंग किया जाता है। यहां तक कि कविगण ख़ुद को भी टार्गेट करने से नहीं हिचकिचाते हैं।

होली का दिन हो और खाने-पीने की बातों का उल्लेख न हो तो होली बेरंग लगेगी। भांग की नशाखोरी होली का अभिन्न अंग

है। भांग की चाय, मिठाईयों, पकौड़ों, पानी आदि में मिलाकर लोगों को खिलाने-पिलाने की परंपरा अब थोड़ी कम हो गई है। भांग के रंग में रंगा व्यक्ति जब अजब-गज़ब हरकतें करने लगता है तो सबकी हंसी छूटती है। देश के विभिन्न हिस्सों में होली मनाने के ढ़ंग लगभग एक जैसे होते हैं। देश की कुछ जगहों पर आज भी नए और सफेद कपड़े पहनकर होली खेलने का चलन है। ऐसे लोगों को कपड़े ख़राब होने की भी चिंता नहीं होती। वैसे देशभर में पुराने और रंगीन कपड़ों में ही होली खेलने वालों की संख्या अधिक होती है।

वर्षों पूर्व होली के इतने गहरे, पक्के होते थे कि उन्हें उतारने में हमारे छक्के छूट जाते थे। आजकल कुछ जागरूक लोग रासायनिक रंगों की जगह इको फ्रेंडली रंगों का उपयोग करने लगे हैं, जोकि स्वागत योग्य है। फिर भी नकली और हानिकारक रंगों की भरमार से बाज़ार सजे-धजे रहते हैं। इनसे बचना जरूरी है। मकानों से पानी भरे गुबारों को फेंकना, राहगीरों पर या बसों में बैठे यात्रियों पर रंगों से भरे फुग्गे फेंकना, असली होली नहीं कहलाती है। दरअसल होली रंगों, उमंगों, तरंगों का त्यौहार है। मेल-मिलाप का मतवाला महोत्सव है। किसी को कष्ट पहुंचे तो बदरंग में बदलती है होली। इसका निर्मल आनंद लेना चाहिए। बुरा मत मानो, होली है।

■■

सेरेब्रल पाल्सी : जटिल विकलांगता

आकांक्षा शर्मा

आत्महत्या रोकथाम के लिए गेटकीपर प्रशिक्षक

दुनिया भर में 1 करोड़ 70 लाख से अधिक लोग सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित हैं। यह एक जटिल विकलांगता (Complicated Disability) है। Cerebral Palsy में Cerebral का अर्थ मस्तिष्क से संबंधित होता है और Palsy का अर्थ मांसपेशियों की कमजोरी या कांपना (Body Trembling) होता है। इसमें ब्रेन पैरालिसिस की संभावना भी बढ़ जाती है। सेरेब्रल पाल्सी (Cerebral Palsy) एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति है, जो मांसपेशियों की टोन, पोस्चर और मूवमेंट डिसऑर्डर के साथ सामने आता है। यह भ्रूण के विकास के दौरान मस्तिष्क को हुई क्षति या किसी अन्य विकासात्मक विकलांगता का परिणाम है। इससे मस्तिष्क का विकास प्रभावित हो जाता है।

विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस की जड़ें वर्ष 1810 में मिलती हैं जब सेरेब्रल पाल्सी के पहले शोधकर्ता डॉ. विलियम जॉन लिटिल का जन्म हुआ था। वर्ष 1853 में डॉ. जॉन लिटिल ने सेरेब्रल पाल्सी को पहचाना और उसका अध्ययन किया। वर्ष 1861 के आसपास, उन्होंने लंदन की ऑब्स्टेट्रिकल सोसाइटी में अपना शोध प्रस्तुत किया और उन्होंने सेरेब्रल पाल्सी की पहली परिभाषा प्रदान की। उन्होंने कहा कि सेरेब्रल पाल्सी जन्म के समय कठिन प्रसव के कारण हो सकती है। डॉ. सिगमंड फ्रायड पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा था कि सेरेब्रल पाल्सी जन्म से पहले असामान्य विकास के कारण हो सकता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के रोग नियंत्रण केंद्र ने अनुमान लगाया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में सेरेब्रल पाल्सी की जीवनभर की लागत लगभग दस लाख अमेरिकी डॉलर होगी। चिकित्सा जगत को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि सेरेब्रल पाल्सी की सामाजिक लागत चिकित्सा लागत से कहीं अधिक है, जिसका अर्थ है कि हमें सामाजिक और प्रशासनिक स्तर पर इन व्यक्तियों के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। सामाजिक लागत से तात्पर्य देखभाल, आवास, शिक्षा, रोजगार और मनोरंजन व्यय से है। प्राथमिक स्तर पर सेरेब्रल पाल्सी को रोकने के साथ-साथ माध्यमिक स्तर पर परिणामों को कम करने और तृतीयक स्तर पर जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए दुनिया भर में बहुत अधिक शोध पहल की जा रही हैं ताकि विकलांगता के आर्थिक प्रभाव को कम किया जा सके। लापरवाही के कारण सेरेब्रल पाल्सी और इसके परिणामों को रोकने पर खर्च किया गया पैसा बड़े पैमाने पर समाज के संचयी लाभों के लिए बचाया गया पैसा है।

यह रोग क्या है

हमारा मस्तिष्क ही संपूर्ण शरीर को संचालित करता है। यदि इसमें कुछ गड़बड़ी आ जाए, तो यह पूरे जीवन को प्रभावित कर देता है। खासकर गर्भावस्था के दौरान भ्रूण के मस्तिष्क को हुई किसी भी तरह की क्षति जोखिम बढ़ा देती है। ऐसा ही एक मस्तिष्क रोग है सेरेब्रल पाल्सी। सेरेब्रल पाल्सी एक ऐसी बीमारी या फिर बीमारियों का समूह है, जिसमें मरीज की मांसपेशियों पर उसका कंट्रोल नहीं रहता है। आमतौर पर बच्चों में ये बीमारी अधिक देखी जाती है। ऐसी स्थिति में बच्चा हिलने-डुलने या फिर किसी भी प्रकार की मूवमेंट करने में असमर्थ हो जाता है। यह एक लाइलाज और दुर्लभ तरह की बीमारी है, जिससे मरीज को जिंदगीभर लड़ना पड़ता है। ऐसे में बच्चों को कुछ बोलने या फिर निगलने तक में कठिनाई हो सकती है।

सेरेब्रल पाल्सी एक शारीरिक विकलांगता है, जो मूवमेंट और पोश्चर को प्रभावित करती है। सेरेब्रल पाल्सी वाले कई लोगों को दृष्टि, सुनने, बोलने-बातचीत करने और मूवमेंट

संबंधित दिक्कतें हो जाती हैं। इसका प्रभाव एक हाथ की कमजोरी से लेकर स्वैच्छिक गतिविधि की कमी तक हो सकता है। यह बचपन की विकलांगता का एक मुख्य कारण है। लक्षण और प्रभाव व्यापक रूप से भिन्न हो सकते हैं। इसलिए उपचार भी भिन्न होते हैं।

सेरेब्रल पाल्सी के लक्षण

इस बीमारी में कई अलग-अलग लक्षण देखने को मिलते हैं जिसमें- दृष्टि, बोलने और सीखने की समस्याएं, बौद्धिक विकलांगता, मिर्गी आना (Speech and Learning problems, Intellectual Disability, Epilepsy) और स्वैच्छिक मांसपेशियों की गतिविधियों में आंशिक या पूर्ण नुकसान होना शामिल है। सेरेब्रल पाल्सी मस्तिष्क क्षति की गंभीरता, स्थान और सीमा के आधार पर बच्चे के विकास को प्रभावित कर सकती है। जन्म के दौरान लगने वाली चोटें जो सेरेब्रल पाल्सी का कारण बनती हैं, बच्चे के संवेदी कौशल, भाषा कौशल और सामाजिक/भावनात्मक विकास, दृष्टि और श्रवण में भी समस्याएं पैदा कर सकती हैं।

सेरेब्रल पाल्सी कई शारीरिक और तंत्रिका संबंधित दोष पैदा करती है इन बच्चों में सामान्य लक्षण जो दिखाई देते हैं। आमतौर पर लार टपकते रहना, फ्लॉपी मांसपेशी टोन, अंगों में झटका लगना। गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्या, समन्वय और संतुलन का अभाव निगलने या चूसने में समस्या शरीर के हिलने-डुलने में दिक्कत होना आदि शारीरिक लक्षण होते हैं। मस्तिष्क में फ्लूइड इंबैलेंस, व्यवहार संबंधित समस्याएं मोटर स्किल डेवलपमेंट में देरी जैसे मेंटल हेल्थ प्रॉब्लम हो सकते हैं। गंभीर। सेरेब्रल पाल्सी रोग के बच्चों को 24×7 सहायता की आवश्यकता होती है। यह संक्रमक नहीं होती हैं और न ही प्रोग्रेसिव होती हैं हालांकि यह लक्षण सभी बच्चों में अलग-अलग हो सकता है, और लक्षणों व स्थिति की गंभीरता के आधार पर ही यह निर्धारित किया जा सकता है, कि किसी बच्चे को किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता होती है।

सेरेब्रल पाल्सी के प्रकार

सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित हर 4 में से 1 बच्चा बात नहीं कर सकता, हर 4 में से 1 बच्चा चल नहीं सकता, 4 में से 1 बच्चे को बौद्धिक विकलांगता की समस्या होती है। और सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित हर दूसरे बच्चे में मिर्गी की समस्या भी देखने को मिलती है। गतिविधि से जुड़े विकार के आधार पर, सेरेब्रल पाल्सी 4 तरह की होती है, जो इस प्रकार है–

- स्पास्टिक सीपी- सेरेब्रल पाल्सी के सभी मामलों में से लगभग 80 प्रतिशत स्पास्टिक सीपी के मामले होते हैं। मस्तिष्क में मौजूद मोटर कॉर्टेक्स (Motor Cortex) में नुकसान के कारण होते हैं। मरीज की मांसपेशियां सख्त हो जाती हैं और मसल टोन भी बढ़ जाता है। स्पास्टिक सेरेब्रल पाल्सी 3 तरह का हो सकता है।
- डिस्काइनेटिक सीपी- यह 6 प्रतिशत से अधिक मामलों में होता है और इस समस्या में मरीज को बैठने, चलने या शरीर की गतिविधियों को नियंत्रित करने में असमर्थता महसूस होती है। मस्तिष्क में मौजूद बेजल गैंगलिया को नुकसान के कारण यह स्थिति होती है।
- अटैक्सिक सीपी- लगभग 5 प्रतिशत मामलों में यह समस्या होती है और मरीज में संतुलन

बनाए रखने और चलने-फिरने में समस्या देखने को मिलती है। यह मस्तिष्क के सेरिबेलम हिस्से को नुकसान के कारण होता है।

- मिश्रित प्रकार का सीपी- बहुत सारे रोगियों में एक से अधिक प्रकार का सेरेब्रल पाल्सी हो सकता है। इनमें सबसे कॉमन स्पास्टिक और डिस्काइनेटिक (Dyskinetic) है।

सेरेब्रल पाल्सी का कारण

सेरेब्रल पाल्सी हमारे देश में लगभग 3/1000 जीवित जन्मों को प्रभावित करने वाली सबसे आम बचपन की हानि है। यह एक न्यूरो विकासात्मक विकार है जिसका अर्थ है गर्भावस्था के शुरुआती महीनों के दौरान, जन्म के दौरान या जन्म के तुरंत बाद या बचपन में रक्त की आपूर्ति में कमी, ऑक्सीजन, ग्लूकोज या कैल्शियम की आपूर्ति में कमी, संक्रमण, आघात के कारण मस्तिष्क के विकास में बाधा उत्पन्न होने वाली स्थिति। बहुत कम प्रतिशत मामले आनुवंशिक कारणों के साथ-साथ तनाव (शारीरिक और मानसिक दोनों) के कारण होते हैं। ज्यादातर मामले कई कारणों से होते हैं जो एक साथ घटनाओं का एक समूह बनाते हैं जिसके परिणामस्वरुप गर्भावस्था के 5 वें महीने से जीवन के पहले दो वर्षों तक विकास के तीव्र और कमजोर चरण के दौरान मस्तिष्क कोशिका की मृत्यु हो जाती है।

सेरेब्रल पाल्सी के मुख्य कारण हो सकते हैं भ्रूण या शिशु के मस्तिष्क में क्षति पहुंचने के कारण,सिर पर चोट लगने के कारण, मस्तिष्क में सही से रक्त प्रवाह ना होने के कारण, बैक्टीरियल एवं वायरल संक्रमण मेनिनजाइटिस या एन्सेफेलाइटिस, जो दिमागी बुखार का ही प्रकार है। जन्म के समय ब्रेन में आक्सीजन का न पहुंचना, गर्भावस्था में नशीली दावों का प्रयोग करना एवं बिना डॉक्टरी परामर्श के दवाओं का प्रयोग करना। सीरेब्रल पॉल्सी (Cerebral Palsy) निम्नलिखित कारणों के कारण हो सकती है:

- गर्भावस्था में संक्रामक या रक्तस्राव (Infections or Hemorrhages during Pregnancy): मां की गर्भावस्था के दौरान होने वाली संक्रामक बीमारियां या रक्तस्राव (हेमोरेज) सीरेब्रल पॉल्सी का कारण बन सकते हैं।
- जन्म के समय असामान्य स्थिति (Birth Complications) : जन्म के समय होने वाली असामान्य स्थितियां जैसे लंबा प्रसव (Prolonged labor), जल्दी जन्म (Premature birth), या जन्म के दौरान अक्सीजन की कमी (Hypoxia) भी सेरेब्रल पाल्सी के कारण बन सकती हैं।
- पोषण की कमी (Nutritional Deficiencies): गर्भावस्था के दौरान या शिशु के जन्म के बाद कम पोषण (Malnutrition) भी सेरेब्रल पाल्सी का कारण बन सकता है।
- गर्भधारण की समस्याएं (Prenatal Problems): गर्भधारण के दौरान होने वाली कुछ समस्याएं जैसे गर्भाशय की संक्रमण, अनुवंशिक विकार, विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आना (Exposure to toxic substances) भी सेरेब्रल पाल्सी के उत्पन्न होने का कारण बन सकती हैं।
- अनुवंशिकता (Genetics): कुछ मामलों में, सेरेब्रल पाल्सी जीनेटिक म्यूटेशन (Genetic mutations) के कारण उत्पन्न हो सकती है।

सेरेब्रल पाल्सी का दुष्प्रभाव

यह एक मस्तिष्क विकार है, इसलिए यह मस्तिष्क के कार्यों के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। यद्यपि यह मुख्य रूप से गतिशीलता को प्रभावित करता है, यह दृष्टि, वाणी, संवेदना, मूत्राशय पर नियंत्रण, श्रवण, सीखने और व्यवहार को ख़राब कर सकता है। कुछ बच्चों को अतिरिक्त दौरे भी पड़ सकते हैं। असामान्य बायोमैकेनिक्स के कारण, प्रारंभिक मस्तिष्क घाव में वृद्धि नहीं होने के बावजूद उनमें प्रगतिशील मांसपेशियों और हड्डियों के घाव भी विकसित हो सकते हैं। चूँकि यह एक विकास संबंधी हानि है जो कार्यात्मक सीमाओं का कारण बनती है न कि कोई बीमारी, बीमारी और इलाज के पारंपरिक स्वास्थ्य मॉडल में कोई उपचारात्मक समाधान नहीं हैं, लेकिन चिकित्सा, चिकित्सा, मनोविज्ञान, विशेष क्षेत्रों के बहु या ट्रांस अनुशासनात्मक पेशेवरों द्वारा शीघ्र निदान और हस्तक्षेप किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय सेरेब्रल पाल्सी दिवस

हैरी जेनिंग्स द्वारा वर्ष 1932 में पहली आधुनिक

फोल्डिंग व्हीलचेयर के आविष्कार और 1948 में यूनाइटेड सेरेब्रल पाल्सी एसोसिएशन के गठन जैसे मील के पत्थर ने समझ, निदान और समर्थन का मार्ग प्रशस्त किया। वर्ष 2012 में, सेरेब्रल पाल्सी एलायंस ने आधिकारिक तौर पर 6 अक्टूबर को विश्व स्तर पर लोगों को एकजुट करने, जागरूकता और समान अवसरों को बढ़ावा देने के दिन के रूप में नामित किया। एक छोटे से प्रयास "एक मिनट में मेरी दुनिया बदलो" के साथ वर्ल्ड सेरेब्रल पाल्सी एलायंस और यूनाइटेड सेरेब्रल पाल्सी ने 2012 में विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस बनाया। विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस, 2023 की थीम "टुगेदर स्ट्रॉन्गर" थीं । वर्ष 2024 में, विश्व सीपी दिवस के लिए वैश्विक अभियान का विषय UniquelyCP है। CP समुदाय का हर सदस्य अद्वितीय है, जिसके जुनून, लक्ष्य और पहचान सिर्फ़ विकलांगता वाले व्यक्ति से कहीं ज़्यादा हैं वर्ल्ड सेरेब्रल पाल्सी डे का उद्देश्य एक ऐसा भविष्य सुनिश्चित करना है, जिसमें सेरेब्रल पाल्सी वाले बच्चों और वयस्कों को समाज में सामान्य व्यक्ति की तरह समान अधिकार, पहुंच और अवसर मिल सके। विश्व सेरेब्रल पाल्सी दिवस के प्रति अपना समर्थन दिखाने के लिए हरे रंग के कपड़े भी पहने जाते हैं।

विभिन्न चिकित्सा और संबंधित पुनर्वास क्षेत्रों के पेशेवरों ने दिसंबर 2005 में "द इंडियन एकेडमी ऑफ सेरेब्रल पाल्सी" का गठन किया है और अपने सदस्यों की शैक्षणिक और सेवा विशेषज्ञता में सुधार के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। सामुदायिक जागरूकता में सुधार लाने और सामाजिक वकालत को सुविधाजनक बनाने के लिए, IACP ने अपने प्रथम संस्थापक अध्यक्ष स्वर्गीय डॉ. पेरिन.के. के सम्मान में इस वर्ष से 3 अक्टूबर को "राष्ट्रीय सेरेब्रल पाल्सी दिवस" के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। मुल्लाफिरोज़ जिन्होंने देश में सेरेब्रल पाल्सी की बहु-विषयक देखभाल की शुरुआत की।

सीपी का निदान और उपचार

सबसे आम उपचार विकल्पों में थेरेपी, सर्जरी और दवाएं शामिल हैं। हालाँकि, सेरेब्रल पाल्सी का कोई स्थायी इलाज नहीं है। उपचार बस बच्चों को अपेक्षाकृत सामान्य दिनचर्या में मदद करता है। सेरेब्रल पाल्सी को एकदम ठीक नहीं किया जा सकता है। लक्षण और प्रभाव का उपचार किया जा सकता है। इसका उपचार लक्षणों की गंभीरता पर भी निर्भर करता है। दवाएं एपिलेप्सी, ऐंठन और अन्य प्रभावों का इलाज कर सकती हैं। सर्जरी मांसपेशियों की ऐंठन को कम करने में मदद कर सकते हैं। सर्जरी जोड़ों और रीढ़ की समस्याओं को भी ठीक कर सकती है।

सेरेब्रल पाल्सी के रोगियों को जीवनभर स्वास्थ्य देखभाल की एक प्रणाली की आवश्यकता होती है। उपचार के सभी तौर-तरीके मस्तिष्क कोशिकाओं की कनेक्टिविटी बढ़ाने की क्षमता पर निर्भर करते हैं उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में सरकारी और सामाजिक कार्रवाई के सभी स्तरों पर समावेशी नीतियों की भी आवश्यकता है। शिक्षा, सहायक प्रौद्योगिकी और मनोसामाजिक विज्ञान, सेरेब्रल पाल्सी वाले व्यक्तियों और उनके परिवारों की सीमाएं कम हो सकती हैं और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। बच्चों का विशेषज्ञ चिकित्सक से इलाज कराने पर 90 प्रतिशततक सुधार की गुंजाइश होती हैं न्यूरो डेवलपमेंट, पोजिशनिंग पोजिशनिंग, एडवांस्ड फिजियोथैरेपी और सर्जरी के जरिए उपचार किया जा सकता है। इसके अलावा सेंसरी इंटीग्रेसन और स्टिमुलेशन से भी सी.पी के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

लक्षण प्रकट होने में समय लगता है और इसलिए डॉक्टर केवल तभी स्थिति का निदान करने में सक्षम हो सकता है जब शिशु कुछ महीने या एक वर्ष का हो। निदान के लिए कुछ नियमित परीक्षणों में शामिल हैं- मस्तिष्क स्कैन, ईईजी, रक्त परीक्षण, मूत्र विश्लेषण, त्वचा परीक्षण। सेरेब्रल पाल्सी वाले 50-60 प्रतिशत बच्चों में सामान्य बुद्धि होती है और वे सामान्य स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और अपनी गतिशीलता सीमाओं के बावजूद किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह व्यापक करियर बना सकते हैं और समाज के योगदानकर्ता सदस्य बन सकते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब सामाजिक भेदभाव, असमानताओं और व्यवहार संबंधी बाधाओं को कम किया जाए।

■■

राजा रघुवंशी हत्याकांड

हनीमून बना मौत का जाल, पत्नी पर हत्या का आरोप

प्रस्तुति : द साइलेंट स्ट्रोक

इंदौर के राजा रघुवंशी हत्याकांड में पुलिस को चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं, जिसमें हनीमून पर गए पति की हत्या की मास्टरमाइंड पत्नी सोनम रघुवंशी को बताया जा रहा है। मेघालय पुलिस ने इस मामले में सोनम सहित चार लोगों को गिरफ्तार किया है, जबकि सोनम का कथित प्रेमी राज कुशवाहा अभी भी फरार है।

मामले का घटनाक्रम

- 23 मई: इंदौर के राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी मेघालय में हनीमून के दौरान लापता हो गए।
- 2 जून: ईस्ट खासी हिल्स में वेइसाडोंग फॉल्स के पास लगभग 150 फीट गहरी खाई में राजा का शव मिला।
- गिरफ्तारी: सोनम रघुवंशी ने उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में आत्मसमर्पण किया और उसे मेघालय पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

चौंकाने वाले खुलासे

पुलिस जांच में सामने आया है कि राजा की हत्या की गई थी और सोनम रघुवंशी ने अपने पति की हत्या के लिए भाड़े के हत्यारों को काम पर रखा था।

पत्नी की कथित संलिप्तता: सूत्रों के अनुसार, राजा की पत्नी सोनम रघुवंशी की मौजूदगी में ही उसकी बेरहमी से हत्या की गई। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि वारदात के दौरान सोनम ने कथित तौर पर हमलावरों से "उसे मार डालो!" जैसे शब्द कहे थे।

हमले का तरीका: जांच से पता चला है कि राजा पर दो दिशाओं से हमला किया गया था – एक वार सामने से किया गया, जबकि दूसरा और अधिक घातक वार पीछे से सिर पर किया गया। विशाल चौहान नामक व्यक्ति ने कथित तौर पर पीछे से निर्णायक वार किया।

सोनम की कथित सक्रिय भागीदारी: पुलिस द्वारा जुटाए गए साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि सोनम वारदात से पहले ही हमलावरों के संपर्क में थी और उसने न तो अपने पति को बचाने का कोई प्रयास किया और न ही घटना के

बाद मदद के लिए कोई शोर मचाया।

लूट का झांसा: हत्यारों का इरादा लूट का एक झूठा परिदृश्य तैयार करना था। राजा की एक्टिवा स्कूटर घटनास्थल से छीन ली गई थी, जिसे पुलिस ने बरामद कर लिया है।

सुनियोजित निगरानी: एक अन्य आरोपी आकाश राजपूत कथित तौर पर घटना स्थल से कुछ दूरी पर बाहर पहरा दे रहा था। पुलिस ने उसकी मोटरसाइकिल भी बरामद कर ली है।

सोनम की भयावह योजना: पुलिस सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि सोनम ने कथित तौर पर अपने प्रेमी राज कुशवाहा से कहा था, "हम राजा को खत्म कर देंगे, फिर एक झूठी लूट का मामला दर्ज कराएंगे। उसके बाद, मैं विधवा बन जाऊंगी और मेरे पिता भी हमारी शादी के लिए सहमत हो जाएंगे।" यह बयान सीधे तौर पर सोनम द्वारा अपने कथित प्रेमी से शादी करने के लिए राजा को रास्ते से हटाने की एक पूर्व नियोजित और क्रूर हत्या की साजिश की ओर इशारा करता है।

मामले से जुड़े प्रमुख लोग

- राजा रघुवंशी: मृतक पति।
- सोनम रघुवंशी: मृतक की पत्नी और कथित मास्टरमाइंड।
- राज कुशवाहा: सोनम का कथित प्रेमी और फरार आरोपी।
- विशाल चौहान: कथित तौर पर राजा पर पीछे से घातक वार करने वाला आरोपी।
- आकाश राजपूत: घटना स्थल पर निगरानी रखने वाला आरोपी।
- अल्बर्ट पडे: पर्यटक गाइड, जिसके बयान ने मामले में अहम मोड़ ला दिया।

आगे की जांच और मांगें

मेघालय पुलिस इस मामले की गहनता से जांच कर रही है और फरार आरोपी राज कुशवाहा की तलाश में जुटी हुई है। हालांकि, सोनम के परिवार और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस मामले की सीबीआई जांच की मांग की है, जबकि मेघालय के मुख्यमंत्री कॉनराड संगमा ने अपनी पुलिस की त्वरित कार्रवाई की सराहना की है।

पहले खबरें थीं कि वह फरार है, लेकिन अब नवीनतम जानकारी के अनुसार, सोनम रघुवंशी और उसके कथित प्रेमी राज कुशवाहा सहित सभी पांचों मुख्य आरोपी (विशाल चौहान, आकाश राजपूत और आनंद कुर्मी) हिरासत में हैं। उन्हें मेघालय की एक स्थानीय अदालत ने 13 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। इसके अलावा, इस मामले में कुछ और गिरफ्तारियां भी हुई हैं, जैसे कि लोकेंद्र सिंह तोमर और शिलम जेम्स, जो सबूतों को नष्ट करने या छिपाने में शामिल पाए गए हैं। कुल मिलाकर, इस मामले में अब तक 7 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

इस हत्याकांड ने पूरे देश को झकझोर दिया, और जैसे-जैसे नए खुलासे हो रहे हैं, कहानी और भी जटिल होती जा रही है। क्या इस मामले में सीबीआई जांच की मांग मानी जाएगी?

■■

रिश्तो का ताना-बाना

डॉ. सरिता सिंह
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

पहले जन्मदिन पर क्षितिज तोतली जबान से.. शंख बजते ही बार-बार दोनों हाथ उठाकर जय भोलेनाथ कर रहा था। मोहन और देवकी ने पंडित जी के पैर छुए तो वह भी पंडित जी के पैर छूने लगा मोहन और देवकी ने आगे बढ़कर अपने सभी बड़ों-बुजुर्गों के पैर छुए साथ-साथ में क्षितिज भी जा जाकर सबके पैर छू रहा था। पंडित जी यह सब देखकर मोहित हुए जा रहे थे। जाते-जाते उन्होंने क्षितिज को आशीर्वाद दिया और कहा कि पूत के पांव पालने में एक दिन यह बहुत बड़ा आदमी बनेगा और साथ-ही-साथ बहुत महान। इसकी ख्याति दूर-दूर तक जाएंगी। लेकिन एक समस्या है। अच्छा सभी लोग खुश रहे प्रसन्न मंगल रहे.... हम फिर आते हैं। यह कहकर पंडित जी अपने घर को प्रस्थान कर गए।

धीरे-धीरे समय बीतता चला गया। जन्मदिन का पांचवा वर्ष आ गया बड़े धूमधाम से जन्मदिन मनाया गया। अब उसका एडमिशन भी हो चुका था। खेलकूद में और कई प्रकार की गतिविधियों में खूब सारे मेडल मिले। यह तो अभी पहला पायदान था। जन्मदिन का पांचवा वर्ष सब बहुत खुश थे। पंडित जी जब घर पर आए तो उन्होंने क्षितिज के सिर पर हाथ रखते हुए कहा कि– "यथा नाम तथा गुण"एक दिन दुनिया की क्षितिज पर राज करेगा... बस एक समस्या है... फिर सब लोग खाने-पीने में व्यस्त हो गए लेकिन माँ के दिमाग से वह बात जा ही नहीं रही थी कि आखिर पंडित जी बार-बार समस्या वाली बात क्यों कहते हैं? पहली बार जब उन्होंने की तो लगा कि शायद मजाक है... जन्मदिन के बाद जब सब लोग चले गए तो अगले दिन पंडित जी को फोन किया और उनसे घर पर बुलाकर पूछा कि आप बार-बार यह समस्या की बात क्यों कहते हैं और इस समस्या का समाधान कैसे निकलेगा। पंडित जी ने बताया कि हर 5 वर्ष में पूजा करवाते रहिये।

पंडित जी ने बताया कि इसकी कुंडली में लिखा हुआ है कि आपकी माँ से आपकी नहीं बनेगी और आपके जीवन में मातृ पक्ष से दुख मिलेगा। यह बात देवकी को बहुत बुरी लगी। क्षितिज बहुत कठिनाइयों से पैदा हुआ था लोगों को मालूम भी नहीं कि वह रिस्क प्रेगनेंसी से पैदा हुआ है। डॉक्टर ने जवाब दे दिया था... माँ बच्चा में से एक बचेगा। देवकी ने कहा की कोई बात नहीं मुझे एक बार माँ बनने है। मैं कोई भी रिस्क लेने को तैयार हूं जिंदगी एक बार मिली है मैं... बांझ बनाकर जीवन नहीं जीना चाहती। ईश्वर का चमत्कार कहिए कि दोनों ही स्वस्थ हुए। इसीलिए वह क्षितिज को एक छींक भी नहीं आने देती थी। पंडित जी ने यह कैसे कह दिया माँ उसकी प्रगति में बाधक बन सकती है?

उम्र के 10 वे साल में जब वह कक्षा 5 में था तो उसने खेल में अपना नाम लिखवा दिया। वह रेस में भाग लेना चाहता था। माँ को डर था कि कहीं चोट न लग जाए। चुपचाप जाकर माँ ने उसका खेल से नाम कटवा दिया। 14 साल का हुआ तो पहली बार बच्चों के साथ एक एजुकेशनल टूर जा रहा था, जिसमें बच्चे और टीचर जा रहे थे। लेकिन माँ

उससे इतना प्रेम करती थी कि उसने उसे टूर के लिए मना कर दिया। क्षितिज को बहुत गुस्सा आया लेकिन फिर भी वह अपना सामान पैक करके साथ में चली गई। सब बच्चे उसे पर हंसने लगे। कुछ दिन बाद उसका स्कूल में मन नहीं लगा। उसे स्कूल से निकालकर दूसरे स्कूल में दाखिला करवा दिया। माँ चाहती थी वह पढ़ाई करके डॉक्टर बने लेकिन क्षितिज बीसीए करना चाहता था।

माँ के कहने पर जबरदस्ती एक बार मेडिकल परीक्षा, मैं बैठा और परीक्षा पास कर ली। लेकिन उत्तर प्रदेश में खाली होने के कारण बाहर की सीट मिल रही थी। बड़ी मुश्किल से न-नुकर करने के बाद दिल्ली पढ़ने चला गया। माँ को यह चिंता खाए जा रही थी कब वह वापस आएगा। वह पढ़ाई तो पूरी करके आ गया लेकिन फिर इंटर्नशिप के लिए बाहर गया और इसलिए अमेरिका जाने की इच्छा थी कि वहां पर जाकर मेडिकल में रिसर्च करें और जाकर वहीं सेटल हो जाए।

देवकी ने फिर से पंडित जी को बुलाया और घर में हवन-पूजा हुई क्योंकि पंडित जी ने कहा था कि हर 5 वर्ष में पूजा होती रहेगी तो सब ठीक रहेगा लेकिन देवकी अपना पुत्र मोह छोड़ नहीं पा रही थी और पंडित जी ने बातों-बातों में बचपन वाली बात का जिक्र कर दिया उससे क्षितिज के मन में यह डर बैठ गया था कि कहीं सच में तो मेरे जीवन में मेरी माँ बाधक है। कुछ और करना चाहता था माँ ने यह जानते हुए की विज्ञान में मेरी रुचि नहीं है जबरदस्ती मुझे मेडिकल प्रोफेशन में धकेल दिया। मैं आज यह जानकर ही रहूंगा कि वह ऐसा क्यों कर रही है।

क्षितिज देवकी के पास गया और बोला, बचपन से मुझे कभी भी दौड़-भाग का खेल नहीं खेलने दिया वरना आज स्पोर्ट्समैन होता। बीसीए नहीं करने दिया वरना मैं इंजीनियर होता। आज मैं डॉक्टर भी बन गया हूं तो मुझे बाहर नहीं जाने दे रही है। माँ डॉक्टर में ऐसा क्या रखा है? पैसा ही तो कमाना है बीसीए करके मैं लाखों-करोड़ों कमा

सकता था। बातें ठीक है बेटा लेकिन पैसे से तू किसी का जीवन नहीं बचा सकता और माँ यह कहकर रोने लगी। एक दिन तुझे एहसास होगा बेटा। यह सारी बातें उसने अपने दोस्त डॉक्टर विवेक से कही। विवेक बोला" दोस्त क्यों परेशान होता है जितना इन सब चक्कर में पड़ेगा उतनी ही लाइफ खराब हो जाएगी। वह लोग अपना जीवन जी चुके अब तू बच्चा नहीं है अपनी जिंदगी जी ले।"

शहर में ही अपना दवाखाना खोल लिया और इसी सोच में कि उसे जीवन में अपनी माँ का स्नेह नहीं मिला उसने अपने आपको अकेला कर लिया। रात देर तक मरीज देखकर फिर अपनी दुनिया में मस्त रहता दोस्तों के साथ पार्टी करना। यही उसकी दिनचर्या बन गई थी। कुछ दिन में माँ की अचानक तबीयत खराब हुई और बहुत उपचार के बाद भी वह नहीं बची क्योंकि माँ को गर्भाशय का कैंसर था। मरते-मरते माँ ने कहा कि— बेटा मैं तुझे सिर्फ इसीलिए डॉक्टर बनाना चाहती थी, ताकि तू मेरे जैसी कैंसर से लड़ रही माँ, बहन, बेटियों की जान बचा सके।

इस घटना से क्षितिज बहुत दुखी हुआ क्योंकि माँ की मौत कैंसर से हुई इसीलिए वह कैंसर पर रिसर्च करने लगा और क्षितिज कैंसर रोग का बहुत बड़ा डॉक्टर बन गया। जब वह किसी महिला का इलाज करता, तो उसको अपनी माँ की याद आ जाती। उसने जीवन का एक लक्ष्य बनाया कि कैंसर रोगियों का निशुल्क उपचार करेगा। चिकित्सा और अनुसंधान के क्षेत्र में उसे अनेकों पुरस्कार मिले। माँ के नाम से खुले हुए अस्पताल देव की कैंसर मेमोरियल ट्रस्ट। देश की सरकार ने राष्ट्रीय चिकित्सा सेवा सम्मान से सम्मानित किया। इस मौके पर उसे बहुत सारे दोस्त बधाई देने आए। एमसीए, बीसीए करके बड़ी कंपनियों में मैनेजर या बड़ी कंपनियों के मालिक हैं उन सबका रुतबा देखकर जहां कभी मन भारी होता था। आज उसको अपने चिकित्सक होने पर गर्व हो रहा था। ■■

वास्तविक दोष

'प्रीति शर्मा 'असीम

नालागढ़, हिमाचल प्रदेश

नमस्ते, आंटी जी... कैसी हो नीतिका? सब्जी की रेहड़ी पर मोहल्ले की सभी औरतें इकट्ठा हो जाती और सब्जी लेने के बहाने आपस में आसपास की चर्चा लेकर बैठ जाती। उनकी चर्चा देख, नीतिका ने फटाफट सब्जी ली और जल्दी से वहां से निकलने की कोशिश की। अब यह पता नहीं किसकी चर्चा लेकर बैठ जाएगी और सबकी बातें करने लगेगी। नीतिका मन-ही-मन सोच रही थी। जी दीदी, आप क्या लोगे? सब्जी वाले ने नीतिका को कहा— भैया बैंगन दे दो। निर्मला आंटी बीच में बोल पड़ी। अरे...अरे बहन सुना क्या? बैंगन नहीं खाने चाहिए एकादशी को। अगर कोई बैंगन खा ले और कहीं वह मर जाए तो वह सीधा नर्क में जाता है। नीतिका उनकी बातें सुन रही थी और उसने बड़ी हैरानी से देखा इससे पहले की किसी और सब्जी पर टिका-टिप्पणी हो उसने फटाफट भैया को पैसे देकर सब्जी ली और निकल पड़ी।

लिफाफे को संभालते हुए अभी वह चल रही थी। एक और आंटी ....बोली, हां ....हां यह सही कह रही हो ।बैंगन को तो बहुत बुरा माना गया है कि श्राद्ध में तो यह खाते ही नहीं है ...ना ही खिलते हैं । वरना बहुत पाप लगता है।

नीतिका आज बैंगन बनाने की सोच रही थी। सब्जी वाले की रेहड़ी से घर तक सब्जी लाने में बैंगन का लिफाफा उसे ऐसे लग रहा था कि पता नहीं वह आज क्या पाप उठाकर ले आई है। लेकिन अब सोच रही थी कि बैंगन... बनाऊं या नहीं, सच में बैंगन खाने से पाप लगता है पता नहीं क्या-क्या बातें करते हैं। उसने तो कभी नहीं सुना। एक और आंटी अपने विचार पेश करते हुए बोली— एकादशी को तो बिल्कुल ही नहीं खाते यह सब्जी। कहते हैं यह राक्षसों के खून से पैदा हुई है। सच में, बहन मैं तो खाती नहीं हूँ मेरी तो सास भी हरिद्वार जाकर गंगा जी में त्याग कर आई थी कि वह अब कभी नहीं खाएंगी।

निकिता को सारी बातें सुनकर हंसी भी आ रही थी कि जो सब्जी पसंद ना हो वही त्याग ले हरिद्वार जाकर। कुछ और नहीं त्याग सकती... अपनी चुगली गोष्टी त्याग आती। निकिता ने किचन में सब्जी रखी और सब्जी को देखती रही। एक बेचारे बैंगन के लिए जो किसी को कुछ नहीं कहता... कितनी बातें चली है कि बैंगन खाने से पाप लग जाता है। कहां वो सब्जियों का राजा और मोहल्ले की औरतों ने मिलकर बजा दिया उस बेचारे बैंगन का बाजा।

नीतिका सोच में पड़ गई आए दिन आसपास हर कोई हर बात पर कोई-ना-कोई दोष बताता ही रहता है यह करो तो... वह होगा! वह करो... तो यह होगा! यह कर दिया तो ऐसा बुरा हो गया है। कभी-कभी उसे समझ नहीं आता कि ऐसा सच में होता है।

सारा दिन काम करने के बाद जब भी दो घड़ी के लिए फोन लेकर बैठो तो फोन पर भी कुछ देखने से पहले ही यहीं अंधविश्वास आ जाता है। आपके घर में वास्तु का यह दोष तो नहीं इस दिशा में बिस्तर करें। इस दिशा में करें धनवान

हो जाएंगे। अपने घर की चीजों की दिशा इधर-उधर करके कुछ अच्छा होने के सपने देखते कि शायद घर में अब सुधार होगा उसकी जिंदगी में सुधार हो जाएगा। लेकिन वह सब एक मृगतृष्णा-सा होता है। वह वास्तु के आधार पर, कभी उधर रखती, कभी घर की चीजें उधर रखती। लेकिन उसकी जिंदगी में कोई भी सुधार नहीं हुआ। उसे अपनी सास और पति की चुभती बातें और खामोशी वालें लुक्स झेलने ही पढ़ते थे जैसे उसने गलती के सिवा कुछ किया ही ना हो।

वह सोचती कि शायद अपने आसपास के वास्तु को बदलकर वह अपनी जिंदगी में कुछ बदलेगी। शायद उनका रवैया उसके प्रति कुछ बदल जाएगा। इतनी आसानी से इतना करने के बाद भी उनकी नजरों में कभी चढ़ नहीं पाई थी। सारा काम करने के बाद कभी किसी से उसका क्या मन है...जानने की कोशिश नहीं की। बस सबका काम चल रहा था लेकिन उसके अंदर घुटन भर रही थी। वास्तु के आधार पर रखकर, अच्छा होने के लिए सब कुछ करके भी कुछ भी तो नहीं बदलता। लेकिन... वास्तु कैसे दिशा निर्धारित करता है जब धरती घूमती रहती है। कौन-सी दिशा में यह सामान रखना है। इससे क्या फर्क पड़ता है तू भी तो पागलपन करती है।

पता नहीं उसकी जिंदगी में कितने दोष है? एक

फेसबुक वीडियो कहता छत पर दाना डालें, पक्षियों के लिए पानी रखें इससे आपके घर में समृद्धि आयेंगी। ऐसा करती तो अगले दिन फोन पर आता... कहीं आप छत पर दाना-पानी तो नहीं डाल रहे? अगर डाल रहे हैं तो इससे आपके घर में अनर्थ हो सकता है क्योंकि दाना खाने के लिए कबूतर छत पर आएंगे अगर कबूतर छत पर आएंगे तो वह खाते हुए वहां बीट भी कर सकते हैं इसलिए खाने की कोई भी वस्तु छत पर ना फेंकें। क्योंकि कबूतर की बीट से हो सकता है अनर्थ। क्योंकि कबूतर को श्राप है। कहा जाता है कि जब अग्नि देव और सूर्य देव कार्तिकेय का संरक्षण करने में असमर्थ होकर उन्हें गंगा नदी के सुपुर्द कर दिया था तो पार्वती माँ ने उनको श्राप दिया था कि आप कबूतर हो जाओ। इसलिए सभी पक्षियों को पूजा जाता है। लेकिन कबूतर को नहीं।

हद है... हर कोई मुंह उठाकर रील के चक्कर में कुछ भी बोल रहा है। फेसबुक पर आने से पहले कहाँ थे? नीतिका ने सुन तो लिया.. फिर मन में आया। जो बरतन पानी का रखा है उसे उठा दे अगर कोई कबूतर बीट कर गया तो अच्छा

नहीं होगा। हमारे जीवन में तो पहले से ही अशांति है। हद है तेरी। मन-ही-मन खुद को कोसा। बेचारे पक्षियों का क्या दोष? अरे... ऐसा होता तो फिर लोग अमरनाथ गुफा में कबूतर के दर्शन कर खुद को भाग्यशाली क्यों मानते।

इसी सोच में दरवाज़े की घंटी ने उसे चौंका दिया। नमस्ते आंटी जी, तेरी अम्मा जी घर पर है। जी आंटी! अंदर है। आंटी को अम्मा जी के पास बैठाकर वो पानी लेने चली गई। वापिस आई तो दोनों ग्रहों के दोष को मिटाने के लिए पूजन-हवन की बातें कर रही थी। उसे देखकर चुप हो गई। नीतिका ने पानी रखा और चाय पूछकर चली गई। उसके जाने के बाद दोनों फिर शुरू हो गई। बहन जी, रुवी के ससुराल वाले ग्रहों-पूजन को नहीं मानते।

इसलिए उसे यहां बुलाकर पूजन करवाना है। इस बार रुवी के घर कोई अच्छी चीज आ जाये दो बेटियां हो गई। अब फिर से सारी तैयारी हो गई है। आप आ जाना कल। ठीक है! पड़ोस में किसी को नहीं कहा फिर बातें होती है! हां सही किया... ऐसी बातों में ज्यादा प्रचार अच्छा नहीं। अम्मा जी ने जबाव दिया।

रात अम्मा जी, पिता जी आपस में बातें कर रहे थे। लेकिन रोटी देने आते-जाते। मजाल है इतनी-सी बात भी समझ आई हो। लेकिन किसी बाबा की बात कर रहे थे... हद है.? इन बाबाओं ने कौन-सा चमत्कार करना है। ठग रहे हैं। इन लोगों को देने के लिए पैसे है। वैसे कहते रहते हैं पैसे नहीं है।

नीतिका सोच रही थी अंधविश्वास का कैसा तंत्र फैला है। किसी बाबा से कोई उपाय करवाने से कुछ नहीं होगा। पर दुनिया को कौन समझाए। लगे है एक बाबा छोड़कर दूसरे बाबा के पीछे। इन विचारों में गुम वह किचन में काम कर रही थी कि अम्मा जी ने नीतिका को किचन में आकर कहा— आज बाबा जी आ रहे हैं। उनको खाना खिलाना है और आशीर्वाद लेना है। बहुत पहुंचे हुए बाबा जी हैं जो मन में होता है सब बता देते हैं। सारी बातें उन्हें पहले से ही पता होती हैं। यदि बाबा जी मन की बात और बाकी सारी बातें बता देते हैं तो जब अम्मा जी की चेन गुम गई थी तो सारा

घर क्यों खंगाल रही थी? इधर-उधर क्यों देख रही थी? फिर भी नहीं मिली चेन। तब क्यों नहीं बाबा जी से जाकर पूछा की चेन कहां पर है?

इन सारी बातों से अब उसे चिढ़ और ऊब होती थी। किसी बात के लिए लड़ाई हो रही है, कोई काम नहीं बन रहा, लड़की की शादी नहीं हो रही, बहु अच्छी नहीं आई, बच्चा पढ़ नहीं रहा है, बच्चे का मन नहीं लग रहा, बच्चा रो रहा है, लड़कियां है लड़का नहीं हो रहा है, बच्चे माता-पिता का सम्मान नहीं करते, रिश्ते अच्छे नहीं चल रहे, नौकरी नहीं मिल रही, कोई टेस्ट क्लियर नहीं हो रहा। हर किसी के लिए एक ही बात दोष लगा है। और दोष के लिए अनगिनत कहानियां और कहानियों के साथ अनगिनत वहम, विश्वास और सब करने के बाद भी... कुछ भी करने से कुछ नहीं होगा... क्योंकि जो सुप्रीम पावर है उसने सबके लिए तय कर दिया है आप

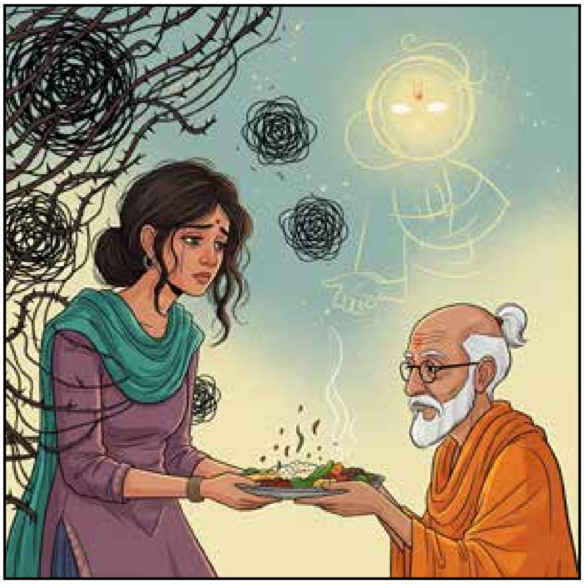

सोच सकते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि आपके करने से कुछ नहीं होगा और दोष और उसकी पहेलियां सिर्फ इस जन्म की नहीं है जन्मों तक उलझी हुई है। निकलना चाह कर भी आप निकल नहीं पाते। नीतिका फिर से काम में लग गयी और सोचने लगी कि शायद बाबा जी को खाना खिलाकर उसके भी कुछ दोष दूर हो जाए।।

■■

शब्द-दंश

डॉ. अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
पटना, बिहार

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ने शॉल ओढ़ाकर और उनके हाथों में एक लाख इक्यावन हज़ार का चेक व "साहित्य रत्न" का मेडल सौंपते हुए पूछा— 'डॉ. शिवांशी, आप अपने इस मुकाम तक पहुँचने का श्रेय किसे देना चाहेंगी?'

शिवांशी की नज़र पूरे सभागार में घूमती हुई अंत में डॉ. अनिकेत पर जाकर ठहर गई। उसकी आँखों के सामने कई दृश्य कौंधने लगे। डॉक्टरेट की डिग्री लेने से लेकर आकाशवाणी, दूरदर्शन, सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित अनगिनत कार्यक्रमों और सम्मान समारोहों में उनकी भागीदारी तक। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन और पुस्तक प्रकाशन जैसे हर कार्य में उन्होंने बाधाएँ ही डालीं और विरोध ही किया। कई बहाने बनाकर उसे अपमानित और लांछित भी किया।

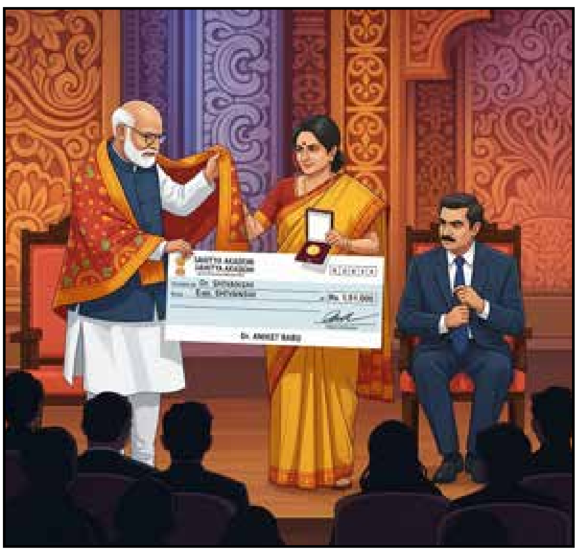

आज भी वे (डॉ. अनिकेत) इस सम्मान समारोह में अपने बेटे की ज़िद के कारण ही आए थे, पर उनकी आँखों में वही अनिच्छा साफ दिख रही थी। मगर यह भी सच है कि उनके हर विरोध और अवरोध से शिवांशी और भी मजबूत होती चली गई। उन्होंने जितने अपमान किए, उसने उतने अधिक सम्मान अर्जित किए। शिवांशी ने हर अपमान को चुनौती के रूप में लिया। सच तो यह है कि किसी बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में सहयोगी के प्रोत्साहन उतने सहायक नहीं होते, जितने विरोधी के अवरोध और कटु शब्द। क्योंकि मंज़िल की राह में बिछे फूल कदम को आराम देकर धीमा करते हैं, मगर काँटे न केवल कदम को तेज़ करते हैं, बल्कि दौड़ाकर मंज़िल तक पहुँचाने में सक्षम होते हैं। अगर सब कुछ आसानी से मिल जाता, तो आज वह एक सामान्य गृहिणी ही रह जाती।

मेरे सम्मान, पुरस्कार और समस्त साहित्यिक उपलब्धियों का श्रेय मेरे पति डॉ. अनिकेत जी को है। मैं उन्हें बड़े आदर के साथ मंच पर बुलाकर अपनी आज की उपलब्धियों से सम्मानित करना चाहती हूँ!' यह सुनते ही पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

■■

बेटी की चाह

मैं हूँ एक मासूम कली,
खिलने तो दो मुझे।
मैं हूँ एक नन्ही-सी परी,
उड़ने तो दो मुझे।

अभी तो जन्मी हूँ,
दुनिया से अन्जान हूँ,
जब हो जाऊं बड़ी तो,
अकेला छोड़
पहचान करने दो।

मैं हूँ मासूम कली,
खिलने तो दो मुझे,
अग्रसर होने की प्रेरणा दे,
तोड़ दो बेवजह की बंदिशों की बेडियां।

दुनिया को समझाना है,
लड़की हूँ तो क्या हुआ,
किसी से कमतर मुझे,
आंकना नहीं है।
एक पहचान दो,
मेरे अस्तित्व की,
मुझे उड़ान दो।

मेरे सपनों को पूरा करने की,
जिस दिन ये जहां मेरे साथ होगा,
चपला-सा साहस मेरे पास होगा,
भले फिर चाहे कितना घना अंधकार होगा,
चल पाऊंगी मैं भी स्वतंत्र-निर्भय,
अदम्य साहस दो।
हम कलियों को, रोको मत
अकेले चलने का साहस दो। ■■

मणिका चौधरी
स्कूल ऑफ लॉ, पंजाब
केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा
(पंजाब)

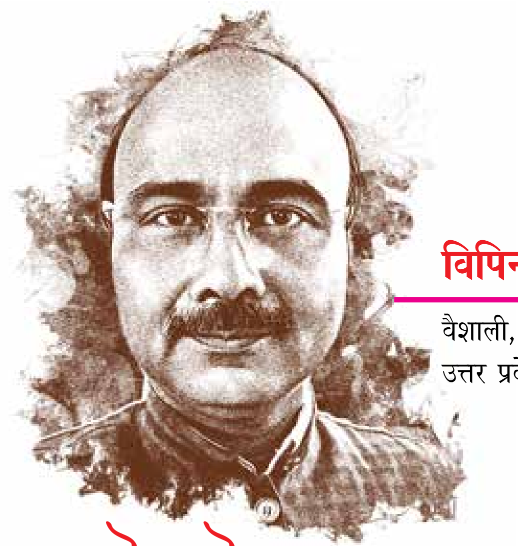

विपिन त्यागी

वैशाली, गाजियाबाद
उत्तर प्रदेश

हे श्रद्धेय चिकित्सक नारी

हे श्रद्धेय चिकित्सक नारी,
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?
इस खंडित क्षत-विक्षत से शहर में,
तेरा कैसे अर्चन करूँ मैं?
तू आदि अनंत, तू देवी स्वरुप है,

जग में दिखता सब तेरा ही रुप है,
तुझमें व्याप्त ये जग सारा ही,
तुझसे होती ये छाँव-धूप है।
हे श्रद्धेय चिकित्सक नारी,
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?

तुझसे इस सृष्टि की उत्पत्ति है,
तू ही तो शिव की शक्ति है,
तू पालक इस सारे जग की है,
तुझ बिन अधूरी हर भक्ति है।
हे श्रद्धेय चिकित्सक नारी,
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?

अब बात करूँ चिकित्सक नारी की,
श्वेत परिधान व दया निधानी की,
सेवा समर्पण व त्याग तपस्विनी,
नवजीवन दायिनी व पीड़ा हारिणी की,
हे श्रद्धेय चिकित्सक नारी,
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?

तू वीर चिकित्सक नारी है महान,
साहस, सेवा, ममता, तेरी पहचान,
कैसे मैं मान लूँ... तू है कमजोर,
तू योद्धा रुप है ईश्वरीय वरदान।
हे श्रद्धेय चिकित्सक नारी,
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?

कैसे तुझपे कोई पापी हाथ धरे,
तेरी अस्मिता को वो तार-तार करे,
तू उठा ले अपने अस्त्र-शस्त्र सब,
क्यों खुद से ना इंसाफ करे,
हे श्रद्धेय चिकित्सक नारी,
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?

बन जा रन चंडी अब तू ना कराह,
कैसे कोई लूटे किसी औरत की आह,
एक वीर चिकित्सक नारी की व्यथा,
शब्दों मे बांधकर विपिन ने कहा।
हे श्रद्धेय चिकित्सक नारी,
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?

इस खंडित क्षत-विक्षत से शहर में,
तेरा कैसे अर्चन करूँ मैं?
तेरा कैसे पूजन करूँ मैं?
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?
तुझे कैसे नमन करूँ मैं?

■■

रंग बदलती दुनिया को होली मुबारक हो

वक्त के साथ बदल रहे हैं रंग,
खुशियों के रंग भी लगते बेरंग
चेहरों पर अब वह चमक ही कहाँ,
दिलों में पलता मासूम प्यार नहीं रहा
चलो इस होली कुछ नया करें,
दिलों के फासले मिटा दें,
वो बचपन की नादानी फिर से जिएं,
रंगों में वो अपनापन फिर से घोले।
जो नाराज हैं उन्हें गले लगाएं,
जो दूर हुए उन्हें फिर पास बुलाएं।
प्यार का अबीर हवा में घुले,
संवादों के रंग रिश्तों में घोले।
इस बदलती दुनिया को ये पैगाम दो,
कि रंगों में नफरत का रंग ना हो।
हर घर में सजे सौहार्द का रंग,
हर मन में खिले विश्वास का रंग।
आओ, इस होली को खास बनाएँ,
रंग बदलती दुनिया को फिर इंद्रधनुष-सा सजाएँ।
हर हृदय में प्रेम के रंग बिखरें,
और हर आँगन में खुशियाँ खिलखिलाएँ।

डॉ. ममता जैन, पुणे

तुम बिन होली

व्यग्र पाण्डे
गंगापुर सिटी
राजस्थान) 322201)

तुम बिन होली लगे रुखी

फाग राग बेसुरी गाये
कानों को जो नहीं सुहाये
आदत जिन्हें कान्हा-बांसुरी की
हृदय भावुक हिलोरा खाये
आंखें तव दर्शन की भूखी।

श्याम रंग जो चढ़ जावे
दूसर रंग अंग ना भावे
जगत हो रहा है रंगीला
ब्रज की होली मोय सतावे
प्रेम वेल रही है सूखी।

कहकर गये जल्द आवन की
मेघ-मल्हार बीती सावन की
अजहूं ना आये मोर सांवरे
बीती जाये मस्ती फागण की
विरह अग्नि मेरी होरी फूंकी।

जब मैं देखूं लाल रंग कूं
सुरत तेरे अधरन की आवे
पीत रंग पीतांबरी बनकर
कान्हा तेरी याद दिलावे
मोय स्वर ना भाये कूकी।

विरहन की होरी का होरी
बिन पतंग की जैसे डोरी
रंगन के बिच बे-रंगी सी
सूनी लागे है घर की पौरी
अंदाज बना राधे का सूफी।

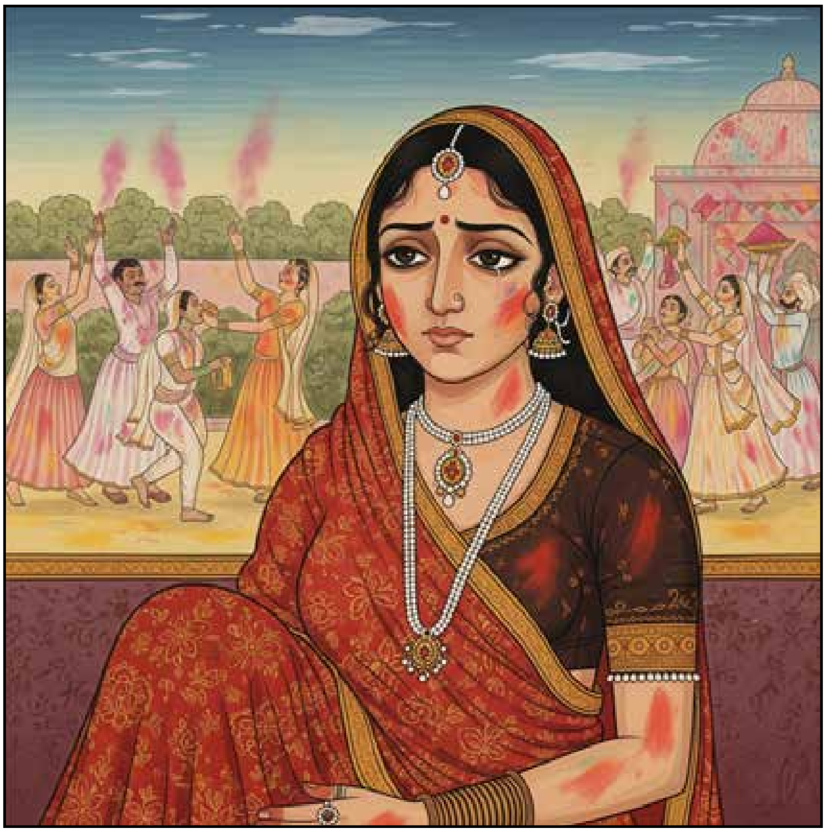

होरी खेलन आजा रे रसिया

आरती रावत पुण्डीर
श्रीनगर

होरी खेलन आजा रे रसिया
ओ रसिया फागुन में।

सखियां आयीं संग में लायीं
भर पिचकारी रंग,
मैं बोली ना ना ना रंगना
रंगूंगी श्यामल रंग,

सखी री मैं रंगूंगी श्यामल रंग
ओ रसिया फागुन में।

कुंज गलिन में ढूंढा तुझको
बरसाने में देखा,
मथुरा, वृंदा, गोकुल, काशी
कहां-कहां न उडीखा,
तोहे कहां-कहां न उडीखा
ओ रसिया फागुन में।

तू छलिया तेरे ढंग निराले
मैं सीधी-सादी गोरी,
सब रंग दीने तूने नटखट
मीरा रह गई कोरी,
तोरी मीरा रह गई कोरी
ओ रसिया फागुन में।

ग्वाले रंग गये गोपिन रंग गयी
रंग गयी राधा रानी,
प्रीत के रंग में रंग जा बेदर्दी
कोरी चुनरिया धानी,
मोरी कोरी चुनरिया धानी
ओ रसिया फागुन में।

खड़ी अटरिया राह निहारुं
थक गए मोरे नैन,
एक झलक दिखला जा बैरी
मिल जावेगो चैन,
मोहे मिल जावेगो चैन
ओ रसिया फागुन में।

तू आये तो मैं भी खेलूं
होली तेरे संग,
छोड़ छाड़ के लोक लाज़ मैं
खूब मचाऊँ हुड़दंग,
मैं ख़ूब मचाऊँ हुड़दंग
ओ रसिया फागुन में।

ग़ज़ल

मनव्वर अशरफ़ी

जशपुर, छत्तीसगढ़

होली की रंगीनियों में खोया जाए,
चलो बीज उलफ़त का बोया जाए,

हमारे रिश्तों की सलामती के वास्ते,
एक-दूजे को रंगों में भिगोया जाए,

कबतक आपस में तक़सीम होंगे हम,
सबको एक धागे में पिरोया जाए,

दुश्मनी के दाग़ न रहे बाक़ी,
गले मिलकर इन दाग़ों को धोया जाए ।

घर भर की खुशहाली बिटिया।
खुशबू वाली डाली बिटिया।।

वक़्त पै दुर्गा काली बिटिया।।
इतनी शक्ति शाली बिटिया।।

बेटी से घर में है बरकत।
सूर्य उदय की लाली बिटिया।।

बेटी सीता, बेटी राधा,
संस्कार की आली बिटिया।।

घर के दुख कम करने वाली,
बाधा हरने वाली बिटिया।।

धैर्य धर्म शिक्षा सज्जनता,
इन गहनों की थाली बिटिया।।

—बृंदावन राय सरल, सागर, एमपी

अहमदाबाद विमान दुर्घटना

लोगों की मौत, जांच जारी 275

प्रस्तुति : द साइलेंट स्ट्रोक

अहमदाबाद में 12 जून को हुए भीषण विमान हादसे में मरने वालों की संख्या 275 पहुंच गई है। गुजरात स्वास्थ्य विभाग ने मंगलवार को इस संबंध में आधिकारिक आंकड़े जारी किए। इस दुखद घटना में एयर इंडिया की लंदन जा रही फ्लाइट AI 171 बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर ने सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के कुछ ही मिनटों बाद मेघाणीनगर इलाके में एक मेडिकल हॉस्टल परिसर में दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी।

दुर्घटना में जानमाल का नुकसान

गुजरात स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, दुर्घटनाग्रस्त विमान में सवार 241 लोगों में से 240 की मौत हो गई, जबकि केवल एक ब्रिटिश नागरिक चमत्कारिक रूप से जीवित बचा। इसके अलावा, जिस हॉस्टल की इमारत पर विमान गिरा, वहां मौजूद 34 अन्य लोगों ने भी अपनी जान गंवा दी। इस तरह कुल मिलाकर 275 लोगों की मौत की पुष्टि हुई है।

जांच और ब्लैक बॉक्स

दुर्घटना के बाद से ही इसके कारणों की जांच जारी है। नागरिक उड्डयन मंत्री के. राममोहन नायडू ने स्पष्ट किया है कि विमान का ब्लैक बॉक्स भारत में ही है और इसकी जांच विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (AAIB) द्वारा की जा रही है। उन्होंने उन सभी अटकलों को खारिज कर दिया, जिनमें कहा जा रहा था कि ब्लैक बॉक्स को जांच के लिए विदेश भेजा जाएगा। ब्लैक बॉक्स से मिलने वाले डेटा को डिकोड करने में समय लग सकता है, लेकिन यह दुर्घटना के सटीक कारणों को जानने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

शुरुआती संकेत और भावनात्मक प्रतिक्रियाएं

शुरुआती जांच में कुछ संकेत मिले हैं कि पायलट ने आपातकालीन पावर सिस्टम को सक्रिय किया था। दुर्घटना के पीछे इंजन की शक्ति का खत्म होना या पूरी तरह से इलेक्ट्रिकल फेल्योर जैसे कारण हो सकते हैं। इस भयावह हादसे ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। कई परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, जिनमें 7 महीने की गर्भवती महिला और उनके पति जैसे हृदय विदारक मामले भी शामिल हैं, जो गोद भराई के बाद लंदन लौट रहे थे।

दुर्घटनास्थल से विमान के मलबे को हटाने का काम भी शुरु कर दिया गया है। यह दुर्घटना भारतीय विमानन इतिहास के सबसे दुखद हादसों में से एक है, और इसकी गहन जांच यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

अहमदाबाद विमान दुर्घटना: जांच की ताजा जानकारी

अहमदाबाद, [25 जून 2025]: अहमदाबाद में हाल ही में हुए विमान दुर्घटना की जांच

जारी है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय और विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (AAIB) की टीमें गहनता से मामले की तह तक जाने की कोशिश कर रही हैं। हालाँकि, जांच की प्रकृति और संवेदनशीलता को देखते हुए, हर नई जानकारी तुरंत सार्वजनिक नहीं की जाती है।

जांच की वर्तमान स्थिति

ब्लैक बॉक्स का विश्लेषण: जैसा कि पहले बताया गया था, विमान के ब्लैक बॉक्स (फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर और कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर) भारत में ही हैं और उनका गहन विश्लेषण AAIB द्वारा किया जा रहा है। इसमें समय लगता है क्योंकि डेटा को सावधानीपूर्वक डिकोड और व्याख्या किया जाता है। ब्लैक बॉक्स दुर्घटना से ठीक पहले विमान के प्रदर्शन, पायलट की बातचीत और सिस्टम की स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण सुराग प्रदान करेगा।

मलबे का विस्तृत परीक्षण: दुर्घटनास्थल से एकत्रित किए गए विमान के मलबे के हर टुकड़े का बारीकी से परीक्षण किया जा रहा है। इंजीनियर और विशेषज्ञ यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या किसी यांत्रिक विफलता, संरचनात्मक दोष, या किसी बाहरी वस्तु से टक्कर (बर्ड स्ट्राइक जैसी) ने दुर्घटना में भूमिका निभाई।

प्रत्यक्षदर्शियों के बयान: घटना के समय मौके पर मौजूद रहे प्रत्यक्षदर्शियों के बयान भी दर्ज किए जा रहे हैं। ये बयान दुर्घटना के क्रम को समझने में मदद कर सकते हैं, खासकर यदि उन्होंने कोई असामान्य आवाज, धुआं, या आग देखी हो।

रखरखाव रिकॉर्ड की समीक्षा: विमान के रखरखाव रिकॉर्ड की भी पूरी तरह से समीक्षा की जा रही है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि विमान ने सभी आवश्यक जांच और सर्विसिंग समय पर प्राप्त की थी। एयरलाइन के संचालन प्रक्रियाओं की भी जांच की जा रही है।

पायलटों का मेडिकल और प्रशिक्षण इतिहास: दुर्घटनाग्रस्त विमान के पायलटों के प्रशिक्षण और मेडिकल इतिहास की भी जांच की जा रही है ताकि यह पता चल सके कि क्या कोई मानवीय त्रुटि या स्वास्थ्य संबंधी समस्या एक कारक हो सकती है।

जांच में लगने वाला समय

यह समझना महत्वपूर्ण है कि विमान दुर्घटनाओं की जांच एक जटिल और समय लेने वाली प्रक्रिया होती है। इसमें महीनों, या कुछ मामलों में तो साल भी लग सकते हैं, जब तक कि अंतिम रिपोर्ट जारी नहीं हो जाती। जांचकर्ता हर पहलू पर विचार करते हैं और कोई भी निष्कर्ष निकालने से पहले पुख्ता सबूतों का इंतजार करते हैं।

फिलहाल, जांच अधिकारी दुर्घटना के कारणों के बारे में कोई आधिकारिक बयान नहीं दे रहे हैं ताकि अटकलों से बचा जा सके और जांच की अखंडता बनी रहे। जैसे ही कोई महत्वपूर्ण या अंतिम जानकारी उपलब्ध होगी, उसे सार्वजनिक किया जाएगा।

■■

प्रेरक विचार

"पहले वे तुम्हें अनदेखा करेंगे, फिर वे तुम पर हँसेंगे, फिर वे तुमसे लड़ेंगे, फिर तुम जीत जाओगे।"

–इंदिरा गांधी

"एक साधारण मुस्कान दुनिया को बदल सकती है।"

—अज्ञात

"मेरा जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित है। यदि मैं राष्ट्र की सेवा करते हुए मर भी जाऊँ, तो मुझे गर्व होगा। मेरे रक्त की एक-एक बूंद इस राष्ट्र के विकास और इसे मजबूत व गतिशील बनाने में योगदान देगी।"

–इंदिरा गांधी

जीवन की सार्थकता

सोनल मंजू श्री ओमर

राजकोट, गुजरात - 360006

एक बार एक पत्नी अपने पति को एक सद्गुरु के आश्रम में उनसे मिलवाने ले गई। दोनों पति-पत्नी ने सद्गुरु को प्रणाम किया। फिर पत्नी ने गुरु को बताया कि उनके पति हर समय चिंताग्रस्त नज़र आते है। उनके स्वभाव में चिड़चिड़ापन बढ़ता जा रहा है। वे कभी संतुष्ट नहीं होते। कभी दो पल सुकून से नहीं बैठते, यहाँ तक कि ये अपने परिवार और बच्चों तक को समुचित समय नहीं देते। सद्गुरु ने पति की तरफ देखा और उसे बोलने के लिए इशारा किया।

सद्गुरु का इशारा मिलते ही पति ने अपनी चिंता उनके सामने रखी- "गुरु जी मैं क्या करूँ? हमारे पास जीने के लिए केवल एक ही जीवन होता है। हमें सब कुछ उसी जीवन में पूरा करना होता है। हमारी ऊर्जा सीमित है, शक्ति सीमित है, समय सीमित है, ऐसे में इस एक जीवन का भरपूर लाभ उठाने के लिए हम क्या करें? हम सब खुश रहना चाहते हैं और ऐसे काम करना चाहते हैं जिससे हमें प्रेम मिले, यश मिले और हमारे आसपास का वातावरण खुशगवार हो। हमारी यही इच्छा होती है कि हम अधिकाधिक मनचाहे काम कर सकें और जरूरी चीजें निपटा सकें। इसीलिए मैं दिन-रात मेहनत करता हूँ, ताकि खुद को और अपने परिवार को एक अच्छी जिंदगी दे सकूँ। पहले मैं जॉब करता था, फिर अपना व्यापार शुरु कर दिया। गाड़ी, बंगला, सभी सुख-सुविधाएं अपने प्रियजनों को उपलब्ध कराता हूँ, लेकिन फिर भी कमी ही लगती है कुछ-न-कुछ, मैं संतुष्ट ही नहीं हो पाता हूँ। ऐसा लगता है कि मैं एक अंधी दौड़ में दौड़ रहा हूँ, कहाँ जाना है और कितनी दूर जाना है ये भी ज्ञात नहीं है। जीवन इतना तनावग्रस्त हो गया है कि कई बार सोचता हूँ कि सब कुछ छोड़कर कहीं भाग जाऊँ। इन्हीं सब चिंताओं में लीन रहता हूँ कि अपने जीवन को किस प्रकार सार्थक करूँ?"

उस व्यक्ति की बात सुन सद्गुरु जी हल्का-सा मुस्कुराकर अपने सौम्य मुख से बोले- "अगर आप सोचते हैं कि दौलत, शोहरत, बैंक बैलेंस, गाड़ी, बंगला, उच्च पद, समाज में प्रतिष्ठा, मान बड़ाई, सुंदर स्त्री, पुत्र आदि को प्राप्त कर लेने से जीवन की सार्थकता सिद्ध हो जाती है तो आप 100% गलत हैं। क्योंकि यह सब भौतिक चीजें हैं जो केवल आपके भौतिक शरीर को सुख पहुंचा सकते हैं परंतु ये आपके जीवन को सार्थक नहीं बना सकते इसलिए इस भ्रम से बाहर निकलिए और अध्यात्म के सहारे अपने अस्तित्व को जानने का प्रयत्न कीजिए, कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है? क्यों मिला है आपको यह मानव जीवन? इसका उद्देश्य क्या है?

जीवन एक अद्वितीय और अनमोल उपहार है। यह एक ऐसी यात्रा है, जिसमें हम नए अनुभवों को अपने साथ लेकर आते हैं, सीखते हैं, आगे बढ़ते हैं और अपनी

पहचान बनाते हैं। जीवन की सार्थकता, इस महत्वपूर्ण यात्रा में अपने अंदर छुपी क्षमताओं को पहचानने की है। सभी को अपने कार्यों, विचारों, और वृतियों से इस जीवन को महत्वपूर्ण न सिर्फ अपने लिए बनाना है बल्कि दूसरों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करना भी हैं। एक सार्थक जीवन जीने का अर्थ होता है कि हम अपनी क्षमताओं और सामर्थ्य का सही तरीके से उपयोग करते हैं और अपने से जुड़े हुए लोगों के साथ समृद्धि बाँटते हैं, और इस बात का सही मूल्यांकन कठिन समय में ही होता है।

मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। एक बार धुँआ करती धूपबत्ती को देख मोमबत्ती बोली- "तुम मुझसे कुछ शिक्षा ग्रहण क्यों नहीं करती? मुझे देखो मेरा प्रकाश सब जगह फैल रहा है। सबकी आँखे मेरी ओर ही लगी रहती है, और तुम हो कि धुँआ फैलाने में लगी हो।"

धूपबत्ती बोली- "यह तो ठीक है, लेकिन जब ज़िन्दगी में परीक्षा का टाइम आये, तब धैर्य के साथ अडिग रह सकोगी तो ही इस चमक की सार्थकता है।" मोमबत्ती ने धूपबत्ती की बात सुनकर भी अनसुनी कर दी। थोड़ी देर में वहां एक तेज हवा का झोंका आया। उस झोंके से मोमबत्ती

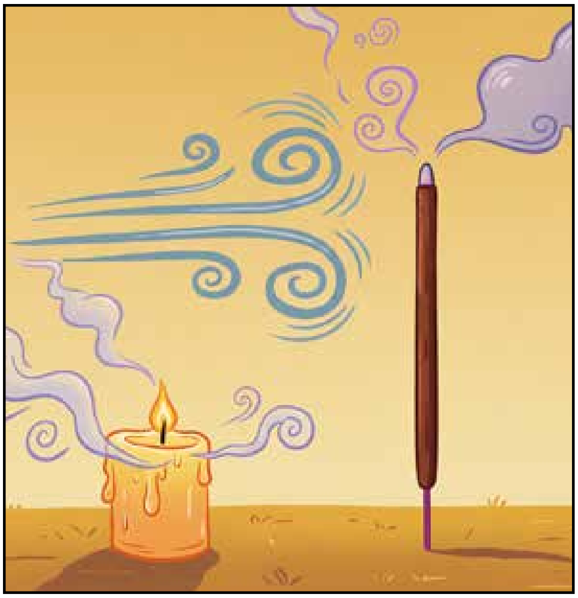

बुझ गई, लेकिन धूपबत्ती ने और भी तेजी से खुशबू फैलाना शुरु कर दिया। तब मोमबत्ती को एहसास हुआ कि कुछ पलों के लिए उपलब्धता पर अहंकार करना बेवकूफ़ी के अलावा कुछ नहीं था क्योंकि उपलब्धियों का मूल्यांकन

कठिन समय में ही होता हैं।

मानव जीवन बहुमूल्य है। अतः इसे सार्थक बनाने का प्रयत्न सभी को करना चाहिए। जीवन की सार्थकता आध्यात्मिकता, प्रामाणिकता एवं नम्रता से सिद्ध होती है। इसीलिए आपको अध्यात्म की ओर बढ़ना चाहिए, क्योंकि अध्यात्म से धर्म का भान होता है। धर्म वह है जो सबको धारण करता है। लोक और परलोक दोनों को सुधारने के लिए धर्म का अनुपालन जरुरी है। यही सच्चा साथी है। मृत्यु होती है तो सगे-संबंधी, धन-सम्पत्ति, मकान-दुकान सब कुछ यहीं छूट जाता है। कुछ भी साथ नहीं जाता है। केवल धर्म और कर्म ही साथ जाता है। इसीलिए अगर आप सच्चे मन से निरंतर अपना सदकर्म करते रहेंगे तो आपको ईश्वर तक पहुंचने का कोई-न-कोई मार्ग मिल ही जाएगा, और तब यह मानव जीवन सार्थक हो जाएगा।

जीवन की सार्थकता का एक दूसरा बड़ा पहलु प्रामाणिकता है, अतः अपने कर्तव्य का सही ढंग से पालन करना ही प्रामाणिकता है। सार्थक जीवन में आत्म-समर्पण, सेवा, और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना होती है। हमारे कार्यों के माध्यम से हम दूसरों के जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं। सार्थक जीवन में आत्म-प्राबल्य, शिक्षा, और सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। हमें अपने लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहकर, संघर्ष को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना होता है। इससे हम अपने आत्मविकास की यात्रा पर निरंतर बने रहते हैं और अपने उद्देश्यों तक पहुंचते हैं, जोकि हमारे जीवन को सार्थक बनाता है।

जीवन की सार्थकता का तीसरा बड़ा पहलु नम्रता है, बुद्धिमान व्यक्ति धनी और विद्वान बन जाने पर विनम्र बन जाता है। यदि कोई व्यक्ति गुण और विद्या में कुछ कम भी हो पर यदि वह विनम्र हो तो लोग उसे अधिक मान देते है। नम्रता का व्यवहार सभी को प्रिय लगता है। किसी को दुःख देकर कभी खुशियों की उम्मीद मत करना। खुशियाँ उनको मिलती है जो दुसरों को खुशी देखकर खुश होते हैं। नम्रता से व्यक्ति में संयम का आचरण उत्पन्न होता है और उसे अच्छा करने के लिए, संघर्ष करने के लिए प्रेरणा मिलती है। मैं आपको एक और कथा सुनाता हूँ।

एक बार एक शिल्पकार को दो पत्थर दिए जाते हैं मंदिर के निर्माण के लिए। जिसमें से एक पत्थर को वो मंदिर की सीढ़ी पर लगा देता है और दूसरे को मूर्ति में गढ़ देता है। तब वो सीढ़ी का पत्थर प्रश्न करता है कि, "मैं भी पत्थर, ये भी पत्थर। पर मुझपर से सब चल के जाते है, और जबकि इसके आगे शीश झुकाते है। ऐसा क्यों?" तब शिल्पकार ने

उत्तर दिया कि, "जब मैंने तुम पर छेनी-हथौड़े से वार किया तब तुमने बिना संयम धारण किए इसका विरोध किया। इसीलिए तुमको ज्यों-का-त्यों मन्दिर की सीढ़ियों पर स्थापित कर दिया जाता है लेकिन इसने संयमित होकर मेरी छेनी-हथौड़े का वार से संघर्ष किया और उसे सहन किया। इसीलिए इसे मैंने मूर्ति रुप में गढ़कर मन्दिर में स्थापित कर दिया।"

इसीलिए कहा गया है-"बिना संघर्ष के कोई महान नहीं बनता, पत्थर पर जब तक चोट ना पड़े...तब तक पत्थर भी भगवान नहीं बनता।" इसीलिए सदैव संयमित होकर, अपना कर्म करो, संघर्ष करो, क्योंकि कर्म करना मगर आशा किसी से भी न रखना है, क्योंकि कर्म का वास्तविक मुल्य भगवान ही दे सकते है, इन्सान नहीं। इसीलिए अपने जीवन को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से मुक्त करके सद्कर्म और ईश्वर में ध्यान लगाइए। और इसका पहला कदम होगा कि हम अपने दृष्टिकोण को सकारात्मक रखे। हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक तब होगा, जब हम अपने आत्म-मूल्यों के साथ सहमत होंगे, तभी हम अधिक संतुष्ट होंगे और हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक बनेगा। इससे ही हम सीखेंगे, आगे बढ़ेंगे और दूसरों के साथ मिलकर एक उच्च उद्देश्य की दिशा

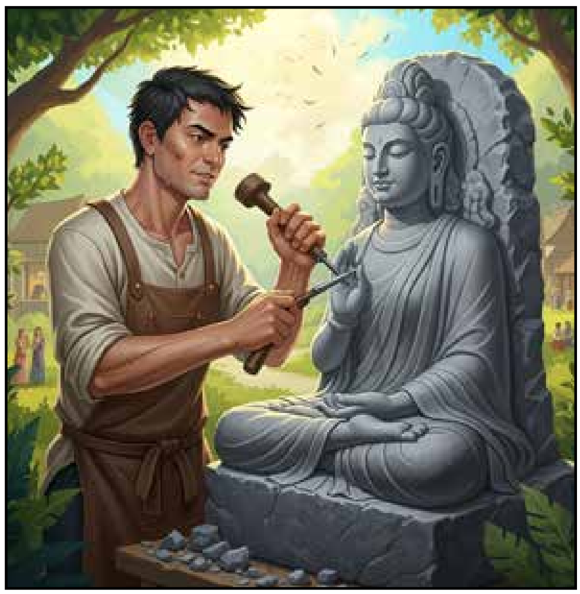

में बढ़ते रहेंगे। जिससे हम सबको एक समर्थ, सफल और सार्थक जीवन की प्राप्ति हो सकती है। उस व्यक्ति को सद्गुरु जी की बात समझ आ गई थी और अपने जीवन को सार्थक बनाने का मार्ग भी मिल गया था। अब दोनों पति-पत्नी के मुख-मण्डल पर संतुष्टि के भाव थे। ■■

पंचमढ़ी
मध्य प्रदेश की शान

नीलमणि शर्मा
वैशाली, गाजियाबाद
उत्तर प्रदेश

भारत अनेक विविधताओं का देश है। इसकी संस्कृति, जितनी विशेष है उतनी ही इसकी भौगोलिक स्थिति। मध्य प्रदेश भारत का हृदय है। मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित पंचमढ़ी समुद्रतल से 1.067 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह मध्य भारत का सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थल है। पंचमढ़ी का ठंडा सुहावना मौसम इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। सर्दियों में यहां तापमान लगभग 4 से 5 डिग्री तक रहता है और गर्मियों में तापमान 35 डिग्री से अधिक नहीं होता है। स्थानीय भाषा में मंदिर को मढ़ई कहा जाता है। यहां के पांच मंदिरों के कारण इसका नाम पंचमढ़ी पड़ा। पहले पंचमढ़ी पर गोंड जनजाति का राज था। ब्रिटिश राज से पहले यह इसी जनजाति की राजधानी थी। वर्ष 1887 में ब्रिटिश सैनिक कैप्टन जेम्स फ़ोर्सिथ ने इसका परिचय पश्चिमी दुनिया से कराया। अंग्रेजों ने भी पंचमढ़ी को मध्य प्रदेश की राजधानी बनाया।

भवानी प्रसाद मिश्र की कविता सतपुड़ा के घने जंगल को हकीकत में देखना हो तो पंचमढ़ी में देखा जा सकता है। यहां की सदाबहार हरियाली घास और हर्रा, जामुन, साल, चीड़, देवदार, सफेद ओक, यूकेलिप्टस, गुलमोहर और अन्य छोटे-बड़े सघन वृक्षों से आच्छादित वन गलियारा तथा घाटियां मनमोहक हैं। यह प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से संपन्न क्षेत्र है। यहां के हरे-भरे और शांत वातावरण में बहुत-सी नदियों और झरने पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। मध्य प्रदेश के पंचमढ़ी में जहां एक ओर पर्वतीय पर्यटन स्थलों के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद उठा सकते हैं वहीं दूसरी ओर तीर्थयात्रा भी सहज ही हो जाती है। सतपुड़ा की पहाड़ियों के बीच होने और अपने सुंदर स्थलों के कारण इसे सतपुड़ा की रानी भी कहा जाता है। वर्ष 1862 में इस स्थान की खोज कैप्टन जे फोर्सिथ ने की थी। सतपुड़ा के जंगलों में बाघ, तेंदुआ, सांभर, चीतल, गौर, चिंकारा, भालू आदि के दर्शन हो सकते हैं।

आदिमानव काल के शैलशिलाएं और शैल चित्रकारी

पंचमढ़ी की पहाड़ियां लावा व लाल पत्थर से बनी है। यहां आदिमानव काल के शैलशिलाएं और शैल चित्रकारी तथा लाल व सफेद रंगों के भिति चित्र भी गुफाओं में देखे जा सकते हैं। यह एक पुरातात्विक धरोहर स्थल है। यहां की चट्टानी चित्रकलाएं 10,000 वर्ष पुरानी और 500-800 ईसा की है। इनमें योद्धाओं, भैंसा, तेन्दुआ, कुत्ता आदि के चित्र भी बनाए हुए हैं।

शैल चित्रकारी

पांडवों का वास

पंचमढ़ी पांडवों के लिए भी जानी जाती है। यहां की मान्यताओं के अनुसार पांडवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ काल यहां भी बिताया था और यहां उनकी पांच कुटियां या मढ़ी या पांच गुफाएं थीं। इनके नाम पर ही इस स्थान का नाम पंचमढ़ी पड़ा। इन्हें बौद्धकालीन गुफाएं भी कहा जाता है।

पाण्डुओं की गुफाएं

जलप्रपात

पंचमढ़ी में जलप्रपात का आंनद ले सकते हैं। यहां बी फॉल्स तथा डचेज फॉल्स सबसे लोकप्रिय हैं। बी फॉल्स का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि पहाड़ी से गिरते समय जब इसका पानी नीचे गिरता है तो इससे बी यानी मधुमक्खियों जैसी आवाज आती है। पंचमढ़ी में पानी की आपूर्ति इसी झरने से की जाती है। इसे जमना प्रपात भी कहते हैं क्योंकि एक मान्यता है कि जमुना नाम की आदिवासी महिला ने इस झरने को ढूंढ़ा था। 2800 फुट से अधिक की उंचाई से गिरने वाला झरना दूर से देखने में चांदी की तरह चमकता है। इसलिए इसे सिल्वर फॉल या चांदी का झरना भी कहा जाता है।

महादेव गुफाएं

ये गुफाएं पंचमढ़ी से 12 किलोमीटर दूर स्थित है। पवित्र निर्मल जलाशय के चारों ओर स्थित यहां का दृश्य दर्शनीय है। यहां जटाशंकर महादेव और गुप्त महादेव के मंदिर हैं। पंचमढ़ी को कैलाश पर्वत के बाद महादेव का दूसरा घर कहा जाता है। गुप्त महादेव जाने के लिए दो बिलकुल सटी हुई पहाड़ियों के बीच से गुजरना होता है। जटाशंकर मंदिर पंचमढ़ी बस स्टैंड से मात्र डेढ़ किलोमीटर दूर स्थित है। वहां जाने के लिए पहाड़ी से नीचे उतरकर खोह में जाना होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार भस्मासुर, जिसे महादेव ने यह वरदान दिया था कि वह जिसके सिर पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जाएगा। भस्मासुर ने यह वरदान शिवजी पर ही आजमाना चाहा। अंत में भस्मासुर से बचते हुए शिवजी यहां आकर छिपे और यहीं पर भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप लेकर भस्मासुर को अपने ही सिर पर हाथ रखने के लिए मजबूर कर उसका विनाश किया था। यहां भगवान शिव के अनेक मंदिर है ।

गुप्त महादेव

चौड़ागढ़

यहां पर प्राचीन समय से अनगिनत त्रिशूल गड़े हुए हैं। प्राकृतिक सुंदरता के बीच स्थित इस स्थान का भरपूर आनंद लिया जा सकता है। गोंड राजवंश के राजा संग्राम शाह ने यह किला बनवाया था। यह यहां की दूसरी सबसे ऊंची पहाड़ी पर बना है। इस जगह को सनराइज की खूबसूरती के लिए भी जाना जाता है। चौरागढ़ मंदिर पंचमढ़ी के सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक है। समुद्र से लगभग 4200 फीट की ऊंचाई पर स्थित इस मंदिर तक पहुंचने के लिए लगभग 1325 सीढियाँ चढ़नी पड़ती है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार भस्मासुर को वरदान देने के बाद भोलेनाथ ने यहाँ निवास किया था। जाते समय भगवान शिव यहाँ अपना त्रिशूल छोड़ गये इसलिए शिव भक्त यहाँ 1 क्विंटल तक के त्रिशूल चढ़ाते है। यहाँ चौरा बाबा ने कई वर्षों तक भगवान शिव की तपस्या की थी, उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिए, तभी से चौरा बाबा के नाम पर इस पहाड़ की चोटी का

चौरागढ़ मंदिर

नाम चौरागढ़ पड़ गया। घने वनों और गहरी घाटियों से घिरे इस मंदिर को देखने के लिए सुबह का समय सही है। आप सुबह इस मंदिर में दर्शन करने के बाद सूर्योदय का आकर्षक दृश्य भी देख सकते है।

प्रियदर्शिनी (पोर्शिथ प्वाइंट)

यह खूबसूरत नजारे का स्थल है, जिसे कैप्टन पोर्शिथ ने वर्ष 1857 में खोजा था। उनके नाम पर ही इस स्थल का यह नाम पड़ा। यहां के औपनिवेशिक स्थापत्यकला नमूने और गिरजाघर दर्शनीय हैं। प्रियदर्शिनी प्वाइंट से सूर्यास्त का दृश्य लुभावना लगता है। सतपुड़ा की पहाड़ियों में सबसे ऊंचा प्रियदर्शिनी प्वाइंट पंचमढ़ी से लगभग 5 से 6 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ से आपको हरियाली से आच्छादित एक गहरी और खूबसूरत घाटी का विहंगम दृश्य देखने को मिलता हैं। इस प्रियदर्शिनी प्वाइंट से सूर्यास्त का सुन्दर दृश्य भी दिखाई देता है। इसके अलावा आपको प्रियदर्शिनी प्वाइंट से चौरागढ़ की पहाड़ी भी दिखाई देती है। बरसात के मौसम गुजर जाने के बाद यहाँ चारों तरफ हरे-भरे पहाड़ों का दृश्य मन को भा जाता है।

सबसे ऊंची चोटी धूपगढ़

तीन पहाड़ी शिखर की बाई तरफ चौरादेव, बीच में महादेव तथा दाई ओर धूपगढ़ दिखाई देता है। यह सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों की सबसे ऊंची चोटी है। 1345 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह स्थल पंचमढ़ी से 10 किलोमीटर दूर है। इस चोटी से आसपास की पहाड़ियां स्पष्ट और सुंदर दिखाई देती हैं। धूपगढ़ पंचमढ़ी से लगभग 9 किलोमीटर दूर 1350 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। धूपगढ़ मध्य प्रदेश ही नहीं अपितु मध्य भारत की सबसे ऊँची चोटी है। सनराइज, सनसेट, ट्रेकिंग और एडवेंचर लवर्स के लिए यह एक लोकप्रिय जगह है। धूपगढ़ जाते समय सड़क के दोनों ओर अदभुत आकार के बहुत ही ज्यादा बड़े विशाल पहाड़ों की चोटियां है। धूपगढ़ का सूर्य उदय और सूर्य अस्त देखने के लिए दूर-दूर से देशी-विदेशी पर्यटक यहाँ सुबह या शाम को आते हैं। सूर्य नारायण धीरे-धीरे पहाड़ों के पीछे जाते हुए क्षितिज में लीन हो जाते है। कुदरत का यह खूबसूरत दृश्य आपकी शाम को आनंद से भर देता है।

अप्सरा विहार

यह पंचमढ़ी से 5 किलोमीटर दूर स्थित है। इस स्थान का मुख्य आकर्षण एक खूबसूरत झरना है, जो काफी ऊंचाई से गिरता है। 30 फीट ऊंचा यह झरना प्राकृतिक रूप से बहुत ही सुंदर, छोटे और उथले पूल का निर्माण करता है। तैराकी और डाइविंग के लिए अप्सरा विहार का यह पूल एकदम सही है। स्थानीय लोगों के अनुसार जब भारत में ब्रिटिश शासन था, तब ब्रिटिश महिलाएं सफेद वस्त्र पहनकर इस कुंड में स्नान करने आती थी। स्थानीय लोग इनके सफेद वस्त्र और गोरी त्वचा को देखकर इन्हें आकाश से उतरी हुई अप्सरा या परी समझते थे, इसलिए इस झरने का नाम अप्सरा विहार पड़ा।

अप्सरा विहार

सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान

वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण के लिए 1981 में बना सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान पंचमढ़ी में 2133.30 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र पर फैला हुआ है। सतपुड़ा राष्ट्रीय पार्क में कई वन्य लुप्त प्राय प्रजातियां रहती हैं। यहां कई प्रकार के जानवर जैसे बाघ, तेंदुए, बायसन, सांभर, चीतल, चिंकारा, माऊस डीअर, भौंकने वाले हिरण, भारतीय विशाल गिलहरी, पोर्क्यूपिन, मगरमच्छ, लंगूर, जंगली सूअर, नीलगाय, चौसिंघा, लंगूर, जंगली कुत्ते, सियार, लोमड़ी, जंगली बिल्ली और भालू देखे जा सकते है। जल में रहने वाले जीवों में मगरमच्छ, घड़ियाल और मछली की कई प्रजातियां यहाँ देखने को मिलती है। यहाँ गिद्ध, इग्रेट, ईगल, बटेर, तीतर, तोता, मैना, बुलबुल, मालाबार और पाईड हॉर्नबिल आदि कई जंगली पाए जाते हैं। सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान घूमने में जंगल सफारी, नौका विहार और हाथी की सवारी का आनंद भी लिया जा सकता है।

सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान

सुंदर कुंड

यह प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण एक मनमोहक कुंड है। यह पंचमढ़ी से ढाई किलोमीटर दूर हैं। यहां पर एक स्वच्छ तालाब है। यहां मनोरम दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है।

हांडी खोह

300 फुट की ऊंचाई पर स्थित यह एक भ्रमण योग्य तंगघाटी है, जहां दिलकश नजारा मन को मोह लेता है।

राजगीर

इसे क्लब हिल के नाम से भी जाना जाता है। यह 300 फीट की ऊंचाई पर स्थित एक खूबसूरत पहाड़ी है। इस पहाड़ी से पंचमढ़ी तथा उसके आसपास की अनुपम छटा देखते ही बनती है।

कैसे जाएं

पंचमढ़ी से लगभग 210 किलोमीटर दूर भोपाल यहां का निकटतम एयरफोर्ट हैं। मुम्बई-हावड़ा रेलमार्ग पर इलाहाबाद से जुड़ा पिपरिया (पंचमढ़ी से लगभग 50 किलोमीटर दूर) निकटतम रेलवे स्टेशन है। दिल्ली से पहले भोपल पहुंचना होगा। यहां से पंचमढ़ी की दूरी 211 किलोमीटर है। यह दूरी तय करने के लिए बसें मिलती हैं। पंचमढ़ी पिपरिया तहसील में पिपरिया-पचमढ़ी मार्ग पर तहसील मुख्यालय से 54 किमी की दूरी पर स्थित है। भोपाल से पचमढ़ी की दूरी लगभग 204 किमी है जहां से नियमित बसें चलती हैं। मध्य रेलवे की इटारसी-जबलपुर शाखा पर स्थित पिपरिया रेलवे स्टेशन। पंचमढ़ी सड़क मार्ग पर यह लगभग 52 किमी दूर है। मुंबई-हावड़ा रेलमार्ग पर इटारसी व जबलपुर के बीच पिपरिया स्टेशन सबसे पास है। पंचमढ़ी भोपाल, इंदौर, नागपुर, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा तथा पिपरिया सड़क मार्ग से सीधा जुड़ा है। पिपरिया से टैक्सी भी उपलब्ध रहती हैं। भोपाल हवाई अड्डे के द्वारा दिल्ली, ग्वालियर, इंदौर, मुंबई, रायपुर और जबलपुर से जुड़ा है। किसी भी माध्यम से यहाँ सरलता से पहुँचा जा सकता है। यहां मध्य प्रदेश टूरिज्म होटलों के अलावा अनेक निजी होटल भी हैं, जहां ठहरा जा सकता है।

■■

प्रेरणादायक सुविचार

"जब लड़कियों को शिक्षित किया जाता है, तो उनके देश मजबूत और अधिक समृद्ध बनते हैं।"

"सच्चे मायने में मजबूत लोग दूसरों को ऊपर उठाते हैं। सच्चे मायने में शक्तिशाली लोग दूसरों को साथ लाते हैं।"

–मिशेल ओबामा

"हजारों खोखले शब्दों से अच्छा वह एक शब्द है, जो शांति लाए।"

–गौतम बुद्ध

"राजनीति में कोई स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता, केवल स्थायी हित होते हैं।"

– विंस्टन चर्चिल

लाइफ ऑफ्टर सिक्सटी

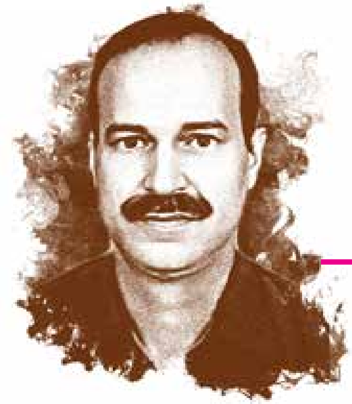

हरि बल्लभ ममगई

वैशाली, गाजियाबाद

उत्तर प्रदेश

पति के रिटायरमेंट और बच्चों की शादी गृहिणी के जीवन में एक बड़ा बदलाव लेकर आती हैं। सालों तक, उनका जीवन मुख्य रूप से पत्नी, माँ और गृहिणी की भूमिकाओं के इर्द-गिर्द घूमता रहा होता है। घर, जो पहले बच्चों की चहल-पहल और जिम्मेदारियों से भरा रहता था, अब शांत हो जाता है। ऐसे में यह जीवन का एक नया चरण होता है, जिसमें कई चुनौतियाँ और अवसर दोनों आते हैं।

सबसे बड़ा बदलाव दिनचर्या में होता है। पति के रिटायरमेंट के बाद, वह अधिक समय घर पर बिताते हैं। यह उनके जीवन में खुशी और एक-दूसरे को और पास लेकर आता है, क्योंकि अब उनके पास एक-दूसरे के साथ समय बिताने, यात्रा करने या साझा रुचियों को पूरा करने का मौका होता है। लेकिन साथ ही, यह एक नई तरह की सामंजस्य की भी मांग करता है। वर्षों से निभाई गई अपनी-अपनी भूमिकाओं के बाद, उन्हें अब अपने रिश्ते को नए सिरे से परिभाषित करना होता है और साथ में जीवन जीने के नए तरीके खोजने होते हैं।

बच्चों की शादी के बाद, गृहिणी को "खाली घोंसले सिंड्रोम" का सामना करना पड़ सकता है। बच्चों की हंसी-खुशी और उनकी देखभाल के कार्यों की अनुपस्थिति एक खालीपन का अहसास करा सकती है। यह भावनात्मक रूप से कठिन हो सकता है, लेकिन यह समय खुद को यह समझाने का भी होता है कि बच्चे अब अपने जीवन में आत्मनिर्भर हो गए हैं। इस नए चरण को अपनाने में मदद के लिए, बच्चों के साथ फोन कॉल्स, मुलाकातें या उनके बच्चों (पोते-पोतियों) की देखभाल करना एक सेतु का काम कर सकता है।

यह बदलाव हालांकि शुरुआत में थोड़ा असहज लग सकता है, लेकिन यह आत्म-खोज और व्यक्तिगत विकास के लिए भी बेहतरीन समय होता है। इस जीवन के दौर में गृहिणी को अपनी वह रुचियां और सपने पूरा करने का मौका मिलता है, जिन्हें उन्होंने परिवार की जिम्मेदारियों के कारण पीछे छोड़ दिया था। बागवानी, चित्रकारी, लेखन, संगीत, या किसी नई कला को सीखने जैसी रुचियां अब प्राथमिकता पा सकती हैं। इसके अलावा, समाज सेवा या समुदाय में भागीदारी करने से उन्हें एक नई दिशा और संतोष का अनुभव हो सकता है।

सामाजिक संबंध भी इस समय में बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। दोस्तों का मजबूत नेटवर्क बनाना और पुराने परिचितों से फिर से संपर्क करना अकेलेपन को कम करने और जीवन को और समृद्ध बनाने में मदद कर सकता है। क्लब, समूह या स्थानीय गतिविधियों में भाग लेना उन्हें व्यस्त और खुशहाल रख सकता है।

आर्थिक दृष्टिकोण से भी बदलाव आता है। रिटायरमेंट के बाद, जोड़े को अपनी आय के अनुसार अपने जीवन को ढालना पड़ता है। इस समय, पति और पत्नी मिलकर खर्चों की योजना बनाते हैं और भविष्य के लिए बजट तैयार करते हैं। यह उनके बीच सहयोग और सामंजस्य को और मजबूत बनाता है।

अंततः यह जीवन का एक नया अध्याय होता है, जो नवीनीकरण और बदलाव का मौका देता है। अगर गृहिणी अपनी भलाई, रिश्तों और व्यक्तिगत संतोष पर ध्यान केंद्रित करती हैं, तो यह जीवन का सबसे अच्छा समय बन सकता है। यह याद रखने की बात है कि जीवन एक सतत यात्रा है, जिसमें हर बदलाव के साथ खुद को बेहतर बनाने और नए अवसरों को अपनाने का मौका मिलता है। सकारात्मक सोच और दृढ़ आत्मबल के साथ, यह चरण भी आनंदमय और संतोषजनक बन सकता है। ■■

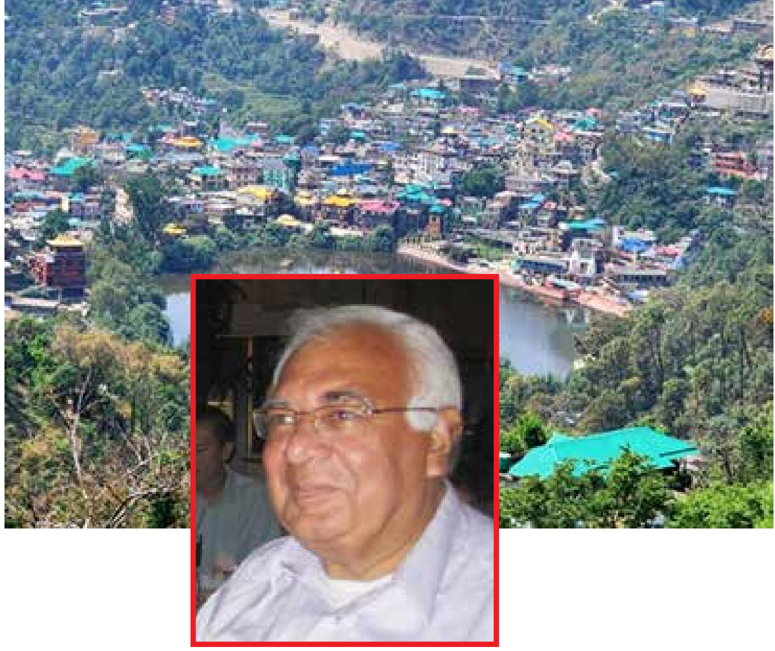

A JOURNEY OF JOY – 2025

RANA PRATAP BAJAJ

I am embarking on to share my memorable experiences of my trip to Mandi region in Himachal Pradesh (Dev Bhumi). After having made a programme with my friends, Pradeep Gupta and Dr. Rajesh Bhawani, I got my Rail tickets booked to and from New Delhi to Chandigarh. It was planned that I will leave on 21st April in the morning and return by Vande Bharat on 26th in the afternoon. Accordingly, Driver Shiv dropped me at the New Delhi station on Paharganj side and with the help of a coolie, I boarded the train from Platform No. 2, for which I had to climb stairs and come down on the platform. I almost puffed by the time I could reach and got lodged in my seat. Easy life has made walking a strenuous experience. The journey was hassle-free and at the Chandigarh Railway Station, luckily the train arrived at Platform No. 1 and with help I came out of the station to catch pre-paid cab for Pradeep's residence in Omaxe Complex in New Chandigarh.

While in Cab, I informed Pradeep of my arrival, and the driver was briefed by him for precise directions of his house, though I had visited his place earlier

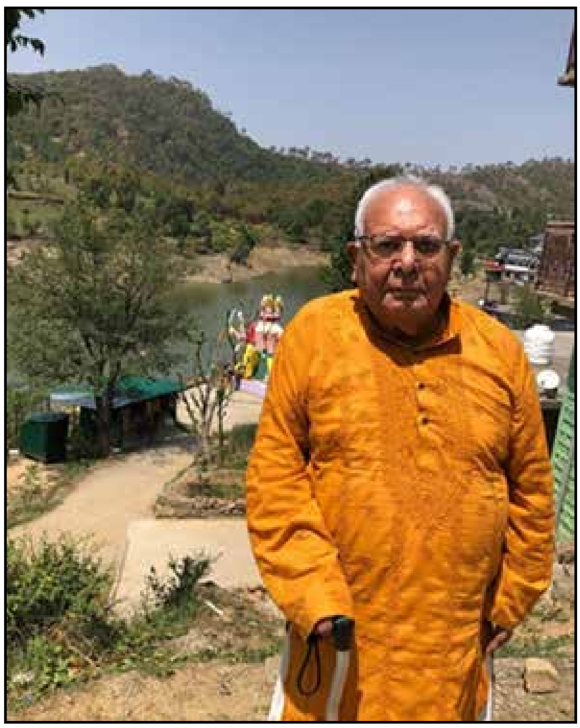

too on two occasions. On arrival I found Pradeep waiting outside and carried my baggage inside. His wife, Seema and both his son and maid also, welcomed me. Refreshing tea and sweets from his ancestral place were served. After a little talk and after I having had refreshed myself, we cheered up with drinks and sumptuous Lunch, after which I rested for an hour. After once again having tea we (including Seema) started our journey by Pradeep's car for Mandi. On way we had tea at Chandel Restaurant and covered another close to 200 Kms. and I were to add mileage covered since morning; it would be around 500 Kms. We crossed 5 tunnels and a little past 6 reached Mandi, where Dr. Rajesh Bhawani met us, and we were lodged in two comfortable and well-equipped suites. It was decided that we will take a little rest and after freshening up will meet around 7.30 for our Drinks and Dinner. For that evening, we chose Santori Toki (Japanese Whisky) for our poison and top up with lavish meal and sweets. We exactly did that and thereafter retired on our beds for sound sleep with instructions that Bed Tea should be served at 0730. Next Morning I got up and found chirping Maina pair in the balcony, as also Guturgun of pigeons.

So, on 22nd April, after having Jumbo Size Aloo Paranthas with the usual accompaniments, we left to have a Darshan of Maa Naina Devi, who is specially revered for treating eye ailments. Devotees offer silver eyes at the temple. To make our journey hassle-free, we were also provided a local guide, who took us in Pradeep's Car through a scenic route. Apart from pine, there were trees of Deodar and Oak. We could also see various shrubs and trees laden with Fig like fruits. Even shrubs were laden with tangy tasting fruit. On way, we saw from a distance very imposing statue of Padma Sambhava (or St. Tso Pema). We gathered that plenty of the followers of Rinpoche are settled around that area.

However, before reaching Naina Devi temple, we on way also stopped to see a lake which according to legend was dug by Bhima one of the Pandavas, to quench the thirst of Mother Kunti. There are five water bodies in that region, and we were told that earlier water bodies had different shades. Near the lake there was huge statue of Lord Hanuman (with five heads). We also saw a Nirankari family having bath in that lake and of course we could also see plenty of fish.

When we reached at the entrance of Naina Devi temple, we saw a lot many people and after parking our car under the shade of tree we proceeded to the temple. We also saw two newly wedded couples with their relatives coming to seek blessings of Naina Devi. They were also accompanied by musicians and the couples were well attired including Himachali caps, which were also well-adorned. We took a basket of Prasad, which carried all the essential offerings. In a side hall of the main temple, we saw ladies and girls dancing and men folk were playing music. Inside the temple

Tilak was applied on our foreheads, and we were tied sacred thread. The priest took the basket of offerings and after removing a few articles, returned the basket as Prasad. Apart from this, there were also several temples of various deities.

The main temple had silver statue, and the walls and roof were well carved. It goes without saying that we hardly missed an opportunity to take snaps, which I promise to post later on.

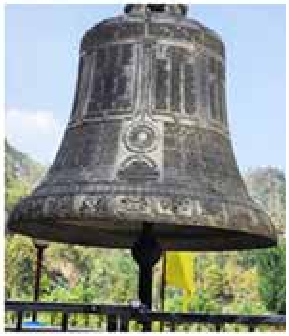

As was required after removing Prasad in a bag, we returned the basket as we were asked. The lady shop keeper then asked us to take Lunch as Prasad in a nearby big hall, in which several devotees were having their Lunch. Near the hall, I fell down, when I did not notice that floor further was somewhat

deeper than the platform we were walking. I was promptly picked up and luckily, I remained unharmed. Inside the hall we saw people squatting in lines and enjoying their meals. There were also tables and chairs for older people like us or those who could not sit on floor mats. Everything went orderly and the Sewadars served with devotion one by one several items with rice as the main course. No one could be found as not having had heartful of Prasad. The utensils were, of course, were deposited at designated place. Before making new arrivals sit, the floor was properly brushed and to make it hassle-free the hall was divided in two parts and on clean floor, mats were spread. I could see a kind of satisfaction on all the faces, be it of devotees or Sewadars.

Some souvenirs were bought for gifting away and as blessings of Ma Naina Devi. On way back we also saw the Tso Pema Statue which is 123' tall and very imposing. All around we could see golden roofs and other artefacts. The statue was completed in 2012. Yes, on way to this place we also saw Buddhist hangings adorning one side of the roads. There is a lake too. On way, we were also shown a place which earlier had water.

On way we also saw Tibbet market, which is called Riwalsar Market and from here the Tso Pema statue appears even more imposing and well adorned. Underneath there is a well- decorated hall and carries the last remains of many Lamas. I was informed that whether Lama is to be buried, burnt or emersed in water is decided by the Main Lama.

As it had become quite warm, we quenched our thirst over fresh cane juice laced with ginger, mint and lemon. Thereafter we returned to our place of stay to have fresh tea and plan for the evening assembly. The time again for this was decided at 7.30 pm and for this there was plenty of time to have rest and freshen up

On 22nd evening when we entered our rooms and had put on TV, we came to know of the tragic and ghastly act of terrorism perpetrated by Pakistani terrorists and under clear directions from their handlers in Pakistan. It saddened us and a thought came in our minds to abandon further visit but then we saw an opportunity to pray at various Shrines of Devtas and Goddesses we were going to be able to pray for the unfortunate departed souls. Om Shanti was in our minds and with heavy hearts we finished our dinners and discussed shameless and ghastly acts of terrorists on the behest of Pakistan. Backstabbing and unleash terror remain Pak motives from its very inception. It seems that the word 'Peace' is not in their dictionary.

I took the opportunity on 23rd morning to consult a Senior Dermatologist as for quite some time I had been scratching my arms and legs due to extreme itching. Dr. Kavita Sharma patiently saw and advised me appropriately, including to shun using ordinary soaps and instead use only Dove soap and as far as possible to use normal water instead of hot water. She also prescribed essential medication and the process of application. I was thankful and presented her my second book, "Miles Turned into Milestones" as I had also presented it earlier to Dr. Rajesh Bhawani.

A little after ten, on 23rd April we left, in Pradeep's car for our next destination, which was Mini Khajiyar of Devidhara, which is a little over 60 Kms from Mandi and passes through scenic valley of Jayuni and we came across apart from Pine and Deodar, trees of figs, Dhak, Blooming Buransh, apples Bamboo, Bushes of various types, bush roses, white and red, Pomegranate (Darim). There is tarmac road and the last one Km was stony, and our car rattled even at low pace. However, it was not dangerous, and we saw even smaller cars going through.

All through our way, we enjoyed cool breeze, shades of trees and scenic valley. At Devidhara, there is lush green grass and a tiny lake. There are figures of various animals, which appear live from time to time, like Beers, Lions, Deers, etc. It is really very peaceful and refreshing place. After a while having seen place and having Darshan and Prayers, we decided to return back. However, as we were feeling hungry, we decided to have lunch. We saw a board Jannat Homestay and Restaurant. It was close to a brook and appeared scenic. It was mildly chilly being height of over 8,000'. We preferred to have lunch outside under Sun. It took some time to prepare fresh food, which was Rice, Dal and Himachali Kari (which is made without adding gram flour) and of course fresh Salad, which was juicy and even onions were not bitter. Having filled our bellies, as a surprise we were served sweet made out of pumpkin. It was syrupy with green cardamom and really tasty. In the meantime, Pradeep was able to line up arrangements for our night stay at Hotel Cozy Haven and Restaurant in Dhangiara PO Jahal and Tehsil Chachyot), courtesy his friend. The place was around 9 Kms on way back. I recall that the sweet made Seema to buy a ripe Pumpkin on way and I did not lag behind and bought a broom made of Palm/ Date Leaves, as it appeared fancy to me.

Coming back on my recent trip to Mandi in Himachal Pradesh, I almost forgot to mention that in Devidarh, there is a temple of Goddess Mudasan and is called Divya Dham. I also noticed a signboard with signage, "I Love (Red Heart) Devidarh" as is in vogue specially in the U.S. Also to call it Mini Khajiyar (famous among tourists) was at all no exaggeration. All around Tall Trees were adding to the beauty of grassland in the middle. It was really a serene place with full calm and presented a peaceful opportunity to relax.

Thereafter we came to Hotel Cozy Haven & Restaurant in Village Dhangiara. We received a hearty welcome from its owner, Tek Singh Thakur and his son,

Gaurav Thakur. As we wanted to have a cup of hot tea, we were immediately served well brewed tea. In the meantime, our baggage was placed in our respective rooms on 1st floor as it presents better view of the valley, which is picturesque. In Himachal Pradesh almost all the buildings are so built that at least one side (preferably front) faces sun. Here too it was the case. For a while we retired on really comfortable beds, in large size rooms. Although, I was listening to drumbeats, I could not realize its importance until I was informed by Pradeep that Devtas have been invited by one of the villagers. In Himachal, various Devtas come accompanied by their Priests with full fanfare and drumbeats. It is another matter, as to how they travel but for sure each one of them is brought with full reverence.

I immediately came to balcony and was told that it was a real treat to watch such a rare spectacle. In the present instance, the main Devta, Kamrunag came from one side and his son, another Devta came from the other side and just in front of hotel was their meeting point. The celebrations went on for quite a while with beating of drums and other musical instruments. I was told that the person who has invited them for some ceremony in his house, has promised to sacrifice 5 he-goats. It indeed was rare and unique experience, and I could watch custom prevailing in interior parts of Himachal Pradesh.

As desired by Seema, that evening, we were served freshly cooked mutton and with evening drinks, we had enough of tasty munching's. After dinner topped with sweets, we retired for night and really had sound sleep. In the morning, we were served with hot water and tea. In bath both hot and cold water was available, and the bathrooms had modern facilities. We were told that Solar power is used to heat water.

The entire set up was tastefully decorated and before I miss, I must mention that room walls were made of mud in a traditional way and were comfortable both during summers and winters.

Continuing on the Mandi trip, I must add that natural mineral water, fresh food, fresh air and greenery around must have put in vigour and cleansed lungs congested with pollution of NCR. In addition to add, good company made the trip really memorable. The next day morning after breakfast we took four-wheeler cab, as that day we were supposed to go to the temple of Mata Shikari Devi, which is at the height of 11,000' and the terrain is rough and extremely curvy. It is neither tarmac road, nor smooth. The real tourist season in that region starts in May and goes on until mid-October, barring rainy season, when roads are hardly pliable.

It was a sunny day, but the height of the destination had made us to attire ourselves well. Unlike Nathu La, at similar height, we did not find much difficulty in breathing nor as cold and foggy as it was in Nathu La, but we had gone there in October (near winter). This place also gets snow but surprisingly, the temple which is roofless, and idols remain in the open, but no snow falls on idols of Ma Shikari Devi. It is believed that Ma Shikari Devi had cautioned

Pandavas about the deceit of Koravas and had forbidden to gamble and had predicted that Pandavas will become pauper and lose everything

Having not had heeded to sane advice, Pandavas suffered and spent their time in oblivion. Earlier too, I have made mention of Lake made by Bhima to quench thirst of Mother Kunti.

I tend to give credence to this as there is also Hidimba Temple in Manali (Himachal Pradesh), whom Bhima had married..

Atasty munching's. After dinner topped with sweets, we retired for night and really had sound sleep. In the morning, we were served with hot water and tea. In bath both hot and cold water was available, and the bathrooms had modern facilities. We were told that Solar power is used to heat water. The entire set up was tastefully decorated and before I miss, I must mention that room walls were made of mud in a traditional way and were comfortable both during summers and winters.

Continuing on Mandi trip, I must add that natural mineral water, fresh food, fresh air and greenery around must have put in vigor and cleansed lungs congested with pollution of NCR. In addition to add, good company made the trip really memorable. The next day morning after breakfast we took four-wheeler cab, as that day we were supposed to go to the temple of Mata Shikari Devi, which is at the height of 11,000' and the terrain is rough and extremely curvy. It is neither tarmac road, nor smooth. The real tourist season in that region starts in May and goes on until mid-October, barring rainy season, when roads are hardly pliable.

It was a sunny day, but the height of the destination had made us to attire ourselves well. Unlike Nathu La, at similar height, we did not find much difficulty in breathing nor as cold and foggy as it was in Nathu La, but we had gone there in October (near winter). This place also gets snow but surprisingly, the temple which is roofless, and idols remain in the open, but no snow falls on idols of Ma Shikari Devi. It is believed that Ma Shikari Devi had cautioned Pandavas about the deceit of Koravas and had forbidden to gamble and had predicted that Pandavas will become pauper and lose everything. Having not had heeded to sane advice, Pandavas suffered and spent their time in oblivion. Earlier too, I have made mention of Lake made by Bhima to quench thirst of Mother Kunti. I tend to give credence to this as there is also Hidimba Temple in Manali (Himachal Pradesh), whom Bhima had married.

Barring one shop, all the rest were closed. It was here that we had to park our car, and the rest of climb was to be done on foot, almost a Km. Before returning back, we had tea and treated ourselves on some biscuits. Interestingly, when Seema asked for Maggy, the shopkeeper raised her hands to say 'No' and instead offered to prepare fresh Dal and Rice. After taking a few more snaps, we boarded the taxi to come back. On way to and fro, we saw many streams and one of them was called Kailash Nalla. On way to the top, we had seen a lot of young schools' children hitch-hiking. Of course, they had guides too and once on the top they were asked to take rest and served

Banans and were advised to take water slowly. Of course, the children were drip drench with sweat but out of curiosity to have Darshan and blessings of Ma Shikari Devi eager to march on. Incidentally, our driver's nickname was Harshu (shortened from Hoshiyar Singh) and indeed he was a jovial fellow and went on explaining the terrain. On way to and back we had seen all the three types of Oaks, besides Dhak and Pine. We also saw apple trees covered to protect them from birds and snow.

On our way back, Seema also happened to see an old lady selling a delicacy of Himachal Pradesh, which is called 'Lungdu' or 'Kastrod'. It is a kind of fern and grows near water streams. Pickle is also made of it. Incidentally, when I returned home, my maid, Maya, who is from Nepal was very happy to see these greens, as it is available in Nepal too and is known as 'Kokiya' or 'Niyoro'. What a coincidence and spells proximity. Later on, I enjoyed its tasty dish.

Predicted that Pandavas will become pauper and lose everything. Having not had heeded to sane advice, Pandavas suffered and spent their time in oblivion. Earlier too, I have made mention of Lake made by Bhima to quench thirst of Mother Kunti. I tend to give credence to this as there is also Hidimba Temple in Manali (Himachal Pradesh), whom Bhima had married.

Barring one shop, all the rest were closed. It was here that we had to park our car, and the rest of climb was to be done on foot, almost a Km. Before returning back, we had tea and treated ourselves on some biscuits. Interestingly, when Seema asked for Maggy, the shopkeeper raised her hands to say 'No' and instead offered to prepare fresh Dal and Rice. After taking a few more snaps, we boarded the taxi to come back. On way to and fro, we saw many streams and one of them was called Kailash Nalla. On way to the top, we had seen a lot of young schools' children hitch-hiking. Of course, they had guides too and once on the top they were asked to take rest and served Banans and were advised to take water slowly. Of course, the children were drip drench with sweat but out of curiosity to have Darshan and blessings of Ma Shikari Devi eager to march on. Incidentally, our driver's nickname was Harshu (shortened from Hoshiyar Singh) and indeed he was a jovial fellow and went on explaining the terrain. On way to and back we had seen all the three types of Oaks, besides Dhak and Pine. We also saw apple trees covered to protect them from birds and snow.

On way back, Seema also happened to see an old lady selling delicacy of Himachal Pradesh, which is called 'Lungdu' or 'Kastrod'. It is a kind of fern and grows near water streams. Pickle is also made of it. Incidentally, when I returned home, my maid, Maya, who is from Nepal was very happy to see these greens, as it is available in Nepal too and is known as 'Kokiya' or 'Niyoro'. What a coincidence and spells proximity. Later on, I enjoyed its tasty dish.

Once back, Seema asked Thakur ji to prepare fresh Masala Maggi and indeed it was very tasty and lovingly cooked. We settled in our rooms for taking rest. In the evening our routine of evening drinks and

good snack and dinner went on as usual. On the first day, Thakur family had joined us for drinks and offered us drinks from their side the next day, which we politely declined but did admire their gesture. Here, I must mention that Seema is really very conscious to give tips to all and sundry, who extend any help even howsoever miniscule. That is really great and humane.

Night, we slept comfortably and of course dreaming of next day's programme of visit to Kamru Nag Temple, which is the main deity of that region.

It is time for further storytelling about my recent visit to Mandi in Dev Bhumi (Himachal Pradesh). On Friday, the 25th April, after attending morning chores and after having had breakfast, around 9 a.m. once again we made ourselves comfortable in Harshu's taxi for visit to the temple of main deity of Mandi (Bada Deo Kamru Nag). It is believed that he is the Lord of Rains and other names attributed are Khatu Shyam or Babreek.

His abode is said to be in Kamral Village of Kamru Nag Hill, which is a little over 10 Kms from Village Dhangiara, where we were staying. Most of the route is patchy and rough, barring initial a couple of Kms. A stream passes close to the beginning of uphill trail. One has to stop one's car almost 3 Kms before the top, as rest of the distance has necessarily to be covered on foot. As in some other places, mules are available for such distances but not here. Mules are there but for carrying goods to the top from that point. Mule-owners charge Rs. 500 for each trip and carry almost 100 Kgs of goods. Though, there is no steep climb, yet the rough distance is tiring. However, once a person covers this distance, one finds oneself among the ultimate scenery of Lake and Lines of Trees. It is really mesmerizing.

As I penned it down on the day of Akshya Tritya; the day believed to be auspicious to buy gold. However, let me tell you that people throw gold coins and ornaments in the serene and pristine lake of Kamrunag. It is believed that wishes are granted and that Cobras safeguard the treasure. One can find yellowish colour of water. It is quite a spectacle. He-goats are sacrificed at the shrine. It is also believed that no aircraft can come over the Kamrunag Hill. In fact, there have been two helicopter crashes, which further solidifies faith in this belief. There are arrangements for night stay and there are a few shops selling food and other items.

On way back we again enjoyed scenic beauty of the place. Harshu gladly showed us the Crescent Shape spot of Shikari Devi from quite distance. The three types of trees of Oak can be recognised by their leaves.

Harshu also narrated as to how he lost some money to travel agents of donkey route and also mentioned that Gucchi (rare Mushrooms) are available and are sold for Rs. 10,000/- per Kg. I knew well that it is costly item and one of costliest and tasty dish in Bukhara Restaurant of Delhi's Maurya Sheraton is Gucchi Pulav. For its heck both Pradeep and I asked him to get us 100 Gms. each for Rs. 2000/-. On return he did procure for us the same.

Mid-way of return journey from Kamrunag, we informed Thakur of Cozy

Haven to keep hot food ready as we had planned to return to Chandigarh after Lunch. Incidentally, mobile signals are not available on most of the route to Kamrunag. Lunch was again a real treat, and it was followed by cold but juicy jalebis. It turned out to be quite a feast.

As fresh mushrooms are also available both of us took 1 Kg. each for Rs. 300/-. We also took 1 Kg each of Himchali Varian, called Sepu Vari. It makes really very tasty dish. Seeing our interest in a couple of plants, Thakur ji also gave us a couple of plants each. Bags we had already put in Pradeep's car in the morning itself. Hence, we were ready to depart back to Chandigarh.

I must also mention here that my Fountain Pen, which was in one of the handbags taken to Shikari Devi and Kamru Nag started leaking, owing to air pressure. As a result, when unknowingly I opened it to sign my book, "Miles Turned into Milestones" for gifting to Thakurs, my fingers were marked by blue ink. Height of these places reminded me what we had learned in school time. Snaps were taken and we departed for Chandigarh with promise to make another trip sometime in future.

Pradep told me on way that Dr. Rajesh Bhawani has insisted that we must meet him over tea in his residence on the foothills of Bilaspur, his ancestorial place. We did exactly that and enjoyed the hospitality of Dr. Rajesh once again and spent more than an hour. In fact, Dr. Rajesh Bhawani had advised us to visit Devidarh, Shikari Mata and Kamru Nag. His recommendation was really worth, and we really had lifetime experience.

On my way to Chandigarh, I thought of cancelling the train ticket and instead travel by taxi, the next day on 26th April. Pradeep arranged that and it was decided that I would leave the next day (26th April) around 10 in the morning after breakfast. At Pradeep's place, I recalled having had Pickle of Lungdu on an earlier occasion. Tired as we were after dinner, only for a while we saw photographs taken during our journey on Home Theatre. In the meantime, Seema had carefully kept whatever we had bought, so that nothing gets spoiled. I for sure slept like a log and got up in the morning only and enjoyed warm water and tea.

Pradeep's maid, Sohni is from Sirmaur in HP and her father makes cushions etc of Palm leaves, and Seema packed one for me also. I have decided to use it for Panditji whenever there is any Pooja in my place.

After bath etc. and having heartful of breakfast, once again at 1000 hrs I was ready to return home in Faridabad. The taxi arrived on time and as its owner is friend of Dr. Rajesh, I was charged merely Rs. 4,000/- up to my place for AC Toyota Innova Crysta, for which normal rate is Rs. 6,000/-. I returned safely home around 4 p.m.

In fact, for a pittance, I was able to have week-long journey of heavenly places and feel spirited after return. I am hopeful that my narration would have ignited readers' craving too for packing baggage for journey to the memorable places mentioned by me. Let me see, how many of my readers heed my advice and have real chill and thrill!

■■

सुनीता विलियम्स

भारतीय मूल की दूसरी अंतरक्षित महिला

सुनीता विलियम्स की अंतरिक्ष से सुरक्षित वापसी ने पूरे देश में खुशी का माहौल पैदा किया, लेकिन इससे पहले, 2003 में एक ऐसे ही मिशन की विफलता ने पूरे देश को दुखी कर दिया था। कल्पना चावला ने पहली बार 19 नवंबर 1997 को अंतरिक्ष की उड़ान भरी थी, जिसमें वे 372 घंटे अंतरिक्ष में रहीं। 16 जनवरी 2003 को उन्हें दूसरी बार अंतरिक्ष में जाने का अवसर मिला। 1 फरवरी 2003 को कल्पना चावला को धरती पर लौटना था, लेकिन उनका यह मिशन विफल हो गया। विशेषज्ञों का मानना है कि अंतरिक्ष यान के टेक-ऑफ के दौरान फ्यूल टैंक से निकले इंसुलेटिंग फोम के टुकड़े शटल के बाएं पंख से टकरा गए थे, जिससे यान को पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते समय तीव्र गर्मी से बचाने वाली टाइलों को नुकसान पहुंचा। इसी कारण, जैसे ही कल्पना चावला का स्पेसक्राफ्ट धरती के वायुमंडल में पहुँचा, हवा के तेज घर्षण की गर्मी से एक बड़ा धमाका हुआ और सभी अंतरिक्ष यात्रियों की मृत्यु हो गई।

सुनीता विलियम्स का जन्म 19 सितंबर, 1965 को यूक्लिड, ओहायो में हुआ था। उनके पिता, डॉ. दीपक, एक तंत्रिका विज्ञानी हैं और 1958 में अहमदाबाद से अमेरिका के बोस्टन में आकर बस गए थे। उनकी माँ, बॉनी जालाकर पांड्या, स्लोवेनिया की हैं। सुनीता विलियम्स ने 1983 में मैसाचुसेट्स से हाई स्कूल पास करने के बाद 1987 में संयुक्त राष्ट्र की नौसैनिक अकादमी से फिजिकल साइंस में बी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1995 में उन्होंने फ्लोरिडा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग मैनेजमेंट में एम.एस. की उपाधि प्राप्त की। उनका विवाह माइकल जे. विलियम्स से हुआ, जो उनके सहपाठी रहे हैं।

सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की दूसरी महिला हैं जो अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के माध्यम से अंतरिक्ष में गईं। वह नौसेना पोत चालक, हेलीकॉप्टर पायलट, परीक्षण पायलट, पेशेवर नौसैनिक, गोताखोर, तैराक, धर्मार्थ धन जुटाने वाली, पशु-प्रेमी, और मैराथन

धावक भी हैं। उन्होंने एक महिला अंतरिक्ष यात्री के रूप में 127 दिनों तक अंतरिक्ष में रहने का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर 286 दिन बाद पृथ्वी पर लौटे। उनकी यह यात्रा केवल आठ दिनों की थी, लेकिन उनके स्पेसक्राफ्ट में आई तकनीकी खराबी के कारण वे 9 महीने बाद वापस लौट पाईं।

सुनीता विलियम्स और उनके दल ने अपने विस्तारित अंतरिक्ष मिशन के दौरान कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन की सर्विसिंग और सफाई में मदद की, स्टेशन को चालू रखने के लिए नियमित मरम्मत की, और पुराने हार्डवेयर को बदला। स्टेशन का रखरखाव और सफाई करने के अलावा, विलियम्स ने कई तरह के वैज्ञानिक अनुसंधानों में भी भाग लिया, जिनसे हमें अंतरिक्ष के बारे में अधिक जानकारी मिली है। सुनीता विलियम्स और उनके साथियों ने अंतरिक्ष में रहकर कई महत्वपूर्ण खोजें की हैं।

उन्होंने कुल 62 घंटे और 6 मिनट की 9 अंतरिक्ष चहलकदमी पूरी की। उन्होंने अपने नवीनतम मिशन के अनुसार अंतरिक्ष में 606 दिन से अधिक समय बिताया। उन्होंने अभियान 32 और 33 के दौरान आई.एस.एस. के प्रशिक्षण उपकरणों का उपयोग करके दौड़, साइकिल चलाना और तैराकी करके ट्रायथलॉन का अनुकरण किया और अंतरिक्ष में यह उपलब्धि हासिल करने वाली वह पहली व्यक्ति बनीं।

जून 1998 में उनका अमेरिका की अंतरिक्ष एजेंसी नासा में चयन हुआ और प्रशिक्षण शुरु हुआ। सुनीता भारतीय मूल की दूसरी महिला हैं जो अमेरिका के अंतरिक्ष मिशन पर गईं। सुनीता विलियम्स ने सितंबर/अक्टूबर 2007 में भारत का दौरा भी किया। जून 1998 से नासा से जुड़ी सुनीता ने अभी तक कुल 30 अलग-अलग अंतरिक्ष यानों में 2770 उड़ानें भरी हैं। साथ ही सुनीता सोसाइटी ऑफ एक्सपेरिमेंटल टेस्ट पायलट्स, सोसाइटी ऑफ फ्लाइट टेस्ट इंजीनियर्स और अमेरिकी हेलीकॉप्टर एसोसिएशन जैसी संस्थाओं से भी जुड़ी हुई हैं।

उन्हें वर्ष 2008 में भारत सरकार द्वारा विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्र में प भूषण से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा उन्हें नेवी कमेंडेशन मेडल (2), नेवी एंड मरीन कॉर्प अचीवमेंट मेडल, ह्यूमैनिटेरियन सर्विस मेडल जैसे कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। विश्व जगत के साथ-साथ हम सभी भारतवासियों को भी सुनीता विलियम्स की उपलब्धियों पर गर्व है। ■■

THIS PHOTO ARE THIS TIME'S

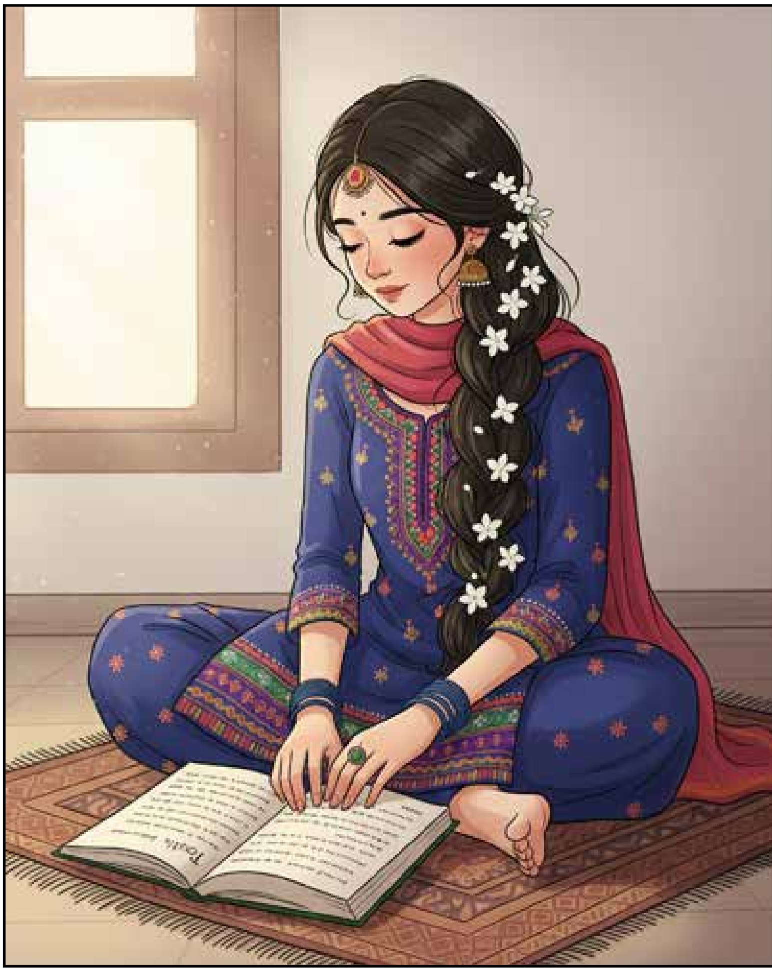

Topic

"SEE THE IMAGE, WRITE A POEM."

AND SEND IT TO US ALONG WITH YOUR PHOTO

THREE EXCELLENT POEMS WILL BE PUBLISHED IN THE MAGAZINE AND WILL BE AWARDED WITH A CERTIFICATE.

''छवि देखें, कविता लिखें'' **और अपनी फोटो के साथ हमें भेजें। तीन उत्कृष्ट कविताओं को पत्रिका में स्थान दिया जाएगा एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा।**

राकेश शर्मा 'निशीथ'
प्रधान संपादक
द साइलेंट स्ट्रोक-पत्रिका

The CREATIVEART Publishers

THECREATIVEART.IN

Hello Friends,
You will be glad to know that
My New Book

रचनाएँ भेजने की अंतिम तिथि
30 अगस्त 2025

Hindi & English

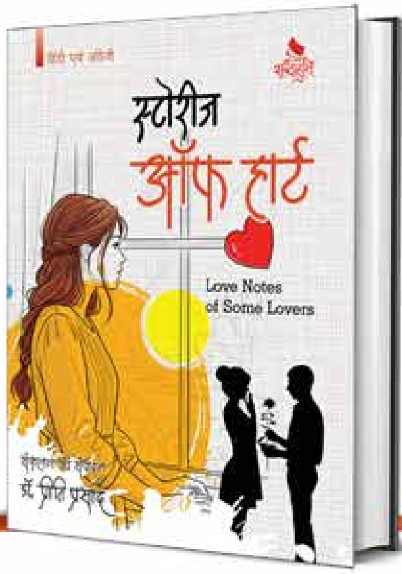

Stories of Heart

Compilation and Editing:
DR. PRITY PRASAD
Bilaspur

Coming Soon
New Book

Love Notes
of Some Lovers

शब्दाहुति प्रकाशन

OFFICE - FARIDABAD | 9990753336
SHABDAHUTIPRAKASHAN@GMAIL.COM

NATIONAL YOUTH DAY

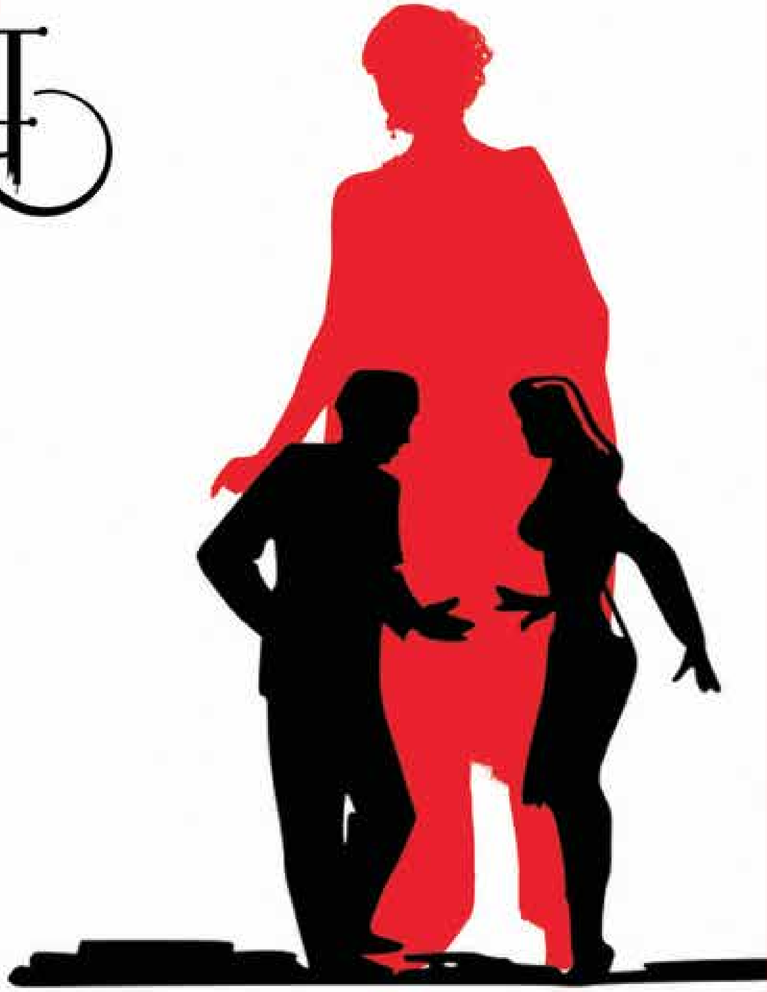

"No country can ever truly flourish if it stifles the potential of its women and deprives itself of the contributions of half of its citizens."

– MICHELLE OBAMA

The CREATIVEART Publisher

9 788197 981401

OFFICE - DAYAL BAGH | FARIDABAD | 9990753336
THECREATIVEART.IN

Cover Design by: TCstudio